

LONDON SOCIETY

An Illustrated Magazine

OF

LIGHT AND AMUSING LITERATURE

FOR

THE HOURS OF RELAXATION.

VOLUME VIII.

LONDON:

OFFICE, 9 ST. BRIDE'S AVENUE, FLEET STREET, E.C. 1865.

CONTENTS.

Engrabings.

| | | | | | Drawn | b y | Page |
|--------------------------------------|-----|--------|--------|---------|----------|-------------------|-------------|
| Recruiting Sketch | • • | •• | • • | •• | H. S. | Melville | 47 3 |
| A Romance at Marseilles | • • | • • | | •• | T. I | Morten | 549 |
| A Scene on Boulogne Pier | • • | , | •• | •• | L. C | . Henley | 312 |
| A Sketch in the Corn Exchange | • • | • • | • • | •• | Walde | Sargent | 509 |
| A Sketch in 'The Garden of England | d' | • • | •• | • • | | h Dunn | 318 |
| A 'Wrinkle' for the Coast Guard | • • | • • | | •• | G. Dr | Maurier | 284 |
| An Incident in my Thespian Novicia | ite | • • | • • | • • | W. M | "Connell | 498 |
| At St. George's, Hanover Square | • • | • • | • • | • • | John | Gascoine | 80 |
| Cupid at a Boating Party | • • | •• | •• | • • | Edin | h Dunn | 375 |
| Faithful and True | • • | • • | • • | •• | M. Eller | n Edwards | 263 |
| Firm and Faithful | • • | • • | •• | • • | M. Elle | n Edwards | 50 |
| Five Minutes Late | • • | • • | • • | • • | Kate . | Edwards | 2 30 |
| Flirtation Corner | • • | •• | • • | •• | T. S. | Seccombe | 192 |
| Furnished Apartments | •• | •• | • • | •• | G. Du | Maurier | 481 |
| George Venn and the Ghost | • • | •• | • • | •• | J. A. | Pasqui er | 5 69 |
| Georgie's First Love-letter | • • | •• | • • | •• | | ı Edwards | 152 |
| Green Mantle | •• | •• | • • | J. D. | Watson | 38 5, 388, | |
| Harry's Account of his Courtship | • • | •• | • • | • • | | Lamont | 108 |
| Hogarth's 'Marriage à la Mode' | •• | • • | • • | • • | •• | • • | 379 |
| How not to play the Game of Croque | et | •• | • • | • • | G. Du | Maurier | 61 |
| In the Witness Box : | | | | | | Brunton | |
| Now, what is your calling, pr | ay? | •• | • • | •• | • • | • • | 65 |
| The Witness who caused 'consi | • | amusem | ent'i | n Court | • • | •• | 330 |
| The Young Gentleman described | | | | | • • | • • | 331 |
| The Witness who swears that b | | | • • | • • | • • | • • | 332 |
| The Astonished and Indignant V | | | •• | • • | • • | • • | 333 |
| The Young Lady whose affection | | | fled w | ith | • • | | 334 |
| The Gentleman who trifled with | | | | | • • | • • | 335 |
| La Belle Sauvage | • • | •• | •• | • • | •• | Lgomet' | 329 |
| Liverpool in the Seventeenth Century | у | • • | • • | •• | • • | •• | 272 |

iv Contents.

| List of Engravings— | continu | ed: | | | | | Drav | vn b y | |
|---|---------------------|--------|-------------|--------------|-----------|------|---------------------------|----------------|------------|
| London Opera Directors | : | | | | | | | | |
| 74.1 1 77.11 | •• | •• | • • | • • | • • | • • | • • | •• | 74 |
| Mrs. Billington as | | ne | • • | • • | •• | •• | • • | •• | 77 |
| Angelica Catalani | | • • | • • | • • | • • | • • | • • | • • | 139 |
| 7 3 7 | • • | •• | ••• | • • | •• | | T. | Morten | 16 |
| 36 13 36 31 11 | •• | •• | •• | • • | •• | • • | • • | • • | 417 |
| Materfamilias puts the | | | | •• | •• | | G. Du I | <i>Maurier</i> | 17 |
| Modern Sirens | | | | •• | •• | •• | T. S. S. | | 232 |
| My Darling down by th | | | •• | •• | •• | •• | Paul | | 253 |
| 37 7 1 1 0 | •• | | •• | •• | •• | •• | • • | •• | 171 |
| Of the World, but not V | | | | •• | •• | •• | James (| | 377 |
| 011 7 1 777 | ·· | •• | | | | •• | G. Du I | | 288 |
| Rather an Ordeal for the | | | | • • | •• | •• | G. Du I | | 122 |
| (0 D W) | | | | •• | • • | •• | | | 547 |
| | •• | •• | • • | • • | • • | • • | α | Doula | 102 |
| | 7 . 11 <i>!</i> | • • | • • | • • | • • | 777 | C. A. I | • | |
| Steamers, Trains, and W | • | •• | • • | • • | • • | | Brunton | | |
| | | •• | •• | • • | •• | •• | W. Br | | 96 |
| Ten Shillings a Night | | • • | •• | • • | • • | • • | Adelaide | Ciaxton | 520 |
| Tender, and True, and T | | • • | •• | • • | •• | • • | | •• | 305 |
| 'The Blue Unclouded' | | •• | •• | •• | • • | • • | L. C. I | • | 97 |
| The Courtship of Giles I | • | | • • | • • | •• | • • | G. J. I | | 384 |
| The Flirtations of Capta | in Cave | endish | • • | •• | •• | •• | Adelaide | | 1 |
| • | • • | •• | • • | • • | • • | • • | C. A. | Doyl e | 183 |
| The Merchant Princes o | f Engla | nd : | | | | | | | |
| Patrick Colquhoun | | •• | • • | • • | •• | •• | •• | •• | 461 |
| Thomas Coutts, Ba | nker | • • | • • | •• | • • | • • | •• | • • | 361 |
| The Painter and his Lad | ly | • • | • • | • • | •• | •• | C. G | reen | 449 |
| The Queens of Comedy: | | | | | | | | | |
| Madame Arnoult P | leas y | • • | • • | • • | • • | • • | • • | • • | 276 |
| Mademoiselle Favai | rt | •• | • • | • • | •• | • • | •• | • • | 279 |
| Mademoiselle Schne | eider | • • | • • | • • | • • | •• | •• | •• | 281 |
| Ticklish Ground | •• | • • | • • | • • | • • | • • | G. Du I | Taurier | 488 |
| To Gertrude | •• | • • | •• | •• | • • | • • | A. W. | Bayes | 460 |
| Two Loves and a Life | • • | •• | •• | •• | •• | •• | T. Mo | rten ; | 400 |
| Types of English Beauty | <i>i</i> : | | | | | | | • | |
| Toda Maur | • • | •• | •• | • • | • • | •• | •• | •• | 40 |
| Waiting for the Dentist | | •• | •• | •• | | • • | W. Br | unton | 480 |
| Wanted - Cumto | •• | •• | •• | •• | •• | •• | | | 119 |
| Whose shall me Co 2 | •• | 193. | | | | | 207, 208, | 211. 214. | |
| Trace of passing Trace | •• | 200, | 100, | | , 200, . | , | | ,, | |
| | | | | | | | | | |
| | | | _ | . Y • | | | | | |
| | | | U | ales. | | | | | |
| | | • | Page | 1 | | | | | Page |
| A Tale of Allhallows Ev | | •• | 391 | 1 - | en Mantle | · . | A Tale of C | Old Man- | _ |
| A Tale of the Scarborou | | son | 216 | 1 | | •• | •• ••• | • • | 385 |
| Among the Hop Gardens | | Thus | 314 | 1 | • | - | es. How sh | | A20 |
| Faithful and True. A Parts:— | raie ir | Three | | 1 | • | | ise on 2007. iter. A N | • | 432 |
| Part I | | • • | 41 | | | | wer. A m | | 349 |
| II | | •• •• | 150 | | | | f Captain (| | 1 |
| III | • • | •• | 254 | | | | ard in the | | |
| 'Fast and Firm.' A Romance at Mar- room | | | | | | | | | |
| | | | | | | | 119 | | |
| George Venn and the Gl | uust , | •• | 56 0 | ı yyı | at Came C | B Li | r commana | m vegatta | 404 |
| | | | | | | | | | |

Contents.

Sketches.

| Page | Page |
|---|--|
| Across the Solent. By Jack Easel 418 | The London Opera Directors:— |
| Beside the Deer 242 | No. v 71 |
| Diplomacy and Fashion 173 | vi 139 |
| Five o'clock Teas 103 | The Merchant Princes of England:— |
| Flirtation Corner 189 | Chap. XIV. Four Liverpool Mer- |
| Furnished Apartments 481 | chants: — Thomas |
| Hanging about Charles Street. A Re- | Johnson, Bryan Blun- |
| cruiting Sketch 472 | |
| In the Bush with the Mounted Police 446 | and William Brown 264 |
| In the Bush with the Bushrangers 539 | xv. The Couttses of Edin- |
| Jack Easel at Pebblesea 111 | burgh and London 358 |
| Marriage Notes in Town and Country 80 | xvi. Patrick Colquhoun and |
| On the Medicinal Effects of Laziness 289 | David Dale of Glas- |
| Reminiscences of a Cricketer 248 | gow |
| Scenes in Court:— | The Queens of Comedy:—Madame Ar- |
| Chap. III | noult Plessy, Mademoiselle Favart, |
| ıv 330 | and Mademoiselle Schneider 276 |
| Souvenirs of a Man of Fashion 404 | Where shall we Go? In Three Chap- |
| 'The Blue Unclouded' 97 | ters 193 |
| • | • |
| | |
| . Dalidea Waya | aread 30 managed |
| Ministrante | ous Papers. |
| A Breakfast Pic-nic in India 401 | Our Welsh Watering Places 368 |
| A History of Croquet 58 | |
| A Short Noviciate in the Thespian Art 498 | |
| About Steamers, Sea-sickness, Trains, | Salmon Spearing 343 |
| and Walking 491 | The Annual Question—Where shall |
| Artists' Notes from Choice Pictures:- | we Go? 17 |
| Hogarth's 'Marriage à la Mode' 378 | The Playgrounds of Europe :- |
| Chess Gossip | M. Comettant's Holiday 52 |
| L'Africaine 88 | • |
| Lamentations of an Old Sportsman 557 | |
| Little Dinners 534 | |
| Matrimony over the Water 294 | |
| Muscular Society:— | Winter Quarters 513 |
| No. II. Racquets 409 | |
| Notes of Foreign Fashions 184 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
| Old English Housekeeping 226 | |
| Our Benefit Society 529 | |
| Our Denoite Society 020 | 1 11 |
| | |
| | |
| 1 ef | ietry. |
| A Came on Desile The | m. cutties and are the |
| A Scene on Boulogne Pier 312 | |
| A Tale of Croquet 336 | |
| Cupid at a Boating Party 374 | _ · |
| Five Minutes Late 230 | |
| From 'My Darling down by the Sea' 311 | |
| La Belle Sauvage 329 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · |
| Lady Mary 40 | |
| Love and Pride 16 | |
| Maiden Meditation 417 | |
| Modern Sirens 232 | |
| My Darling down by the Sea 253 | |
| My Lady's Song 171 | Two Loves and a Life 400 |
| Of the World but not Worldly 377 | |
| Reflections by a Fat Man 416 | and the second s |
| Sunset Thoughts 95 | |
| • | 1 |

LONDON SOCIETY.

JULY, 1865.



HAVE my readers ever travelled in the Tyrol? If not, let me advise them to spend the first holiday-time at their command (provided it be in the summer) in that most charming country. Without the overpowering grandeur of Switzerland, its scenery is in many places very magnificent; and throughout the whole of it there is a novelty and interest especially acceptable to those who have, season after season, traversed the beautiful Swiss valleys, and desire 'something new,' after the fashion of all mankind in this nineteenth century. The inns

though very homely, and in many cases positively repulsive as to out-VOL. VIII.—NO. XLIII.

ward appearance, invariably afford clean and comfortable bedrooms; the people, with few exceptions, are a most genial, hospitable race, and as yet free from the greed which characterises their Swiss

neighbours.

On a lovely afternoon in August, one of the ordinary little conveyances of the Tyrol might have been seen descending the terribly rough steep road between Winklern and Lienz. These conveyances are none of the most luxurious, being, for the greater part, spring-carts (the springs in a very doubtful condition), drawn by a horse tied to one side of the pole which is invariably The seat is used instead of shafts. often merely a board, with a heap of hay or straw placed on it, and a blanket thrown over all, and holding two people, whilst the driver sits on the ledge of the machine in front, at one's feet. This was the sort of vehicle which we are going to watch at present, except that it had no springs of any kind, owing to the nature of the road it had to pass A lady of about five-andthirty was seated in it, fat and short, and dark in complexion. Her expression, which did not appear to be of the most amiable naturally, was not improved by the severe jolting she was undergoing—and no wonder: Another lady, ten years her junior, walked behind; she was also short, but fair and florid, and of rather a heavy and prosaic as-There was a strong resemblance between the two, who in fact were sisters—the Misses Brooks, whose parents had been long dead. They lived together in a small house in May Fair, and were now disporting themselves among the mountains, like a large portion of the British public at that time of year.

'Amelia!' said Miss Brooks, in a sharp voice, after a somewhat protracted silence, 'what nonsense it is your fatiguing yourself in this way, toiling along under such a sun! you had much better get into the

carriage.

'No, thank you,' replied Amelia; the carriage, as you call it, is by no means inviting, and you don't look

particularly happy in it, I can assure

you.'

'As to that,' retorted her sister, 'you need not speak; you are the very image of a lobster, and no amount of glycerine cream, or elder-flower water will give you a respectable complexion for months to come.'

'Well, the carriage would do me no good in that respect,' said Amelia,

'and I prefer walking.'

So the two proceeded in silence, till a sharp turn of the road brought them suddenly in view of the dolomountains—those strange, weird, unearthly mountains, worth travelling thousands of miles to see for themselves alone. There is no verdure on them, save for a short distance up the base. Even the tenacious pine soon loses all footing; and the bare rocky summits stand up gloriously into the sky, taking a hundred fantastic shapes. Icebergs, cathedral spires, human beings, gigantic coronets, and ghostly pointing fingers, are all represented there; and the eye never wearies of gazing on their quaint variety. Both the sisters uttered exclamations of surprise and delight; and the elder gladly seized the excuse to rest her aching bones for a few minutes by stopping to gaze on the wild prospect before her.

'Well, this really is something new!' said she; 'and I must say it is almost worth all the jolting and

botheration we have had.'

'Oh, it is worth far more than that!' replied Amelia, with a sudden burst of enthusiasm.

'Do you really think so?' said a voice close by; and, turning hastily, the ladies beheld the reclining form of Mr. Harman, stretched on a little grassy bank just round the turn of the road. This gentleman, with whom they had been slightly acquainted in England, and whom they had two or three times encountered in the course of their present excursion, had left the inn at Winklern at a much earlier hour than themselves in the morning; so it was an agreeable surprise to find him here—the more so as Miss Brooks suspected at times that he admired her extremely; for it was

an amiable trait in Clotilda that she never could believe the male portion of society to be so shamefully callous to her charms as appearances might have led one to suppose; but every new-comer she magnanimously credited with the ardent desire to redeem his sex from the horrible stigma on their taste, caused by her being yet, at the age of thirty-five, in the enjoyment of single bliss.

'Do you really think so?' said Mr. Harman. 'Well now, I cannot agree with you; I confess these mountains bore me, and make me feel uncomfortable; I did not expect to find them so unlike their brethren in other parts of the world. In fact, Miss Brooks, I have a strong suspicion that this was originally Nature's great Bedlam. All the mad mountains were sent here, and they have continued to grow madder and madder ever since.'

'Dear me, Mr. Harman, what absurd ideas do come into your head!' said Clotilda, her face now wreathed in smiles, and showing no traces of its former crustiness: 'but how do you happen to be still here?'

'Well, I am not afflicted with that perpetual desire to "move on" which characterises weak minds. It was hot: the Maniacs took me somewhat by surprise; so I sat down to contemplate, and have remained absorbed in contemplation until now that my solitude is so agreeably broken.'

'And pray how much longer do you intend to remain in this attractive spot?' said Miss Brooks.

'Until you render it wholly unendurable by removing your presence from it,' replied he, with a mock-gallant bow.

Miss Brooks was highly delighted, and presently discovered that the road was getting much rougher, and that she would be greatly the better of walking the rest of the way to Lienz. Amelia pursed up her lips scornfully, knowing right well that nothing short of the presence of a specimen of the noble gender would have induced Clotilda to walk a step on such a day. But conscious as she must have been that she herself was not wholly unalive to such

influence, let us hope that she was not too severe on her sister in her heart.

By slow degrees, and with many stoppages for rest and admiration, the trio at length reached Lienz. At the door of the Post-inn, Mr. Harman found an old friend, watching the new arrivals come up the long empty street; and they hailed each other with that intense satisfaction which an encounter in solitary foreign parts produces, even in the minds of those who are not over congenial to each other in England. Captain Cavendish was a retired Indian officer, with a tolerable in-He was by no means handsome: thin, sallow, loose in the joints, about eight-and-forty years of age, and had all his life been afflicted with an unquenchable thirst for matrimony; in consequence of which he regarded every unmarried lady he met as the future possible Mrs. Cavendish, to be tested and tried with a view to her capacity for undertaking that great position. But it so happened that, whenever matters seemed to be running smoothly, and likely to come to a favourable termination, the Captain found he never could make up his mind that he had really discovered that perfection which his noble na-Was it certain the ture craved. lady was handsome enough, and young enough? (to do him justice, he had greatly moderated his expectations in these two respects of late years.) Was she rich enough, and well-connected enough, and, above all things, did she fully appreciate him and his poetic gifts? (For the soul of Captain Cavendish was a very fountain of Poesy, as he would have himself expressed it, gushing out, bursting forth either in his own words or in other people's, on all appropriate or inappropriate occasions.) With these doubtings and questionings he harassed his own mind and that of his confidant for the time being to such an extent that it was a relief to both when the opportunity slipped through his fingers. Now-a-days, however, he felt that the years were sliding fast away, and that, if he wished to secure the great object of his life,

he must 'make hay' whilst any remains of sun shone. He was therefore delighted to behold two English ladies, introduced to him as the Misses Brooks by his friend; and Clotilda, on her part, was charmed at making this new acquaintance; though her satisfaction was slightly damped by his alluding to 'the ladies,' who, it appeared, were resting after a long walk; for Clotilda was most firmly of opinion that the fewer ladies and the more gentlemen, the better for the forming

of agreeable society.

At the table-d'hôte, where the whole party soon met, 'the ladies' proved to be Captain Cavendish's sister, Mrs. Melville, and her handsome daughter Amy. In the Tyrol English stiffness speedily, and acquaintanceships are soon struck up. These ladies therefore were very soon au fait with each other's plans, quantity of baggage, dresses, grievances, &c. &c.; and, finding that their routes lay together for some way, they agreed to start in company on the morrow. After dinner, Mrs. Melville's bedroom being the most spacious, she declared it to be the drawing-room, and invited the Brookses to come and sit there, which they gladly did.

After a great deal of conversation, and many discoveries of mutual friends, Mrs. Melville asked who the Mr. Harman was who had arrived at the same time with them, and whom her brother seemed to know so well. Clotilda tried to look conscious (but failed), whilst Amelia explained that he was the eldest son of Sir James Harman, a north-country baronet of rather limited means.

'We met him first at my uncle's, Sir George Trevilian's,' added Clo-

tilda, imposingly.

'Oh!' said Mrs. Melville, with a half smile, glancing at her daughter, 'it is that Mr. Harman? We have heard a good deal of him from a friend of his, Mr. Charles Sydney.'

What, the Mr. Sydney who is so clever, and writes in all sorts of

magazines?' said Amelia.

'My dear Amelia!' broke in the elder sister, 'how can you say he is

clever? He appeared to me very much the reverse. Any goose may write in some magazines, I am sure; and Mrs. Erskine Leigh, who knows him well, assured me that his articles were, like himself, excessively stupid.' (From which observations we may infer that Mr. Sydney had displayed a vast amount of that obtuseness afore-mentioned so painfully common to his sex with regard to Clotilda.)

A very awkward pause ensued after this speech. Miss Melville grew crimson, and left the room.

'I am sorry to tell you, Miss Brooks,' said Mrs. Melville, coldly, 'that my daughter is engaged to Mr. Sydney—in fact they are to be married in two months. Mrs. Erskine Leigh is an intimate friend of mine, and I cannot help thinking you are mistaken in putting such

an opinion into her mouth.'

It was not much in Clotilda's way to be abashed; but even she could not help feeling greatly taken back by this announcement. She stammered out several unintelligible apologies, and shortly withdrew from the room, followed by Amelia. When they had departed, Amy put her head cautiously in at the door; 'Is that nasty creature gone, mamma?' said she. 'Oh, mamma, wasn't it horrid of her to say such things? and do you think that was true about Mrs. Erskine Leigh, after her pretending that she liked Charles so much, and admired his writings so?'

'There was no pretence about it, my dear,' said Mrs. Melville. 'I don't know a more honest, straightforward person than Mrs. Erskine Leigh. It is some complete misapprehension on the part of Miss Brooks.'

'Or invention, I dare say,' said Amy, in an irritated tone. 'What a bore it is!—we promised to travel with them to-morrow. Can't we get off it, and stay on here for a day or two?'

'Certainly, my love; you shall not be annoyed on any account, and we shall remain quietly here till the Misses Brooks have a good start of us.'

But this plan was not to hold

Amelia, with a strong suspicion of how it would be, and anxious to avoid the pleasure of travelling alone with her sister as long as possible, wrung a reluctant consent from the latter that she should be the bearer of apologies to Mrs. Melville next morning before breakfast; and accordingly she went to that lady's room before she had left it, and drew a powerful picture of Clotilda's mental sufferings since committing the fatal mistake—the sleepless night she had passed, and the remorse to which she was at present a prey—till the kind-hearted Mrs. Melville and her daughter, alarmed lest brain-fever should be the result of so much anguish, hastened to send fervent messages to the effect that she was to think no more of it, and that they would all forget it as fast as possible, and make up their minds to be very happy whilst they were together. Amelia further explained, that, on thinking over it, her sister remembered that it was of an entirely difgentleman Mrs. Leigh made the remark she had repeated. (It is highly probable that Mrs. Erskine Leigh had never made any such observation at all; for Clotilda had a vast fund of imagination, on which she drew largely when at a loss for proofs of any of her assertions). So peace was signed and sealed, and Amelia was greatly relieved. As to Clotilda, she had cared very little about it after the first few awkward minutes: she 'could not understand people making a fuss about nothing,' but she felt it would have been a pity to separate, for a doubt was stealing over her as to whether Mr. Harman not merely good for fine speeches and nothing farther; whereas, Captain Cavendish might be a much more practicable man, 'though so very ugly.' It struck her, moreover, that this was rather a favourable opportunity for beginning an intimacy with the said Captain; and finding herself alone with him in the public room after breakfast, when the others had gone to see after their packing, she assumed a sorrowful and dejected aspect, and said, in moving tones,

'Oh! Captain Cavendish, I am so

unhappy to-day!

The Captain, astonished, yet flattered at this sudden confidence, replied, 'I deeply grieve to hear it, Miss Brooks. May I venture to ask why to-day?

"Glad Nature wears her fairest look, All, all is joy! Each rill, each brook, Takes back the tint; &c."

You know the lines? Why then, may I ask, this sadness to-day?"

'He is poetical; what a bore!' thought Clotilda, to herself, for she was very far from being so, and found it an unpleasant strain, which however she had had occasion to make sometimes before to acconimodate herself to beings of a poetical tendency. 'I made such an unfortunate mistake, last night,' said she; 'I repeated some foolish, and I am sure, very untrue remarks I had heard about the gentleman to whom your niece is engaged—of course knowing nothing of that arrangement—and you can't imagine how wretched I have been since! Your sister and niece have been good enough to send me some kind messages which relieved my mind, but I don't know how I am to get over it.'

'Yours, Miss Brooks, I perceive, is one of those "spirits" finely touched, alluded to by the immortal bard, endowed with a sensitiveness almost too keen for the shocks of this rude world. But I do beg of you to think no more of such a very trifling matter. I can answer for it that my niece has entirely forgotten it by this time, and I trust you will speedily adopt the words of the poet-

" Hence, loath'd Melancholy! Of Cerberus and blackest Midnight born. In Stygian cave forlorn,

'Mid horrid shapes and sights and shrieks un-

'You are very good,' said Clotilda, dejectedly; 'and you poets have a wonderful way of smoothing the troubles of life—but would that I could forget!'

'Clotilda! I wish you would come up and sit on the boxes, that I may get them locked,' said Amelia at this moment, putting her head in

at the door.

Clotilda's languor vanished at once, and she rose briskly from her seat to go up-stairs to the rebellious trunks. 'All I can say is, Amelia,' said she, 'that if the boxes want sitting on, you must have been stuffing things in, in a very careless manner, and I dare say I shall have to take them all out again.' Which proved to be the case.

'A fine energetic creature!' reflected the Captain; 'and at the same time so sensitive, so gentle, so tender-hearted; there is a beautiful versatility of disposition about her, and she has already discovered my—a—my gift. A superior creature that, and one to be carefully cultivated!'

That day the party proceeded to Innichen, and the day following through the magnificent Ampezzo Pass, in the very midst of the dolomites, to Cortina, where they proposed remaining a few days. mountains are not so fine or so interesting here as at Höllenstein, a little place which is passed en route; in fact, they are somewhat dreary and savage at first sight. But this is the best possible head-quarters for thoroughly exploring the dolomites of the district, and glorious views are to be obtained from those heights, which are accessible. people who go there must be strong, and fit for an immense deal of walking. There is no provision made for riding; and even if there were, it would in many excursions be perfectly useless, owing to the steepness and ruggedness of the ascents.

The hosts of the Aquila Nera are civil and obliging people, and it is a comfort, after having one's ears tortured by the unmusical German of the Tyrol, to hear the soft Italian language spoken; but the inhabitants of Cortina generally, have a most uncouth and uncivilized appearance, and are the most inveterate starers to be met with anywhere. Amy Melville and Amelia Brooks, however, were very fair Italian scholars, and quickly made friends with a number of the children first, and afterwards with the elders. Clotilda sketched tolerably well, and Captain Cavendish carried

her camp-stool and other apparatus, and made himself generally useful to her. Mr. Harman botanized, and Mrs. Melville enjoyed the fine air and scenery, and the short remaining time in which she was to have her daughter all to herself. The flirtation, or whatever it might be called, between her brother and Miss Brooks, she viewed with the utmost indifference, having witnessed the rise, decline, and fall of many a score of grandes passions on the Captain's part, and Clotilda seemed very well able to take care of herself. That lady, however, was beginning to be a little uneasy; why tarried the Captain's proposal? There was no want of opportunity, for they were constantly together; and she shuddered as she thought of the volumes of poetry which had been spouted to her. Why was the reward of such endurance so long withheld?

'I say, Harman,' said Captain Cavendish, one evening as they were smoking their cigars previous to 'turning in,' 'I want to ask you about these Misses Brooks—nice girls, eh?'

'I don't know them much,' said Harman, cautiously, for he did not know what his friend might be meditating.

'Oh! but we've seen a good deal of them here, you know; the eldest is a shrewd, clever young woman, with a vast deal of mind.'

'Not very young,' suggested Harman.

'Ah, well, you know, you can't call her old; and I dare say any fellow she married she would make very happy—don't you think so? I should like to have your opinion.'

'I think I'd prefer the younger

one, myself,' said Harman.

'No! would you though? She certainly has a fair complexion, which I like, but she doesn't talk; she has none of the esprit of her sister—in fact, is she not rather heavy in hand?'

'Perhaps,' said Harman: 'I should fancy she was better tem-

pered than the other.'

'Really! you think so; well, I must try to find out a little more about both, before doing anything

rash. Thank you, Harman; I really am much obliged for the

advice you have given me.'

And they went into the house, Harman wholly unconscious of having given the 'advice' for which the Captain expressed so much gratitude.

The next day Amelia's probation began: there had been a little excursion and pic-nic planned, and when the three little Einspanners came to the door, Clotilda stept into hers, expecting as a matter of course that the Captain would take his seat by her side.

'Make haste, Captain Cavendish,' said she, 'and get in, for I am so afraid of strange horses, and this one looks impatient of standing

already.'

'Oh! you need not be afraid of the horse,' replied he; 'he is quiet enough, and I must not be selfish; here is my niece longing to have a

drive with you.'

And, to the disgust of both ladies, he bundled Amy in, and jumped himself into the vehicle in which Amelia was seated, greatly to her surprise, and by no means to her delight, for she did not admire the Captain. After some indifferent conversation about the places they were passing, the day, the excursion, &c., &c., the Captain began to test.

'What a true artist mind your sister's is, Miss Amelia,' said he; 'those last sketches of hers are lovely, positively lovely.'

'Pretty well, I think,' returned

Amelia, indifferently.

'She is jealous of her sister,'

thought the Captain.

'Ah! surely more than "pretty well?" that sketch of the Drei Zinna is admirable, truly admirable!'

'They are fine mountains,' said Amelia.

- 'You love fine scenery, do you not? for me, I confess that whilst passing through loveliness like this, I realise the words of the poet—
- "There is a pleasure in the pathless woods; There is a rapture by the lonely shore;"
- 'and my feelings involuntarily find relief in the heart-stirring words of another poet—

- "Breathes there a man with soul so dead, Who never to himself hath said, This is a fair and beauteous land?"
- '(I alter the words slightly, you observe, to suit the sense). Oh! the sky, the trees, the very air itself on a day like this, are fraught with rapture to the poetic soul!'

'I find that the air here gives me an excellent appetite,' said Amelia.

- 'I rejoice that you should find the atmosphere salubrious,' said the Captain, much taken back. 'Under present circumstances, however, the appetite of the soul and mind perhaps make themselves more powerfully felt than that of the mere—a—corporeal frame, don't you think so? There is a—what shall I say?—a hunger and a thirst to 'partake of the ambrosia of the gods in place of ignobler food, and to drink deep and long at the Parnassian rills.'
- 'Oh! that reminds me,' said Amelia, 'I'm so dreadfully thirsty, and I have a little bottle of cold tea in a small basket under the seat; would you get it for me? I always drink cold tea in preference to anything else, it is so wholesome.'

The Captain did as he was bid, and relapsed into silence for a considerable time after this, but at last

recovered himself a little.

'I rather think, Miss Amelia,' said he, in an insinuating voice, 'that we have one taste in common. I observed a tell-tale manuscript book peeping out of your work-basket, last night! I have filled, I may almost say, thousands of such volumes myself; it is truly delightful, is it not, to have the congenial thoughts of all poets close at hand, and ready to refer to when one feels in the mood? I have no doubt I should find in your collection those sweet lines of Waller's (unfortunately too little known), beginning,

- "Go, lovely rose,
 Tell her that wastes her time and me,
 That now she knows
 When I resemble her to thee,
 How sweet and fair she seems to be."
- 'Oh dear no,' said Amelia; 'you are mistaken, I have no collection: what you saw is my recipe-book. I always carry it about, for I find

it so useful to pick up things here and there. Your sister had promised me a recipe for anchovy toast, and I had brought my book down to copy it in—that was all.'

Almost desperate, the Captain made one more manly struggle. (I will try her with the Bell of Bokherat, thought he, and if that

fails, I give her up).

'Perhaps, then,' he resumed, 'you are a lover of original poetry you write a little yourself?' (Amelia shook her stolid head) 'or you prefer to hear it gushing from the living spring, instead of through the medium of letter-press? might venture to repeat a little thing of my own, which I composed in India, about an alarm-bell in a tower, in the district in which I was then quartered, it might interest you. Some persons to whom I have repeated it have been good enough to say that they had never met with anything more—a—touching, even—a—beautiful and pathetic; (their kindness only, of course,) but you shall judge—

"" Oh! sweetly, sadly, softly still,
A sorrowing sound each heart to thrill
Sweeps through the vale.
The booming bell of Bokherat!
What wild, wild woe has whirl'd on that
Devoted dale!"

"Ah! by that baleful blaze so bright Those lightning leaps of lurid——"

'Oh! stop the man,' cried Amelia, (she meant the driver) Fermatevi! 'Captain Cavendish, I am certain I saw some wild strawberries there, under the hedge; do get down and pick them for me: I am so fond of those strawberries!'

And Amelia showed more animation than she had displayed throughout the drive. In a state of utter collapse, the Captain descended from the vehicle, and looked for the supposed fruit, which turned out to be merely red leaves. 'I am glad of it,' thought he, savagely, when he began slowly to come to himself, after the shock he had received. 'I am glad I was not made the instrument for ministering to her low Strawberries! and in the tastes. very midst of the Bell! What a fate to marry a woman like this!

"I to herd with such a narrow forehead;
So intensely vacant of our glorious gains!"

'Heaven forbid!' No more attempts did the wretched Captain make to draw Amelia out: he had drawn only too much out as it was, and a perfect silence was preserved between them during the rest of the way. When they arrived at the chosen spot for the pic-nic, he eagerly sought Clotilda; but that lady received him with decided frigidity, and calling Mr. Harman to her side, she contrived to keep him there for the rest of the day, and made herself as agreeable as she possibly could, to his great amusement, and the evident uneasiness of Captain Cavendish, who, in consequence, made up his mind to propose that very day. She gave him no opportunity, however, taking possession of Mr. Harman for the drive home. Amelia and Mrs. Melville went together, and found himself with his niece. Captain had not had a happy day, and wore a lugubrious countenance.

'Come, Uncle Ned, don't look so wobegone,' said Amy, laughing. 'What on earth has happened to you? Have you proposed to one of the Misses Brooks, and been refused,

or what?'

'Amy,' replied her uncle, with solemnity, 'you are shortly to enter the married state; and I should think, I should hope, you feel that there are certain subjects on which light jesting is unsuitable. No, Amy, I have not proposed to Miss Brooks; had I done so—had I ventured to do so—a person so superior in all mental endowments to the ordinary individuals of her sex might, in fact probably would, have refused me; but ——'

'Nonsense, uncle,' said Amy.
'You know better; it is quite evident she is in love with you (and just see how she was playing off Mr. Harman against you to-day); but I hope you are not in love with her, for I am sure you might find a

nicer wife.'

A gratified smile overspread the Captain's features, and his gloom began to take wing.

'As to Miss Brooks's sentiments towards me, my dear,' said he, 'they

are those of friendship, nothing more; depend upon it, nothing more. As to my finding a (to use your own not too apt or choice expression) nicer wife, there opinions might differ. True, I may perhaps, in India and elsewhere, have been favoured above others, and above my merits, with the smiles of the gifted and the beautiful. But no one can say Clotilda Brooks is not gifted; and at times when I have been repeating to her some heartstirring lines of exquisite loveliness, her features have kindled into a beauty almost seraphic.'

Amy said no more; but she and her mother enjoyed a hearty laugh in their own room, at the idea of Miss Brooks suddenly developing

into a scraph.

The same evening, over their cigars as usual, Captain Cavendish, who, since his niece's reassuring speech, had entirely forgotten his little fit of jealousy of Mr. Harman, confided to that gentleman the dismal results of his experiments upon Amelia, at which he could not help laughing. 'But,' said he, 'it is a fortunate thing, for matters are much simplified now.'

'You have fairly decided against the younger sister, so there is nothing to be done but to go in for the eldest. After breakfast tomorrow, you will, of course, pro-

pose to her?'

But, relieved from his uneasiness, the Captain felt by no means disposed to rush so soon upon his doom.

'But, my dear fellow,' said he,
'I don't think it does to be rash in
such a momentous matter; and
when one comes to think of it,
might not—might not a little more
height, and a little less—what do
you call it?—embonpoint be desirable?'

'That is entirely a matter of taste,' replied Harman; 'but as we are still to be here for a few days, you can take a little more time to

make up your mind.'

'Exactly, exactly, my dear friend,' said the Captain eagerly; 'I agree with you; you always give me the best advice: good-night—no, I will not be rash—good-night.'

CHAPTER II.

So the Captain refrained from rashness, greatly to Clotilda's surprise. The next day she graciously restored her recreant knight, who humble and abject. most to favour, and permitted him to perform his usual little services, never doubting that she would be invited, ere set of sun, to bestow her hand and heart upon his unworthi-But though the Captain was very devoted, and in proof thereof recited the whole of Thomson and the greater part of Milton, Shakespeare, Burns, Longfellow, Scott, and Byron (at least so it appeared to the nauseated Clotilda), yet the sun rose and declined and finally sank behind the dolomites without the little affair having made any Shortly before dinner progress. next day, Mr. Harman joined Mrs. Melville and her daughter and Amelia, who were sitting with their books and work in a sheltered place among the rocks a little way out of the village, whilst Clotilda sketched not far off, her usual attendant seated by her. 'News!' cried he, throwing himself down on the grass, ' be thankful to me and make much of me for I bring news. What do you think of an arrival of English people at the Aquila Nera!'

'English people!' cried Amy and Amelia at once, 'Who are they? What are they? Where do they come from? What are they going

to do?

'I knew that,' returned he, laughing—'I knew I should be assailed by a storm of questions, so I took care to be provided with a little information beforehand. I waited till they had put their names in the visitors' book, and settled their rooms, and till I had held a short parley with one of them, and here I am!'

'Well, then, tell us all about them,' said Amy, laughing, 'if your self-satisfaction will permit!'

'Now I call that ungrateful, Miss Melville; however I am magnanimous by nature and I will forgive you. Well, to begin with the most "difficile," if not the most important member of the party, there is a

severe lady's-maid of forbidding aspect, rejoicing in the name of Grimshaw, who has already quarrelled with the whole establishment on account of various personal grievances. Her room is at the top of the house; she is sure the windows have not been opened for a month; the bed is too hard; the pillows too soft; the sheets are rough; the chairs are of cushionless deal; the basin and jug don't match in pattern, and ——'

'Oh! come, come,' said Mrs. Melville, laughing, 'you are inventing; besides, how could she say all that to the people? for I do not suppose she is an Italian scholar.'

' No, but the wretched courier is obliged to act interpreter, and a nice time he is having of it, I should say. Then there is a papa, six feet three, age fifty, accustomed to lord it wherever he goes (except, I presume over the maid), and lastly, there is a daughter, rather pretty, blonde, great blue eyes and that sort of thing, but very languid and die-away; in fact, intended to be taken for a very fine lady indeed. I think so, but let us be charitable! The name, I grieve to say, is not beautiful, in fact, it is Bodger—and Sir John Bodger is a widower and an alderman, and has made heaps of money in the City. All these facts I have gathered in the course of my short conversation with

'There can be no doubt you have made a pretty good use of your opportunities, said Amy; 'perhaps they may be nice people, although

their name is Bodger.'

'Bodger!' said Clotilda, who came up at that moment with her cavalier, in a tone of ineffable disgust; 'the idea of anything called Bodger being even bearable! who are you talking about?' So the story

was told over again.

'And there!' said Mr. Harman, in conclusion, clapping Captain Cavendish on the shoulder, 'is a City heiress for you, my boy; you had better try your luck with her.' The captain, of course pricked 'p his ears and looked interested; but Clotilda, who had long made up her mind that Mr. Harman was not

the man she had taken him for, now decided that he was positively odious.

'What a bore,' said she, 'that such people should come here to spoil our party! I shall vote for our starting at once for Innsbrück.

'In the first place,' said Mrs. Melville, 'we must start for the hotel, as it is close upon dinner-time:' and they all went back.

At dinner they made acquaintance with the new arrival. The perfidious Captain contrived to sit next Miss Bodger, and Clotilda had the pleasure of seeing him make himself as agreeable as he could to her after his own fashion; she responding to his transcendental remarks and poetic quotations, by a languid smile and occasional interjections of 'La! how sweet!' and Captain was perfectly pleased. John sat on his daughter's other hand. 'Madam,' said he, addressing Miss Melville, 'I am sure you agree with me that this is a most savage, most detestable country, without even the necessaries of life, I may say: I asked just now for champagne, having finished the little stock I brought with me; and, would you believe it? not a bottle have they in the house—not one bottle! though, by the way, you must ere this have discovered that for yourself.'

'I should never have dreamt of finding such a thing here,' said Mrs. Melville; 'but I seldom drink

it at any rate.

'Indeed! my daughter, Miss Bodger, invariably drinks it at luncheon and dinner at home. You may, therefore, judge how great the privation is to her.'

One comfort for her is,' replied Mrs. Melville, 'that they say there is nothing so good as a complete change in every respect when one is abroad, and I think there is some-

thing in that.'

Sir John looked disgusted. 'My daughter is a young lady of great delicacy and refinement,' said he; 'and I own I tremble at the effect which the want of her ordinary comforts may have upon her.'

'That must spoil your pleasure greatly,' said Mrs. Melville. 'I am

thankful to say I have no such fears for my daughter. She is very strong, and a little roughing seems to do

her good.'

'How very fortunate you are,' replied Sir John, glancing first with contempt at Amy's blooming cheeks, and then with pride at the sickly complexion of his daughter. 'Maria Jane has always been a tender plant, yet she would come to the Tyrol. Her intimate friends, the families of Alderman Stobbs and Sir Thomas Gubbins have all been in Switzerland, so she said, "Papa, we must go to the Tyrol; and then Jane Stobbs and Mary Anne Gubbins will be dying of envy all winter when they hear me talk of it. And if they go next summer," said she, " we'll wait till they are fairly off; and we'll go to Denmark that everybody talks of now (if it does not take more than two hours to cross to it), or to Iceland, or to some place where they've never been;" for the dear girl never could bear anything commonplace, and I am sure the young ladies here will agree with me,' added the worthy knight, with a sweeping bow which included Clotilda, and poured a little balm into her chafed spirit. 'Young ladies!' and that wretch, throwing languishing looks upon Maria Jane at such a rate. Miss Brooks made up her mind to patronize Sir John.

'No; I for one don't agree,' said Amy. 'I love Switzerland, and am never tired of going there—besides, one ought to be glad that so many people can enjoy it now, who could not formerly, before the journey

was so cheap and easy.'

'The hotels are so comfortable, besides,' added Amelia, 'that that

makes up for everything else.

Sir John stared. 'Surely,' said he, 'it cannot but be revolting to persons of delicacy and refinement to have to rub shoulders with the "common herd," I may say, at every moment?'

'You are quite right, Sir John,' interposed Clotilda, as Amy was about to reply. 'I quite share your daughter's feelings. The last time I was at the Hôtel des Alpes, at Interlachen, and the Schweizerhof, in Lucerne, I really was disgusted

at the mob of vulgar people one encountered, and I was thankful to get out of them.'

"I am charmed to find you agree with me, replied Sir John, his brows relaxing, and a gracious expression pervading his countenance, at finding himself no longer differed from, a position he was little accustomed to, and he and Miss Brooks engaged during the remainder of dinner in an animated conversation, if conversation it could be called, which consisted in a chorus of dislikes to vulgarity, and non-refinement, and common-placeness, and the rough tra-

velling of the Tyrol.

Mr. Harman watched Captain Cavendish with intense amusement. It was evident there would now be a struggle in his mind between the comparative merits of Miss Brooks and Miss Bodger, which would in all probability end in favour of the latter. After dinner. Maria Jane, being delicate, retired to her apartment in company with Grimshaw and a four-volume novel, and was no more seen that day. Sir John, after a nap in an un-easy chair, with a handkerchief thrown over his face to keep off the flies, strolled out in front, and was speedily joined by Clotilda, who had kept watch upon his movements from an upper window. In the course of a walk, a good deal more sympathy in all Sir John's tastes and ideas developed itself, and a few allusions to her maternal uncle, Sir George Trevelian, a real live baronet, quite confirmed Miss Brooks in a very high position in Sir John's estimation.

'Upon my word, my dear,' said he to his daughter, as he paid her a visit to say 'good night,' 'that Miss Brooks is a most clever, intelligent person; a baronet's niece, too, and her uncle married Lady Erminia Travers, a daughter of Lord Medlicott: really a very high connection!'

'She does not look very aristocratic, papa,' returned Maria Jane; 'but that's nothing. I am sure some of the duchesses I have seen going to the drawing-rooms are plain enough. I prefer her to that Melville girl—she is just like a dairy-maid.'

'Exactly, my dear; how rustic she looks beside my dearest Maria Jane! I was quite struck by the contrast.'

'La, papa!' said Maria Jane, smiling; 'and can you tell me who that handsome young fellow is who sat at the end of the table?'

'That gentleman, I ascertain, is a baronet's son—a Mr. Harman, son

of Sir James Harman.'

'Is he, indeed?' said Maria Jane, opening her eyes. 'I hope I shall be next him to-morrow, instead of that old goose who was beside me to-day.'

'I feared you were being a good deal worried. Good night, my love; make yourself as comfortable as you

can in this wretched place.'

Captain Cavendish of course sought his confident in the evening. 'I am glad, my dear fellow,' said he, 'I followed your advice and did nothing rash about Miss Brooks. You see there is no saying what may happen now. How did you think I got on with Miss Bodger at dinner? 1 have no doubt Miss Brooks is a much cleverer person; but there is something highly interesting about Miss Bodger; and she has a fair complexion, and she is an only child—an only child, my dear Harman, think of that! From Sir John's appearance I should say he has 20,000l. a year, at least. I suppose he would not make his son-in-law take his name, would he? that might be awkward—Bodger Cavendish—Cavendish Bodger—Well, that does not sound so very bad, eh?

'What's in a name?' said Harman,

smiling.

'Very true; what is in a name? I defy any one to detect in the name of Bodger anything which does not convey the idea of—a—the most intense—what shall I say?—respectability and wealth.'

And the Captain assumed a ferocious expression, as if he were already the affianced husband of Maria Jane, and prepared to do battle for her name with all the world.

Several days passed happily away. Miss Bodger took a fancy for a collection of red leaves of all shades, and Captain Cavendish wore himself out looking for them. The fair ledy (with Amelia and Mr. Harman) was generally seated

on a rock awaiting his return, and very often mercilessly sent him away again without allowing him to rest, feeling sure she saw something in the distance much prettier than he had brought; but the Captain felt rather flattered than otherwise. At last, one afternoon, the Brookses received letters from England, telling them that their only brother was suddenly ordered to Canada with his regiment, and that they must come home at once if they wished to see him before he sailed. On this becoming publicly known, Sir John Bodger and his daughter declared that they were sick of the Tyrol, and longing to get back to London, and would be happy to make the journey with the ladies, if agreeable to them; and it was agreeable. Captain Cavendish tried hard to persuade his sister to change her plans and go also to England, but she was determined to remain in Tyrol, or some quiet place, till close upon the time for her daughter's So she agreed to accommarriage. pany the party as far as Innsbrück, where the parting took place. Harman and Captain Cavendish were, of course, at the station, to 'assist' at the departure; and the latter busied himself with Maria Jane's shawls and wraps, and made himself generally useful to her.

'Dear me, Mr. Harman!' said Miss Bodger, playfully rallying that gentleman, 'see what it is to be in the army: I declare Captain Cavendish is far more attentive and useful

to ladies than you are!"

'Well, as you observe, Miss Bodger,' said he, 'I am not in the army—not even a volunteer,—and we poor civilians have no chance at

all with these army fellows.'

Maria Jane looked as if he might have had a chance if he tried; and when he shook hands with her the process appeared to raise her colour slightly. 'Good-bye,' said she, hastily; 'good-bye, Captain Cavendish. Don't forget Nightingale Grove, Wimbledon, and come and see us whenever you come home. Thank you for all your trouble about the leaves; I am sure you have been dreadfully good-natured. Good-bye!' And the train went off: it was

so crowded that the Brookses and Bodgers had to separate and go in different carriages.

'He certainly is a good-natured old fellow, that Captain Cavendish, though he is such a goose,' said Maria Jane, as they whirled along.

'Yes, my love, a worthy creature, though weak, very weak. I admire the way in which Mr. Harman treats him—a superior young man, that. And how fatigued he must be at times by so stupid a companion. One may always observe that high breeding leads people to endure things which the common herd would never dream of doing.'

'That is true,' said Maria Jane;

'he is a baronet's son.'

'And similarly, Miss Brooks,' pursued Sir John, 'she is a baronet's niece; and she shows a strength of mind—a kind of general power of endurance (mingled with great refinement) only to be found amongst the highly connected.

'I am sure, papa, she had nothing

to endure that I saw.'

'Oh! pardon me, my love; she had much to endure. Depend upon it that stupid sister is uncongenial to her, and she was missing the comforts of home; but there can be no doubt at all that she endured. Every line of her face expressed endurance; and, as I said before, I trace it all to her high connections.'

We must return to the station. Did you notice that, my dear fellow? said the Captain, with eager excitement, as the train departed; her last looks and words were for me! I regret I did not propose yesterday; she must have expected it, and must think it strange. My dear Harman, there can be no doubt the girl adores me—not the faintest doubt; and I hope you will be groomsman.

'With pleasure,' said Harman, smiling. 'If you make it all right you will be a lucky dog. And so poor Miss Brooks has no

chance?

'Well,' said the Captain, self-complacently, 'I believe she is a good deal attached to me, and will feel it a little, but what can a man do? I cannot sacrifice myself to a nature which does not wholly chime

in, amalgamate, assimilate itself, so to speak, with my own. Brooks is an excellent creature excellent in her way, but there is a want of that thrilling of electric chords about her which—a—which, in fact, is an absolute essential to the bliss of the wedded state. Now there is Miss Bodger—Maria Jane Bodger! such soul, such poetry, as are embodied in that young creature! and her fortune is immense. I discovered the other day, from her open, confiding father (a fine character, Sir John's!) that she has 80,000l. inherited from her mother, and absolutely hers when she comes of age (she is twenty now). I need not assure you it was through no hints on my part that I gained this information; I never dreamt of such a thing. Her father added (with emotion) that she was his only child, and would have all his large fortune besides, unless he married and had children, in which case she should have an equal share, without regard to the 80,000l. The idea of the old fellow's marrying was too absurd; I could scarcely help laughing. I shall certainly propose the instant I get to England. And, bythe-way, Harman, you are going home, aren't you, on Friday? shall send a packet of leaves by you to Miss Bodger, and you can take them to Nightingale Grove, and that will keep me, as it were, alive in her memory—not that I think there is the least chance of my being forgotten—not the least—but it will be a suitable little attention, you know.'

Mr. Harman quite agreed, and undertook and carefully performed the commissions.

Three weeks later than this, on a fine, bright sunny forenoon, Captain Cavendish was riding out to Nightingale Grove, an imposinglooking mansion, with many superfluous chimneys apparently, and much too large for its pleasuregrounds. On ringing the bell, the servants who came to the door, decked in gorgeous liveries, informed him that Sir John was in town, and Miss Bodger and her aunt, Mrs. Hankey, ' was out taking the hair, they supposed, in the garding.' So the Captain confided his steed to one of them, and proceeded to explore the premises, and observing a fluttering muslin garment amongst some evergreens, proceeding in an opposite direction from himself, he made such a rush to intercept the bearer thereof that he stumbled up against Grimshaw, the severe maid, whom it proved to be, taking a solemn airing by herself.

'I—I beg your pardon,' stammered the Captain, all confusion and disappointment; 'I thought

you were Miss Bodger.'

'I am thankful, sir,' returned Grimshaw, fastening a severe eye upon him, 'that I was not my young lady upon such an awkward occasion. My young lady, sir, is delicate; she might have fainted, she might have took hysterics there is no knowing what my young lady might not have done; and Miss Grimshaw stalked on, leaving the Captain to contemplate all the horrible contingencies which might have arisen out of his late indiscretion. He recovered himself, however, in time to call after her rigid back to ask where her young lady 'Miss Bodger,' replied she, without turning round, 'is clining under a bust of Coopid, amongst the trees on the left.

'A suitable most situation, thought the Captain, his spirits rising to the occasion. He very soon found her, with a fat, goodnatured aunt seated by her, who retreated after a few minutes' conversation, saying she had a message

for one of the gardeners.

Captain Cavendish felt that no time was to be lost. 'Miss Bodger,' said he, in an agitated tone, dropping on one knee—'Maria Jane! if I may venture to call you so—you must long ago have detected the state of my feelings. At Cortina, when the melodious name of Bodger first fell upon my ear, an instinctive feeling told me it was to be interwoven henceforward for ever with my destiny. Your image since then has filled all my heart. I need not describe ----'

'No, no! for goodness' sake describe inothing!' cried Maria Jane,

starting up. Bless me! I thought everybody knew that I am engaged -engaged,' she added, with an air of pride, 'to Sir James Harman's eldest son, Mr. Harman, whom we

met in the Tyrol.'

'Engaged!' said the Captain, faintly, turning green, and to Harman! Oh, ye gods!' Miss Bodger showed symptoms of flight, and the Captain only detained her long enough to swear her to secrecy, and to beg that his horse might be sent

down to the gate.

On his way back, murder and suicide, and many black thoughts beside were rampant in the breast of the Captain. He left his horse at the stables, and walked up Bond Street towards Douglas's, for he found nothing so soothing in any perturbation of spirit which might afflict him as having his hair brushed and shampooed at that excellent establishment. On passing Redmayne's shop, he happened to look in, and whom should he see but the Misses Brooks seated before a pile of brilliant silks which were being held up before them by a shopman all sorts of enticing forms. Quick as lightning the Captain saw his consolation and revenge before him. Clotilda was devoted to him, that he knew, and Harman should see how little his treacherous conduct had affected him; so, quite revived and made a new man of, the Captain entered the shop, and was most graciously received by Clotilda.

'We are engaged this afternoon,' said she, as they were going, 'or I would ask you to come home with us at once; but to-morrow forenoon you must really come early, and tell us all about the rest of your excursion.'

Only too delighted, the Captain took down the number in Upper Brook Street, and escorted the ladies to the door. A magnificent carriage, with pawing chestnuts, was standing at it, and, to his surprise, the ladies got into it, Clotilda smiling sweetly upon him from the window as they drove off.

'By Jove!' said he to himself, as he walked up the street, 'I am in luck; she has evidently succeeded to an immense fortune. Ah! Harman, my boy, I shall be even with you!'

The Captain passed a most blissful evening, very different from what he had expected on his return from Nightingale Grove; and the next morning between eleven and twelve he went to Upper Brook Street. Clotilda was sitting alone in a pretty drawing-room, very handsomely dressed, and glittering with massive gold chains and lockets. On the table lay several new jewelcases, open, and displaying expensive-looking bracelets and brooches. Every appearance betokened wealth, and the soul of the Captain rejoiced within him.

After some general conversation

he began to wax sentimental.

'The Tyrol will always be to me henceforth,' said he, 'encircled by a halo of the fondest memories and most endearing recollections. When a kindred soul is met with in this wilderness-world, Miss Brooks, the place of meeting becomes thenceforth as a kind of Paradise to both. Do you not think so?'

Clotilda cast down her eyes, and murmured, 'Yes. Yet you know, Captain Cavendish, the pleasure was cut short for me, otherwise I could have remained weeks and weeks in that delightful Cortina! It has been too often the case with me, that kind of thing; in fact, as you would yourself observe—

[""'Twas ever thus from childhood's hour,
I've seen my hopes all flee away."'

(Miss Brooks was never known to make a correct quotation in her life.)
'I never lov'd ——'

'Clotilda, is your black moiré to have a high or a low body?' said the mal à propos Amelia at this juncture, looking in. ('Good morning, Captain Cavendish.') 'There is a person here from Mrs. Murray's to ask about it.'

'Oh, the stupid creatures!' exclaimed Clotilda, in an anguished tone; 'they will be making mistakes in them all; I must go and speak to the young woman myself. Captain Cavendish, I am so sorry; but could you call another day?'

'May I ask you to spare me half a minute, only half a minute,' said the Captain, earnestly, for he felt that, after his late experience, delay was dangerous. 'I shall be for ever obliged if you will.'

'Very well,' said Clotilda, rather unwillingly, and a little out of temper. 'Amelia, tell the person to wait; not a thing must be done till I speak to Mrs. Murray myself. Well, Captain Cavendish,' she added, impatiently, and still standing up, as Amelia left the room, 'what is it?'

'Pray be seated, Miss Brooks, for a moment, a mere moment; I shall not detain you. Clotilda, pardon this agitation—you must feel, you must know, that you, and you alone, made the Tyrol a terrestrial Paradise to me! Since then your image has filled this faithful bosom to the exclusion of all else; and I have flown on the wings of love to claim, at the earliest moment possible, the possession of your fair hand. flatter myself these sentiments were not wholly unknown to you, or wholly unreciprocated by you at Cortina, and a foolish bashfulness alone prevented my giving utterance to them long ago; but -

'Upon my word!' said Clotilda, very wrathful at the allusions to the Cortina flirtation. 'Your bashfulness, I am sorry to say, has forsaken you at a very unfortunate I never thought or cared in the very least to think what your "sentiments" were either here or at Cortina. I never dreamed of your presuming to think of me except as an ordinary acquaintance; and I beg to inform you that I am engaged to Sir John Bodger, and shall be married to that gentleman on the same day on which his daughter marries Mr. Harman. Good morning, Captain Cavendish.'

Let us draw a veil over the rest. The Captain's sensations would be too harrowing a picture to present to the sensitive reader. But, for the comfort of his tender-hearted sympathizers, we must add that his recovery was not long in coming about, and when last heard of he was once more pursuing his 'little game' under an Italian sky, in the

salons of Naples and Rome.

LOVE AND PRIDE.

(ILLUSTRATED BY T. MORTEN.)

And closed for me on day,
And I must now take heart and go
Upon my lonely way.
For pride stood in the deadly lists,
A dark, relentless foe,
And stirred the depths of bitterness,
To bid my true love go.

And love lies slain upon the field,
His death-deep wound I see,
But surely his sweet shade will come,
To mock my pride and me;
To mock us in our wild unrest,
And triumph o'er the foe,
That stirred the depths of bitterness,
To bid my true love go.

To whisper, 'Could thy pride be slain,
By me in combat true,
The love-light yet might burn again
Within thine eye's fond blue.
But I am but a ghostly shade,
And he my mortal foe,
That stirred the depths of bitterness,
To bid thy true love go.'

THE ANNUAL QUESTION—'WHERE SHALL WE GO?



MATERFAMILIAS PUTS THE ANNUAL QUESTION- WHERE SHALL WE GO?

WE are here to-day and gone to-morrow is the motto of the Londoner towards the end of July. The reflection that to-morrow never comes puts something of a damper upon those spirits who long to burst through the trammels of society's bondage, and be away over the mountain-top, down in the sunny vale, sailing across the sea—the sea, the ever blue, the fresh, the free! (or words to that effect),—or, in some way or other, breathing a purer atmosphere, than that of foggy, smoky, feverish London.

VOL. VIII.—NO. XLIII.

The necessity of being here today wearies us; and the pleasure of sticking up on the door of our chambers, 'Gone to-morrow,' or rather, 'Back in ten minutes,' which simply means absence for an indefinite period, is a feeling, or a conglomeration of feelings, almost indescribable.

Uncertainty is a condition of our mundane existence. We are gone to-morrow. Whither? That is the question, as Hamlet has often observed to the footlights; and that is the inquiry to which the present

writer is now about to attempt a satisfactory reply. Experience is the maternal aunt of invention; and as regards our periodical exodus, we, 'wishing to try some new place this time, generally consult divers friends concerning the merits of different watering-places, until, lest we should lose the season in perplexing deliberation, we decide, as we have decided twenty times before, upon Brighton. The fact is, thoroughbred Londoners cannot wrench themselves away from beloved London. They may babble of green fields, fresh eggs, larks (in the sky, not in a dish, with breadcrumbs), new milk, (which Londoners are perfectly afraid of when they do see it,) cream (which always disagrees with them,), the bracing breezes on the hills (catch 'em walking up a hill!) the home-made bread (generally productive of indigestion in a Londoner), and the beautiful garden (of which he knows about as much as a fish would of boots)—but, talk as they will, all these delights must be, as the country-house advertisements say, 'within easy reach of town.' And for this reason down go Londoners to Brighton, well named 'Londonsuper-Mare.'

For the benefit of the readers of this magazine, the editor issued a commission of inquiry, with a view to the timely solution of the annual where-shall-we-go-to difficulty.

The present writer having been most judiciously selected for the post of chief-commissioner, now proceeds to lay before his public and his editor, or vice versâ, the depositions of such witnesses as he has thought fit to examine.

Extracts from witness's diary with personal explanations, which shall be marked, when necessary,

thus, pers. expl.:—

'May 20. Came to the determination that we must go "somewhere" this year. "We" means wife and self. Wife suggested Brighton. Said (that is, I said), "Oh, hang Brighton!" Wife said I needn't be so cross about it.

'Myself (Mr. Bingle.) Well, but you always suggest Brighton (which she does—pers. expl.) 'Mrs. B. (pettishly). Well, then, suggest something better.

'Mr. B. (posed, is silent and appears absorbed in the newspaper.)

'May 21. Made up my diary tonight. It seems settled that we are
to go to Brighton. I suppose there
is some other watering-place besides
Brighton. Let me see—why should
there be? England is an island.
It can't be bounded by Brighton on
the north, south, east, and west
coasts. Every proposal to go anywhere has, as far as we are concerned for the last five years, resulted in Brighton. What did I
say at breakfast this morning? I
may note it thus—

Mr. Bingle (with a view to mollifying Mrs. Bingle, who he knows has never been beyond Boulogne). Wo

might go abroad this year.

'Mrs. B. (not to be taken in all at once). Yes, so you said last year.

'Mr. B. Well, I intended to have gone, I'm sure, last year; but you know—(stops, foreseeing that he may call up some unpleasant reminiscences).

'Mrs. B. (recalling the unpleasant reminiscences). I do know; you went abroad with that what's-hisname.

'Mr. B. (knowing perfectly well

whom she means). Who?

'Mrs. B. (pettishly.) Oh, you know well enough (which he does), Milsom. You're at his beck and call: he can get you to go anywhere.

'Mr. B. (allowing that there is a certain amount of truth in the charge, but objecting to the phrase used). Not at his 'beck and call,' my dear. I thought that a run to Dieppe, and so forth (he slily omits Paris) would benefit my health. You know the doctor said I wanted change.

'Mrs. B. (returning to her point). Well, you might have taken me

with you.

'Mr. B. (with a slight distrust, founded upon experience). Nothing would have given me greater pleasure.

'Mrs. B. gives a little incredulous laugh. Mr. B. looks at the newspaper.

'Mr. B. (drawing a highly-coloured picture). Now what I should like to do would be to go by Folkestone to Boulogne, then by rail, without stopping in Paris, as far as Stras-

bourg. (Here he arrives at the end of his tether, and winds up generally.) And then we could look about, see what was to be seen, and return by —by—(forgets the names with which he had intended to impress Mrs. B.) —by lots of places, and so home.

'Mrs. B. (liking the idea, and allowing herself to be slightly taken in). But what could we do with the

children?

'Mr. B. (who has foreseen this loop-hole from the first). Ah, that's it! We can't take them with us. Fancy a caravan—(seeing that his wife doesn't enter into the humour of the idea, he fancies the rest to himself, and is much amused).

'Mrs. B. (inspired). We might get them a little cottage somewhere, where they'd be perfectly comfort-

able, and then go away.

'Mr. B. (with an eye to the probable expenses of such an arrangement, and the certain curtailment of his own personal enjoyment). Yes, that wouldn't be a bad notion. But—(doesn't quite see how to frame an objection)—but, it's expensive.

'Mrs. B. Oh dear, no; not a bit more than if we were all at Brighton.

'Mr. B. (dubiously). Oh! it would be, though. Besides (adroitly touching a chord in the maternal heart), we shouldn't like to be away so long from our children.

'Mrs. B. (trying to steel herself). Oh! they'd be perfectly happy with nurse. Nurse is very fond of them.

'Mr. B. (following up his cowardly attack). Yes, she is. Why the baby last year, while you were away for a short time, got so fond of her that she wouldn't take to you at all—would she?

'This last hit settled the business. Boulogne, Calais, Amiens, Rouen, Strasbourg, Strasbourg Cathedral, all faded away like a dissolving view, and in their place came Brighton.

'May 25. * * * (Mr. Bingle's diary for this day was put in and read.) * * * Settled the 'matter at last. Brighton is not our destination. We shall try Littlebeach, in Sussex. Somebody dropped in and said, "Why don't you go to Littlebeach?" We looked at one another. The thing was simple enough. Why didn't we go to Littlebeach? We

gave it up, like a riddle. Our friend said, "Littlebeach is the place. Such an air! nice houses; very quiet; sands; no shingle to speak of; soon over at Mowbray Castle." What was Mowbray Castle? "Not know Mowbray Castle! Beautiful grounds, artificial lake, gardens, lawn, keep, band on Sundays, pic-nics, old helmets, spears, hunting-horns, portraits by Holbein and Van Thingummy, you know, in Henry the Eighth's time—ah, no matter—well, portraits of all the old dukes; and stags, deer in the park, and a dairy —beautiful Gothic dairy; stable, in fact you never saw such a charming place. Oh! you must go and see Mowbray Castle!—but of course you will if you're at Littlebeach." And for children? "Oh! the best place for children. No horses nor carriages; a large green, where they can play about all day without the chance of being run over. Expensive? oh dear, no! if you get your rooms now; but of course, in the season—" 'Oh! then there is a season?'

'It is, perhaps, scarcely necessary to remark that it was the male interest that suggested this last inquiry. Littlebeach, however, seemed to accommodate all parties. There was quiet, and rest, and small expense for Paterfamilias (I don't mind speaking of myself under this title, but I do not care about anybody else applying it to me); there was a sort of Happy Huntingground for the children, and a Season for the female interest.

'Then said we, with one voice, "Let us decide on Littlebeach;" and so on Littlebeach we accordingly decided.'

Thus far Mr. Bingle's diary, which treats chiefly of his reasons for choosing Littlebeach in preference to any other beach. The Commissioner asked the witness whether Littlebeach came up to his expectations, and whether—which was the important point for the public out of doors—whether he could recommend Littlebeach as one of the best, if not the best watering-place, for a sojourn during the summer and autumn months?

The witness replied that Little-

beach quite came up to his expectations, in fact exceeded them; he begged to explain that he meant in point of expense. If his evidence would be of any service to the public out of doors (though as regards the beach and green those might be enjoyed gratis), or to the public indoors, which was of more importance in the way, for instance, of lodgings, he would be delighted to give it. Might he read extracts from his diary? He might. Then the public would be good. able to judge for itself. He would call his extract generally Little-He would first treat of the geographical position of, and the means of reaching, Littlebeach.

(Extract from Diary.)

'Littlebeach is on the Sussex As I've from day to day postponed buying a map I am unable to state exactly where it is. It is not far from Worthing, because I've driven there from Littlebeach, and a lovely drive it is; in fact, I think you pass Worthing in the downtrain from London, or pass London in the up-train from Bognor, which stops when there on notice being given by somebody. This is the reminiscence of something in "Bradshaw," but not having his Guide at hand I cannot be certain of my quotation. Littlebeach has no shingle to speak of but plenty of sand: miles of sand. There's a fine green that serves for the children, divided by a gravel-walk that serves for a promenade. There's one row of houses with the advantage of facing the green and the sea, and behind it another row of houses without any advantage at all. first are very expensive but very fair; the latter, comparatively, more expensive, and, beyond all comparison, very unfair. There is a charming little inn, called the "Beach Hotel," or "The Beach Hotel Inn," as if the proprietor had not yet made up his mind as to the style of his house. I fancy that now Littlebeach has a railway station all to itself (formerly it divided the convenience with Mowbray, inland. where the Castle is), the question is settled, and "inn" is altogether

dropped, as too plebeian. By the way, members of the Roman Catholic body will find a chapel here. They used, the waiter informed me, to have mass said every Sunday morning in a private room of the inn, at 7 A.M., these veritable Early Christians! The Lady of Mowbray Castle is the patroness belonging to the ancient faith. What made me think of this was, that an Established Anglican clergyman keeps a school or takes pupils here, and lives in a beautiful house at the end of the advantageous terrace, and the boys have a capital cricket-field bounded by a low sea-wall of flint. There's no difficulty in getting to Littlebeach when you've once taken your seat in the right carriage. There is a difficulty in finding the right carriage, as some go through and some don't, and both look, to the inexperienced eye, exactly alike. Care must also be taken as to what official you seek out in order to make inquiries. Some officials know a little about it, a few know something less about it, and others know nothing about it. It is safest to consult the last, as they'll set about asking questions of others as much for their own information as for yours. Some guards go all the way, others only go part of the way; neither will be of any service to you: this is my experience.

Moreover, you will do well not to rely upon any information with which the ticket-clerk may furnish you. Observe that when he replies to your question it is with an answer that he has been obliged to obtain from a fellow-clerk, and goodness knows where he got it from. The sum of all is, put this and that together, and you'll get comfortably down to Littlebeach. When there, drive at once to the "Beach Hotel," where you will be unable to obtain a room, because they are so full, and so very busy that a waiter can only give you half an answer as he is rushing into one room with the duck, and the other half when he is running out to fetch the green peas that have slipped his memory. The people in the bar will be disinclined to answer you at all, but after some deliberation think it not

improbable that you may be able to get lodgings at No. 3, in the advantageous terrace. On the whole, their opinion is against the possibility of your obtaining accommodation anywhere. The improbabilities and impossibilities generally resolve themselves into the landlady managing, somehow or another, to get you something at Mrs. Grigson's cottage, not a hundred yards off, until a family now apparently filling the entire hotel, has departed. You take what you can, and find that, if you'd gone to look for yourself, you could have had a choice of almost any number of rooms (if at the end of May) in the advantageous terrace. Don't take a cottage at Littlebeach, however attractive it may appear, until you have ascertained that there are no draughts, no mice, no rats, that all the windows and doors can be fastened, that the rain won't come in, that the chairs won't break down, that the kitchen range will cook something besides chops, that the sanitary arrangements are satisfactory, that the garden belongs to the temporary tenant, that there is water on the premises, and a few other little matters all more or less tending to the comfort of the lodger. This is for the guidance of the in-door public. I think there is more rain at Littlebeach than anywhere that I know of—at least there was during our stay.

There is a depôt of soldiers encamped on the other side of the river Mow, which runs into the sea by Littlebeach. These bold militaires are very pretty and flashy, in the sun, at a distance, and in the matter of bugling they must have arrived at a greater state of perfection than has any other branch of her gracious Majesty's service. You will get some idea of the delights of Littlebeach from the following very brief notes made in my journal at the time:—

'June 10.—Settled in Mrs. Grigson's cottage. Haven't seen Mrs. Grigson. Boots from the "Beach" showed us in here. Went for a walk on the promenade, while Mrs. Bingle superintended the unpacking. Hate packing and unpacking.

Hate luggage. Ha! there are the soldiers bugling; how delightful it sounds: so mellow. Possibly that's the réveille; let me see—it is the réveille in the evening, isn't it? or the morning? Both perhaps. I will ask that old gentleman, doubtless an old inhabitant. "Can you inform me, sir, if that is the réveille?" I repeat my question, "Can you inform me?" and so forth. He cannot, because, as he explains, he is deaf. I apologise he doesn't hear me. Deaf men shouldn't be allowed to go out on promenades when bugles are playing. Ah! lovely, boundless ocean! What's the time? Dear me, past nine I declare. In to supper or dinner-supper, for I'm very hungry,

and then, after a mild cigar, to-bed. '9'30.—In Mrs. Grigson's cottage. "Before supper, I should like to wash my hands. Some hot water?" -"Is none." "Well then" (being in a good humour, and willing to rough it), "say cold water." "Oh, nonsense, there must be cold water." "Oh! I say, —"There isn't." come, this won't do."—" Boots said he'd bring some, and he hasn't." "What do you mean by bring some? Why isn't it here? Why, I ask, isn't it here? Good gracious! isn't it enough to make a saint angry? I don't complain without cause, my dear." (This to my wife, who says I do.) "Well, where's the Boots?" I go off, fuming with rage, to find the Boots. My demeanour, I've been since afraid, was that of a man bound to take Boots' life. I meet Boots on the road; he is coming from the "Beach" laden with pails. "'Where are you going to my pretty maid?'—I mean you—you— Boots?" Words fail me, and I merely call him Boots. Somehow. meeting him seems to calm me down. His explanation, which I am afterwards totally at a loss to understand, does at that moment appear as satisfactory as it possibly can be. I tell him to be sure I have a bath brought to me in the morning. He promises faithfully. I tell him to order supper for me at the "Beach," and I'll come in. I remind him of my bath, and he says it shall be all right. Useful fellow,

Boots. I walk up to the beach; there is bugling again. That sound, I tell my wife, is the réveille. She wants to know what a réveille is. I tell her something on a bugle. She is very curious about it—women are—and I am a little annoyed at being unable to give a correct account of the réveille. It's sounded at night, it's the last call, to bring the soldiers in, or the first call in the morning to get them up; in fact, something of that kind.

'11.—We have had a very comfortable supper, a walk, and a cigar —that is, I have had a cigar on the promenade. We have listened to the sea; we couldn't help that, I imagine. We remarked, that it had quite a mesmeric effect, and we heard the soldiers' bugle in the dis-My wife said that that must be the reveille. I said, "Yes, it must;" but I confess that my mind was not by any means made up on the subject. But there is something so cheering and stirring about a bugle-call. My wife says it's lively to have soldiers about. I think so too.

'11'30.—Bed. Ah! don't want a blind to the window to shut out the sea. I open the window to give one last look at what sort of night it is. Ha! the bugle in the distance as fresh as ever: that must be the réveille. My wife says, "Don't bother!"

'Next Day, 5 A.M.—"Eh! what's that? Oh, the sun. Draw the blind." "Can't—there's not one." One does want a blind. "Ha! there's the bugle. Pretty sound. Can't be the réveille." On second thoughts, this is the réveille.

'5'45 A.M.—I've dozed. Ah! how powerful the sun is. I know what I'll do: a towel shall be pinned up before the window. Where's a towel? Where are pins? My wife wishes I'd be quiet. Hang the pins! Catch me trying to stick up a blind again. More bugling. Two bugles, I fancy, at once. Hallo! bugles springing up in different places. What between the sun and the bugles I shall never get to sleep again, and then I shall have a headache.

'6'15.—Bugles and shouting. Sun stronger than ever.

'6'45.—More shouting, less bugling. Sun simply scorehing.

of arms. I shall get up. My wife asks me "Why don't I go and bathe?" I answer, "Because I don't care about it." I'll take up my bath, however, and then—halloa! no bath? Now this is too bad. I told Boots to be particular about my bath—a hip-bath, if he could get one, I said, or any bath. Oh! this won't do. I must go and find Boots. What a row these bugles are making! Don't like too much bugling. They can't want it.

'7'20.—Met Boots coming from the "Beach" with a large tin pan: this is my bath. He says he quite forgot it; he thought I'd have bathed in the sea. Did he? he had no business to think. I am mollified, howover, and he swears it shan't happen again. Bother those soldiers!

'7'45.—Bugles. A small review. Firing, shouting, clashing; headache.

'8'30.—Bugles ought to be abolished; they're a nuisance. There's nothing pretty or stirring in them whatever; except early in the morning, then they're stirring enough. I shall write to the colonel, if there is one.

'Evening.—* * Yes, I must write to the colonel. Two soldiers, drunken rascals, insulted Mrs. Bingle "My dear on the promenade. Colonel——." No, I'll wait till tomorrow. My wife insists upon my taking notice of it. Women are so impetuous. P'r'aps the case wasn't so bad as she makes out. My wife says I've no spirit. I say "Oh yes, I have." She requires me to call on the colonel. I undertake to call on the colonel. In my own mind, I fancy that the colonel will take my charge as an insult to his corps, and call me out. Well, I won't fight. Oh! I must fight though. my wife wasn't so impetuous. More bugles. Hang the bugles, and the soldiers, and the colonel!

'Day afterwards, 6 A.M.—My wife starts up; some one in the house. "Burglars?" I say "No." I must get up and see. Pooh! it's the bugles that awoke her out of a dream. There is some one in the

garden, though, digging. I ask him what he is doing there. He replies, "Digging." I could have told him that. I tell him to go—he's trespassing. He says he ain't; he adds that he's digging for Mrs. Grigson: talking of Mrs. Grigson as if she was potatoes. It subsequently appears, from his always being all over the place for Mrs. Grigson, that he is in that lady's employ. Bugles, clash, holloaing, shouting, as usual.'

'Yes, sir,' said the witness, closing his book of extracts, 'Littlebeach is all bugles, shouting, soldiers, and officious emissaries of Grigson.' What do the out-of-door public say

to Littlebeach?

The witness stepped back to say that Mrs. Bingle could recommend Littlebeach 'for the children.'

Mrs. Bingle, who volunteered evidence for the benefit of the married female public out of and in doors, stated that Littlebeach would have been very pleasant but for the Miss Jonesses, who dressed so, just as if they were at Brighton, and were always flirting with the officers. You couldn't walk about anywhere but what you came upon a Miss Joness—there were three of them—and an officer. Disgraceful! The clorgyman called on her soon after she came, and so did Mrs. Woberts, his wife. Mrs. Woberts was a very jealous woman, they said, and Mr. Woberts was a very handsome man. She hates scandal; but you really could'nt go a step out of your house without being talked about The things that were said of her behind her back—never mind how she heard them—were disgraceful. Mr. Bingle didn't care, of course not; it didn't matter to him. They might say anything of her they liked, and 'nasty drunken soldiers might insult her, and trample on her, and then get talking about her at night over the garden rails with the nursemaid. But she wouldn't go again to Littlebeach if she knew it.

This witness, who was in a very excited state, returned to say that she could recommend the place for children, who didn't know any better, and whose parents didn't care about their being neglected.

but it was the last place in the world for giddy nursemaids.

On being asked why, the witness promptly replied, on account of the soldiers, especially the bugler. It was the bugler, she had found out, who had talked over the garden palings.

MUTCHBEACH.

Mutchbeach your commissioner visited in person. A delightful place, also on the Sussex coast, beyond Rottingdean, at the foot of the Downs, and about ten miles from Brighton. Mutchbeach is the healthiest place in England. The dogs live up to any age. The labourers at the age of a hundred don't die; they simply walk away over the downs and disappear. The drainage of Mutchbeach is imperfect: this is a draw-One of these days Mutchback. beach will rival Brighton. Your commissioner will never go there Now the fashionable costume for the out-of-door public—if the public likes to adopt it—is flannel shirt, belt, no braces or waistcoat, light shooting-coat, and a slouching hat. No collars admitted. Mutchbeach possesses an inn. This is a favourite resort in the evening for labourers. The population of Mutchbeach is at the mercy of the butcher. He 'kills' twice a week. and they are obliged to eat whatever he kills. Just for the sake of form, you are asked by your landlady in the morning what you will have; and merely to keep up this ancient ceremony, you say, 'Well, I should like some beef to-day for a change.' Of course you cannot have that, as to-day is Wednesday, and the butcher only kills on Thursday. You do not understand it — you never do—no one does, except, perhaps, the butcher, and you leave it to your landlady. Prawns are plentiful in Mutchbeach, shrimps scarce. There are, if I remember rightly, six lodging-houses—I mean there were; for since Mutchbeach has become a station, I dare say lodgings are in greater request. Mutchbeach is a Cinque-port, though you need not waste time in trying to find its name among the five. Mutchbeach has its own council, its councillors, its prison-house, its court-house. its privileges, its ceremonies, its Volunteers, and its battery. It was my good fortune to be at Mutchbeach when a prisoner was taken up by the superintendent of the Mutchbeach police. The force consists of four able men, including the super-They are very quiet, intendent. unobtrusive sort of characters, including, as before-said, the superintendent. They evidently do not approve of late hours, as they never injure their health by appearing in public after ten o'clock, p.m. also includes the superintendent.

Well, a prisoner was caught. To the credit of the morality of Mutchbeach, or the discredit of the vigilance of the police, this was the first prisoner that had been caught for three years. No, by the way, he had not been caught, he had given himself up. There was a perfect rejoicing in the town—a jubilee. The gossips were all out chatting at their cottage doors, stable doors, garden gates, or shop What was Ockdon's crime? He had stolen a cabbage from Tottell's garden. What will he get? Prison. But here comes the procession. Up the narrow High Street, and parading all about the town, marching the sinner Ockdon hither and thither in triumph; in this order:—

A Herald

(or some sort of official with a wand of office).

The Superintendent of Police (mounted).

The owner of the Stolen Property (also mounted).

His son, aged ten, bearing the Stolen Property.

Some boys not in the procession,

and soon kicked or cuffed out of it.

The Town Councillor, in a gown trimmed with

fur.

Somebody else appearing, because there was a

spare gown trimmed with fur to be worn.

The Jury.

The Town Something or other, with a large book fastened with clasps (probably containing the bye-laws).

One Horse Fly, containing the 'Three Local Magistrates' (with power of Cinque-port Judges).

The Volunteer Brass Band (playing, with some idea of tune).

The Tradesmen's Band (drums and fife, playing, with no idea of any tune).

Two Policemen.

The Prisoner handcuffed.

Two Policemen.

ple of Mutchbeach

This imposing array arrived at

The Mutchbeach Volunteers.

the court-house, which was only large enough, unfortunately, to contain the judges, the police, the prisoner, the accuser, and some of the jury; the remainder of the jury, with the general public, got the best view they could of the proceedings through a window in the court-house.

The town councillor was in the middle of a splendid speech, wherein he was enlarging on the heinousness of the dastardly act that had brought John Ockdon before their lordships, when John Ockdon was observed suddenly to hold up three fingers of his right hand. police were on the alert, should this have been a signal for a rescue. The superintendent held his breath, and grasped his truncheon. this moment the prosecutor was seen to look at Ockdon's three fingers and shake his head. Amid an intense silence (for even the orator had stopped), Ockdon held up four Tottell, the accuser, nodded. In another minute the town councillor had the happiness to inform their lordships that this matter had been settled out of court, as Mr. Ockdon had agreed to pay four shillings for the cabbage, and the expenses of the summons. lordships informed Mr. Ockdon, the defendant, that he left that court without a stain on his character, as did also Mr. Tottell, the plaintiff; and the procession re-forming, rode and walked triumphantly round the town in the same order as they came, with the exception of the accuser and the quondam prisoner, who now went together, arm-in-arm, a glorious spectacle for all men in general if they could have seen it, and a signal tribute to the justice and moderation of the Mutchbeach code.

Yes, Mutchbeach is a charming old place. Most interesting, most healthy. Over the downs, if you have a horse, you will get a bracing gallop. And, finally, what I say to the public is, Go to Mutchbeach. Its name, perhaps, is not Mutchbeach; but drop a line to the editor; he will communicate with his commissioner, who will have great pleasure in forwarding further particulars about this Cinque-port, and advancing at once the interests of a

town and the welfare of an honour-

able community.

Worthing everybody knows. I prefer mentioning less popular watering-places. There is a queer little place at the mouth of the Thames, Mudsea, where you can go down and play at being at the seaside.

Scarborough is too far for Londoners, as a rule, but it is as far above Brighton as Mont Blanc is above Primrose Hill. Then there is Weymouth. Better place Weymouth in winter than in summer, because of the hunting. If you do not hunt, of course this is not much of a re-Take a turn up commendation. Malvern Hills, and go in for the water and Dr. Gully. There is scenery for you! Or visit the south, and the mouth of the Dart,

Blackpool in Devonshire, Slapton, where the salt and fresh water almost join, or Dawlish, where the mackerel are. There is scenery for you! Such Prussian-blue green crowning the red-stone cliffs! Your commissioner has evidence concerning all these places, and has something else to tell you about how and where to spend your 'out' season. But go where you will, be where you will, do what you like, you will not, for health, economy, and outof-door simple amusements, beat Mutchbeach. But where is Mutchbeach? say you. Touch the lip of silence and the tip of the nose of 'knowingness' and note these landmarks following:—Lewes and Brighton are within easy reach, and Newhaven is quite close, if you want to go to Dieppe. Adieu for the present.

PALL MALL IN PARIS.

'VOUS n'avez rien à déclarer?' Such is the first welcome that a paternal government, mindful of the Octroi, addresses to the stranger on his arrival within the barriers of Paris. Such, too, is the question that rises in the mind of every intelligent reader who takes up an article on that ever-delightful but over-described city. Am I condemned to wade through several columns of the ordinary luggage, or shall I find here something novel or perhaps even something contraband? And if, on the first page, the traveller assures that he has nothing but the commonplace old clothes with which so many lay-figures have been dressed up, and perhaps a Murray's guide-book and a map, the reader dismisses the following pages with the douanier's remark:

'C'est bien; on n'ouvrira que celui-ci,' and so passes on to the next article.

Well, I have something to declare.

I declare that I have no description of Paris to give. For that, including its population, policemen, climate, and latitude I must refer to any encyclopædia. Practically, the Tuileries are exactly (in green)

what the Green Park is in brown; the Rue de Rivoli is like Piccadilly, and the Place de la Concorde is nothing more than Charing Cross. Still less have I any monuments. no more go to the Louvre in Paris than I do to the British Museum in London; and I should as soon think of going up the Colonne Vendôme as of ascending the lying Monument on Fish-street-hill. Not but what I have done all of these things, but it was in the days when I used to eat jam-tarts and cram knowledge. I have seen both the Elgin Marbles and Napoleon's cocked-hat; and so, no doubt, has Therefore peace to the reader. them! Send the children there, but don't take us with them. Nor have I any studies of human nature, which is alike all the world over. Freddy in Pall Mall, and Lady Mena Maltyre in the 'Ladies' Mile' are much the same as Alphonse in the Faubourg St. Honoré, and La Marquise de Pomponne at Longchamps; the same springs of action, the same hopes and fears move them; and very likely the same modiste or tailor dresses them both.

'Still,' says the douanier reader as he turns over the leaves of my lug-

gage—'still there are points of difference between things in Paris and things in London.' Exactly so. The sergent-de-ville wears a cocked-hat and sword instead of a helmet and truncheon; the climate of Paris includes a sun among its arrangements, instead of coal-fires; Alphonse and Lady Mena have a less perfect notion of dressing themselves than Freddy and Madame de Pomponne. And it is precisely these small differences with which I am concerned. Besides these, too, I have one or two notions which by the tariff are usually prohibited. A wholesome horror of my fellowcountrymen anywhere else than in our common country; a timid doubt whether, after all, the British nation is the greatest and grandest in the world; and a firm conviction that the Marquise de Pomponne is prettier than Lady Mena are among Do not seize them, dear them. douanier—they are only for my own Take the duty of disbelief on them if you will, skip them, overlook them, and so chalk my trunks and let me go on.

How pleased Madame Coqueluche is to see me! She has prepared the best room in the Hôtel Coqueluche for me, she says, the room au quatrième, overlooking the Tuileries; and the trees are so green, and the nightingales have begun to sing in the evenings—and the races begin next Monday; and I must eat a bonne soupe after my journey. I have really grown — Madame Coqueluche always winds up so, to insinuate that she finds it impossible to believe I am more than 'Monsieur est si blond,' eighteen. she says, by way of a good reason; and she makes my youth and inferred innocence a justification for the affectionate interest she always takes in me. Still, somehow or other, I always get put on the fourth floor, in a very small room; and in the bottom of my heart I know that Madame Coqueluche makes the same sort of speech, varied according to the circumstances of each case, to every one of her guests. But what then? She does it with such a grace, and such a charming air of sincerity, that I am persuaded she looks upon me as

her son; and for worlds I would not disillusionize myself. She is very fat, and very forty; but when she smiles there are two such dimples in her cheeks, and her little black eyes and bright teeth light up her face so pleasantly, that she is quite fascinating. How different from my landlady in St. James's Street, who is simply a gaunt and sour embodiment of rent, and who has never smiled upon me since the night I had four bachelor friends to supper, who smoked and sang till three o'clock in the morning!

The neat-handed, long-aproned waiters of the Café Mazarin are also very pleased to see me. Their form of flattery is to believe that I am a Frenchman. They never offer me a 'bifteck' or the 'Times,' but remind me that I am known to them, by suggesting that I have been 'en voyage,' and without further question bring me my accustomed halfbottle of Burgundy and the 'Sport' newspaper. This breakfast-hour I count one of my pleasantest times; and as I sit in the doorway, eating my Chateaubriand, and watch the passers-by, I idly wonder why in London we have but the one meal of dinner (for of course the cup of tea and musty egg swallowed at nine o'clock are not worthy the name of meal); and I conclude it must arise from the desire of Englishmen to eat and drink a great deal more than is good for them, which can only well be done once a day—whence mornings of starvation and evenings of repletion. But how delighted I am to escape from the system, and to add to the enjoyments of life my breakfast on the boulevart at eleven o'clock, and to sit out afterwards in the sun, over the morning weed and the 'Constitutionnel!'

We all know, for the 'Times' has told us, that the French press is not free. The 'Saturday Review' even says that it is 'gagged,' and both (for once) agree, with truly British modesty, in offering up a thanksgiving that they are so much more noble and independent than their neighbours. Well, I confess there is less thunder and more fireworks in the Paris press, a less persistent abuse of all other opinions than their own; certainly, too, less news

and more invention. But all this The French goconcerns me not. vernment is very hospitable to me; it keeps up the Bois de Boulogne, plants trees, waters the Champs Elysées all day long, and plays fountains through the heat of the afternoon for me; and 1 do not much care if it is not abused every morning by a free press. In all things that do concern me, I prefer the French to the English prints. I find in them, intelligent criticism on plays and acting, quite as much law and crime as I care to read, and accounts of the races in intelligible language; and if the leaders seem to be under the suspicion of having too implicit a belief in the infallibility of the imperial government, and the desirability of investing in the 'Emprunt Mexicain,' I know exactly in what way to make the allowance, which is much more than I do with the 'Times.' Then I have the 'feuilleton,' to amuse me and remind me that fiction as well as fact should have a part in daily life, and I have, too, those fascinating fuits divers,' little relevés pleasantly spiced, relating how 'Le sieur X. was engaged in roofing a house, when his foot slipped and he fell with all his tools into the lap of a lady who happened to be passing, and who, of course, turned out to be his mother, recently returned from a successful speculation in Australia.

Walking along, thinking of all these things, I am stopped by a crowd, and recognize a common phase of Parisian life which I should like to recommend to Mr. William I have seen somewhere that the man who plants an acorn is a benefactor to his species; but here in Paris they plant the oak itself thirty feet high, roots and all, and a proportionate quantity of earth, all of which is brought over the hole prepared to receive it, on a huge framework, and lowered down into its place with ropes and Just think, after that, of pulleys. the wretched shrubs that do duty as trees at the Horticultural Gardens!

Nothing is perfect. Among several things I could name, one is the Parisian theory of driving. It is

aggravating enough to see everything on the wrong side of the road; but that is not all. To hold the reins at the extreme end, with any amount of slack flapping about the horse's flanks; to let them go altogether upon the first appearance of danger; to shout a great deal; to serpentine along straight roads and turn imaginary corners where no corners are; and to ignore the existence of foot-passengers altogether, appear to be the leading articles of the coachman's belief; and I declare that I would as soon think of crossing the line at Clapham Junction, with all the up and down expresses ten minutes overdue, as the Champs Elysées on a fine afternoon. The riding is even worse, but its peculiarities are perhaps attributable to the use of ferocious, long spurs, which, as the cavalier turns his toes well out, would probably meet somewhere inside the horse but for the fact that the leg is pointed as much as possible to the horizon: the effect of all which is that the rider has no grip whatever; and should he venture upon anything faster than a walk performs evolutions exactly similar to those of the clay figures sometimes seen perched on the top of a fountain. What would become of him over a stiff fence Heaven only knows! And yet there is among the gandins a rampant Anglomania which, beginning with pale ale, has gone through bulldogs and grooms, and now shows itself in nothing more than in the violent 'hossiness' with which they have all been seized. Racing, betting, and the driving of drags reign pre-eminent in all conversation; and the report of a successful trial of 'Fille de l'Air' is received with as much interest as a rehearsal of the 'Africaine' with the ballet. But 'Le Sport' is as yet but a forced The trainers and the jockeys are English to a man, so, too, are many of the 'horses; and the language of Racine and La Rochefoucauld has been enriched, for want of native terms, with all the stable slang of Newmarket and Yorkshire. What has the Académie Française to say to such substantives as 'un stepper,' or 'un handicappeur,' I should like

to know? The race-meetings, too, wear an air more of pleasure than of business; and 'Le Sport' always contains a detailed description of the ladies' dresses at the Spring meetings in the Bois. Fancy 'Bell's Life' on tulle and striped petticoats! Then the Ring has a dilletante air about it; and it is remarkable that instead of the repeated offers of 'I'll bet against the field— 3 to 1 I'll lay,' the noise here is made up of questions, 'Combien contre Grabuge?" 'Combien contre Thickure?' ('The Cure' so called). Indeed most of those who wish to risk their money do so in 'poules' or sweepstakes; and there is even a company which drives down a smart drag on to the course, unships both ends, and makes of it the office of an 'Agence des Poules,' where any one can buy a ticket for 5f., and take his chance of winning perhaps 3 of., a small way of gambling much to the taste of the Frenchman.

Another feature of the racing is the admiration for steeple-chases, to which the course at La Marche is entirely devoted, with a 'river,' hedges, walls, and other delights wherever gentlemen riders love to disport themselves.

But who is this, so chocolate and trim in her attire, and so covered over with embroidery and tassels? She has a somewhat dark and swarthy, but yet a most pleasant face, with largish, hardy features, such as are, according to the quality of expression the owner can manage to throw into them, either positively repulsive or supremely fascinating. carries a bouquet of roses; she has a smile for every one (nearly), and blesses the more fortunate by pinning a flower in their buttonhole. This is isabelle, the bouquetière of the Jockey Club, the universal toast and the excuse for many an extra bottle of clicquot consumed in her honour. She is irresistible, she is divine, she is the rage; but I discover first, by observation, that her smiles are only for the more solvable part of the company; and secondly, by experience, that her roses cost five francs each. She is reported to be well off, and to have her name

inscribed in the 'grand livre' opposite to a goodly amount of rentes. A rival bouquetière once appeared, smaller and prettier, and altogether more engaging, but Isabelle had a pitched battle with her; weight carried the day, and she has reigned undisputed over the coats of the gandins ever since.

The railways are a sad trial to anybody who believes in the value of time. The booking-office is closed five minutes before the train starts. exactly the interval at which it is generally opened in England. One result of that on the Chemin de fer de l'Ouest, was to keep me waiting an hour for the next train at the Ville d'Avray station, when returning from La Marche. I should have been bored probably, but for the presence of two gendarmes attached to the station, one tall, thin, and desponding, the other short, fat, and sanguine, who quarrelled over the best advice to give to myself, and some other belated travellers.

- 'Messieurs pourraient prendre des voitures,' said the fat one.
- 'Ils n'en arriveraient que plus tard,' said the other.
 - 'Cependant ils vont bon train.'
 - 'Puisque je te dis qu'il n'y en a pas.'
 - 'Mais si-il y en a.'
- 'Fiche-moi donc la paix.' And so the thin one got the best of it, and we all waited, and of course I was late for dinner; my host was in a bad temper, and being so, never offered to produce the 1836 Chateau-Yquem for which alone I had dined with him.

Another remarkable feature of the races, astounding enough to the more experienced of Londoners, who pick out their old dust coats and superannuated bonnets to go down to the Derby, is that they are recognized as the great theatres for the display of the fashions. How perfectly the French word expresses the charm of dress! 'Une fraîche toilette.' Does it not conjure up ideas of a dear little pink and white face peeping out from a wealth of virgin cambric and gossamer tissues unprofaned? True that you and I know it to owe its charms mainly to blanc-de-perle and starch. but what then? We still prefer it to the dusty velvet and unidealized

shawl of our dear tasteless old England. I notice too, for the first time this year, that all Frenchwomen of a certain elegance, were born with auburn hair, which it is whispered argues a world of passion in the possessor; sequins or steel spangles are in favour, too, worn on the head. A tendency to wear bonnets like elaborated handkerchiefs tied round the top of the head, is perhaps attributable to the fact, that the chignon has been promoted so far towards the crown that no room has been left for a back to the bonnet: and the traditions of the first Empire bear fruits (literally) on the heads and sometimes on the breasts of the fair leaders of popular fashionable opinion. Then there are the excentriques, at the head of whom stands the Princesse de Metternich, whom I see driving up like a whirlwind with her yellow postilions. These ladies carry bouquets of roses, and nodding diamonds fixed on the end of long wires, wear birds' nests on their alabaster shoulders, or cover themselves, as her Christian Majesty of Spain has just done, with little dogs. They are all dressed by the genius of Monsieur Worth, a gentleman of Swedish origin, formerly assistant in a well-known West-end haberdasher's, but whom native genius has now raised to be Pontifex Maximus over the rites of dressing. Happy Worth! The lovely Madame de Pomponne, whom to see in striped cotton and highlows would render me sleepless for a fortnight, goes to him dressed within an inch of her life, and with that inch Worth deals in the spirit of an He walks round her, he makes her advance towards him (the dog), and suggests the place of a flower; he seats her in an armchair, and cavils at one fold of the skirt; on a sofa, and condemns another; he considers her from different points of view, and decides whether her shoulders will bear another half a centimètre scooped out behind; he etherealizes her waist and dignifies her train; he has visions; he retires within himself, and throws off hurried and hardy sketches upon paper; and when Madame de Pomponne retires, she is clothed no longer in a dress, but in a poem. And to think that such is Worth's life all day long!

The spirit of the French nation is essentially feminine. Fineness of perception, delicacy of touch, and a belief in ideas are their virtues. The men are even more feminine than the women, and the only reason the Frenchman doesn't dress well is, that he has not manliness to enable him to wear his clothes creditably. Even the finest of gandins dressed, as he generally is, from London by Mr. Poole, is a failure. There is a shocking insincerity in the varied colours of his waistcoat; a want of courage in the length of his coat; an insipidity about his hat; and withal so much effeminacy in his cloth gaiters, and childishness in the floating ends of his necktie, that the admirer of tho manly virtues turns away saddened and sorrowing. For, indeed, the object of male dress should be, not colour and adornment, but a simplicity and frankness such as are proper

'To give the world assurance of a man.'

But how can one expect a human creature to dress properly, whose idea of amusement is a ride to the Bois in a huit-ressorts, who wears a cache-nez in winter, and who washes his face with milk (and no soap) in summer, to preserve his complexion?

The idea of a man amusing himself by working hard, and making himself hot, is unintelligible to the gandin. And yet Paris is not deficient in means for taking manly There is a splendid tennis-court in the Champs Elysées, but it is supported almost entirely by the English Embassy and visitors. There is Triat's gymnasium too, a perfect wilderness of scientific ropes, poles, bars, and trapèzes; but the frequenters of the place are nine out of ten, men who have been ordered course of gymnastics by the doctor—the exception being Englishmen, who alone think of doing such things for pleasure. Poor Alphonse has used himself up in precocious debauches, of various descriptions,

much too soon to have that superabundant energy that takes pleasure in feats of strength and courage; and he looks with wonder on the savage Islander who delights in the daily hard work of the gymnase, and loves to risk his neck in the 'saut perilleux,' merely for pleasure of conquering a difficulty. I am afraid that the whole course of Alphonse's life, with its early scenes of heartless intrigue, its feverish craving for ever fresh excitement, its prodigality and luxury, and its after scenes of costly and fictitious passions, mercenary cocottes, ruinous baccarat, and an old age beginning at thirty, lonely and unloved —I say I fear all this is not very wholesome. Not perhaps so wholesome even as our own duller prosaic tea-drinking life in England. It is the old inevitable law—'Ce n'est pas tous les jours fête et le lendemain dimanche.

A sad sight that of the Morgue! There on the stone slab lay the swollen body of a young man, with the long curling fair hair and blonde moustache matted and clogged with the mud of the Seine, the eyes closed, the mouth clenched together as with the last resolute look into the water, the long white arms lying straight and stiff by his side. There was a helpless, pitiful look in those arms, that struck me to the heart; they seemed silently to appeal to the crowd as it came and went, for the loved one who once had felt their embrace. People of all sorts passed in and out careless. but it remained there mute and appealing. He had been in life what is called a gentleman, his clothes hanging over his head showed that, so did his hands and feet, small and delicate. was, helpless, and no one knew him. Suddenly I heard a scream; a lady had fainted. She was young, beautiful, had come alone, and on entering, had fallen senseless before the glass. The officials came and took her into another room quietly, for they were used to such scenes. Poor girl! It was the often-told. but ever-new story. She loved him; he loved her not. He had ruined himself for one who was not

worthy so much as to wipe the dust from her shoes. He had played, had lost, and had cut short all further history by this desperate remedy.

Such is Parisian life! alternating, as my thoughts do, between deep agonizing tragedy and sidesplitting comedy. Let us change

the scene.

The broad difference I find between the theatres in London and in Paris is this: that in Paris I go to be amused by the actors, in London to amuse myself with them. Naturally there are bad pieces in Paris: 'La Biche au bois,' for instance, relies as much upon scenery, and as little upon the author, as the pantomime at Drury Lane, and dresses have diminished covering-power and increased in ornamentation to an extent even beyond the example of Astley's Mazeppa. But it is a pregnant and sufficient illustration of the general difference of principle upon which things theatrical are conducted in the two capitals, to say that all the more important carpentering and machinery for the unparalleled effects are procured by the Parisian managers from London, while for authors and pieces the London manager has to send to Paris. proud it should make us to think that we excel in carpentering!

But come with me to the Gymnase, and the doubt you have brought from home, whether men of intellect ever do write plays, or actors of intelligence play them, shall be resolved. Victorien Sardoa has written 'Les Vieux Garçons,' and the gentlemen and ladies whose habits and speech he so faithfully presents are played by Lafont, and Dela-Lesueur, Clairmont, porte, like ladies and gentlemen, and not like the flippant counterjumpers and dressed-up ladiesmaids, who figure for such in England. They can even sit and talk sparkling dialogue through a whole scene without ever a blunderbuss being fired, or even a funny groom being introduced into the drawing-room (in boots and corduroys) to keep up the flagging interest of the audience; and Lafont no more strains to 'make points,' than you and I do when we are saying our clever things to be agreeable in polite society. The main plot consists simply of a bachelor being crossed in his unprincipled attempts at intrigue, partly by the innocence of one of his intended victims, and partly by the discovery that his more honourable rival is his own son; but the different phases through which the action passes are so strong in touching situations, the treatment of the whole so delicate, and the acting of Lafont and Mademoiselle Delaporte, especially in the scene in which she meets his libertine insolence with her naïveté and ignorance of evil, so full of fine touches and artistic feeling, that to the London playgoer it comes like a new sensation.

Then there is 'La Belle Hélène,' an Opéra-bouffe, which has already become classical; whence it must be supposed that there are still to be found (in Paris at least), audiences who prefer a cleverly-constructed and well-written piece, with original music, even to a burlesque overlaid with the most aged and respectable collection of puns, and fitted with the most hacknied and vulgar airs of the music-halls. Is there no English Offenbach? Have we not, too, a Meilhac and a Halévy? Surely Mr. Burnand and Mr. Frederic Clay might take our destitute case into their consideration—if it were only to relieve us from the necessity of serving an apprenticeship at the Canterbury Hall and the Christy Minstrels, in order to appreciate the songs of 'Ixion.' When, the morning after going to the Variétés, one finds the 'Ronde des Rois,' and the 'Jugement de Pâris' running in one's head (as all Offenbach's airs do), one is not humiliated by finding that they are songs of six months ago to all the butcher-boys of the town, who by that time have some other favourite air, which in six months more one will hear in some other burlesque. And Madame Schneider, too, has such unexpected touches of comic acting, taking one, as it were, by assault of impudence; and though she labours under the imputation.

of being tant soit peu canaille, plays her somewhat hazardous scenes with Paris with such abandon and such irresistible entrain (I wish I could find two English words to express myself with), that there is not a man in the house who does not wish that he himself were the 'berger naif.' The characters are all strongly marked, from the grasping Calchas, great augur of Jupiter, who complains that there are 'too many flowers' among the offerings of the people, to Ajax Premier, whose ill-timed remarks are ever the occasion of his being sat upon' by all the other personages of the piece. And though there is no ballet, blue fire, or transformation-scene, not only does one see the piece with delight, and remember it with pleasure, but one can even read it alone in one's room with enjoyment. Try to do that with a British burlesque, and mark the consequence.

The most really moral piece (under the most apparently immoral form) I have seen this year in Paris, is the 'Jocrisses de l'Amour,' at the Palais Royal; for it shows vice to be ridiculous, and so fastens upon it a shame it never feels from being only shown to be odious. And to all those fast young men who are so foolish as to despise the old respectable ways of their own society, for the blandishments of the demimonde, I would recommend the attentive study of a piece which will show them what dupes they are made: but if they learn wisdom from it I shall be astonished. Even more popular than all these, is Mademoiselle Thérésa, a singer at the Alcazar café chantant. Why there is such a rage for her I could never imagine, except it be that she has a voice like a coachman, hands like a porter, and features certainly not remarkable for beauty. But she is eminently Parisian—began life by singing about the Boulevarts for a chance sou; has a good heart: and so the Parisians adore her, name cigarette-papers after her, and read her 'Mémoires,' which, after the present fashion of great minds, she has written herself, in order to take the bread out of the mouth of the pro-

fessional biographer, who only embalms his subject when it is dead. Not only that, but she has been made a play of—twice; and offering, as she does, very salient points for imitation, was probably 'well put upon the stage.' Finally, the grand monde has taken her up, and has her to its soirées to sing the 'Sapeur' and the 'Gardeuse d'Ours,' at the rate of 1000 francs each: and that extraordinary society, the Jockey Club, was supposed to have invented the most graceful tribute of praise, when they invited her to sing during one of their gambling orgies, and at the end presented her with all the winnings; by which ingenious device the losers took their revenge, and Thérésa was adequately gratified. But how pleased the winners must have been, who paid for all!

'L'Africaine' is a success, in spite of the third act, and Don Pedro's real gun-brig of the period, which will neither wear nor stay, and takes three quarters of an hour to get under weigh. But the fourth act contains the gem of the opera a lovely duet between Vasco da Gama and Sélika (admirably sung by Naudin and Marie Saxe), and proves, besides, that the dusky Queen of Madagascar had adopted free-trade, at any rate, in balletdancers, a troupe of which, pink and white and lovely, and in remparts de gaze, execute a ballet as unmistakeably imported from Paris as the fair creatures who dance it. Vasco di Gama must have been struck by it; and Mr. Darwin is strengthened in his views as to the 'common origin' theory as applied to dancing. The fatal Mancenillier, or Upas-tree of the fifth act, bears fruit, too, in the death of Sélika; and the ritournelle there sung is said to be one of the very finest efforts of Meyerbeer's genius.

'C'est de l'ancienne histoire,' says the reader. True; but now let me whisper an historic doubt or two whether, for instance, some of the cutting in the third act (for it has been cut, although the opera lasts five hours) would not have been more judiciously done by the great master himself than by M. Fétis.

Whether some of the more brutal part of the audience do not go away, on the whole, with the impression that they have experienced a somewhat laborious pleasure; and, finally, whether there is not here and there, among the more bilious critics, the shadow of a reaction against the vast enthusiasm with which the great work has been surrounded—but these must be those who cannot understand it. All I can say for myself is, that if we can get Mr. Gye to give it us in London, I shall be there for the first note of the overture, and shall go out and dine at Epitaux's during the evolutions of the gun-brig, to return in a proper frame of mind for the fourth and fifth acts.

We dine later in London than in Paris. In fact, I think we do everything later, which I attribute to the fact that we came later into society than the Parisians. We were dining at two and three o'clock in the afternoon, at the period when they were having their petits soupers under the Régence, ending at two or three o'clock in the morning; and we have both gradually got later since, through the influence of the unpunctual people who always go to everything half an hour behind the fixed time; the effect of which is, that, while we have only brought our dinner-hour down to eight o'clock in the evening, they have got through the night, and brought theirs down to six o'clock the next day. People come in in the evening' at eight o'clock in Paris, or go to the Comédie Française at seven without an effort; while in London, to get to Covent Garden for more than the last act of any opera, not only makes dining out impossible, but upsets the life of the whole day, by pushing every operation, from lunch to dressing, back a couple of hours.

Parisians complain of the distances in London. I can only attribute that to the inexplicable mania they have for seeing such things as the Thames Tunnel and the London Docks. Practically, the distances in Paris are much greater; for as everybody, in every city, lives within a certain area, the question

resolves itself into that of the size of the area. My experience is, that eighteenpence and twenty minutes will take me to any place I ever want to go to in London; for of course I have never seen the Thames Tunnel—heaven preserve me from it! and Prince's Gate is the farthest point I ever reach—and never even that under an invitation to dinner: But in Paris, I find that the Bois is always three miles one way from me, and the Gymnase three miles another. Above all, the hansom that one redeeming feature of the nineteenth century—does not exist there; and the system of payment of the fiacre is so ingenious, that it is to the interest of the driver to make the 'course' last as long as possible, in order to get his extra 25 centimes—a fact which, no doubt, lies at the bottom of most of the irreligion, and all of the bad language of Young France; and, in fact, it is very difficult to keep within the bounds of parliamentary speech with the cochers, who have no vestige of respect for the superior classes, for the simple reason that no French class believes in the existence of a superior to itself; and it is instructive to notice the difference of the form in which the cabman and the cocher show their discontent with what they consider 'inadequate remuneration. cher simply grumbles as man to man, and reasons thus:

'Ah ça! Mais il me faut encore dix sous.

'Pourquoi?'

'La course était longue.'

The passenger hints that it is exactly the length of the journey, and the slow rate of travelling, that he objects to.

On ne peut pas éventrer son moins de temps.'

But the final argument of the British cabby, although he sometimes begins in a strain of fine sarcasm, by asking, 'Here! wot d'ye call this 'ere?'—or by disdainfully remarking that 'A shillin' ain't no good to me!'—is always this, 'Do you call yourself a gentleman?'

And if you could but convince him that you not only called yourself a gentleman, but were a marquis, he would go off contented with sixpence less than his fare; not, however, having the Peerage with you, you either pamper him with another shilling, or else go away crushed down into the class of snobs, whom he despises infinitely more than you do yourself.

Altogether, that which strikes an Englishman, is the strong republican tone of feeling which runs through all French society, and which has not only kept all its vitality under the Imperial form of government, but has given a novel and sometimes almost a comic turn—to the form of government itself.

At the root of all lies that unflinching logic of the French mind that reasons on everything, questions everything, and, being never satisfied with anything, has in it the seeds of perpetual change of all Well, we stupid Islanders are very different with all our patched-up old institutions and monstrous 'anomalies;' but when I think over the woes, and the sin and suffering through which this lovely land of France has gone, in its single-minded and noble yearning after Reason and Truth, and then turn and see our own sleepy and pig-headed happiness, I come back to London with something like a feeling of thankfulness that the cheval. Allez-vous-en la faire en English are not a reasonable people.



VIENNA SOCIETY.

IN the following pages, we pro-**L** pose to lead our readers into the inner life of a town seldom trodden by the English tourist—in winter; at least, the season when society, as in most continental towns, is at its height. The rich city merchant who determines to give himself and his family a three-months' holiday in the winter time, or the retired country tradesman, may be met with at every corner in Rome or Naples. Those bent upon society, find the Napoleonist saloons, and even those of the 'Faubourg St. Germain' in Paris, easier of access than the exclusive circles of Vienna. No foreigner, except of known character and rank, or well recommended by his ambassador, can hope to gain admittance into the 'Haute Volée.' Amongst themselves, the strictest rules prevail. No one who has not sixteen perfect quarterings is admitted. Perhaps it will be as well to explain the system of 'sixteen quarterings' now. It is generally admitted that each person has a father and a mother two parents, exceptions only prove a rule, Macduff and Minerva are the only ones we remember at this moment;—this degree constitutes two quarterings; that is, the son or daughter quarter their (the parents') arms on his or her shield; well, each of these had a father and mother, therefore the original individual has two grandfathers and grandmothers — four quarterings. This is bringing the explanation to the level of the lowest capacity. Therefore each of these has two parents, eight ancestors in third generation, and sixteen in the fourth. Now, each single individual of these sixteen must have borne arms—that is, must have had no connection whatever with trade, must have belonged to the gentry, in fact. Any flaw in any part of the chain destroys the whole of the quarterings. Jews are, on this accoult, never seen in the best houses of Vinna. The branch of the Rothschild family living here, though holding a fair and honourable

position, is never admitted into Having explained the groundwork of our theme, we shall now conduct our readers some eight hundred miles from 'London Society' (with which they are already acquainted), into the heart of the capital of the Austrian em-

pire.

The first object of an Englishman, on entering a foreign town, is always to find out the best hotel. The two rivals in Vienna are the Erz-Carl, vulgo, Archduke herzog Charles, and the Munsch, known in Congress days as 'the White Swan.' They stand on exactly opposite sides of the narrow and busy 'Kärnthner Strasse;' the former, however, possesses the advantage of not forming a thoroughfare like the Munsch. In Vienna, namely, the visitor will constantly observe passages leading under archways into the court of a house or houses, and then break out again; these are termed 'voluntary passages,' or, in the harsh Teutonic, 'Freiwillige Durchgänge.' Whether this name arises from every one being at liberty to pass, or that there is no strict right of way, and that the passage is granted by the proprietors (like the passage at the bottom of 'Hay between Devonshire Lansdowne Houses, which is shut one day in every year, on the 1st of September, we believe), we are unable to state; however that may be, they are all closed at ten P.M. Having selected one of these hotels, or one of the many others, the traveller will most likely begin to look about him, unless he finds snow of three feet in depth a drawback. ever, as our object is rather to lead him into society, we will say nothing about the town at present, excepting as its description tallies with our project. As we have said before, the unaided Englishman, even of the best family, will find it very difficult—nay, almost impossible to gain admittance into the charmed circle, unless he have some previously-made acquaintances therein, or be furnished with letters of intro-

duction; however, having burst the barrier, his progress will be rapid, for nothing can be more cordial than the behaviour of the Austrians and Hungarians to a foreigner; indeed, it has been said that to know one Hungarian was to know the whole nation. Last season was unfortunately a rather dull one, as the gloom of death hung over the court and many noble houses. Emperor's uncle died in December, and the Esterhazy, the first Hungarian house in Vienna, had experienced the loss of a sister and aunt. The season here, where the natives do not care about broiling themselves half dead as in England, begins properly on, or the day after Twelfth-day, the 6th of January, and lasts, with the exception of Fridays in each week, when dancing is prohibited, till midnight on Shrove Tuesday, when everything ceases. This period is called the 'Fasching;' its length, therefore, always varies with the date of Easter Sunday. this be early, the season begins again in a modified manner afterwards, but the 'season' proper only lasts during Carnival—a term, of course, derived from farewell to meat,' that being, theoretically, prohibited during Lent. We must begin with the highest pinnacle of society, the Court. No foreigner has any chance of ever seeing a 'Kammer Ball, since foreign ambassadors, though representing their sovereigns' persons, are excluded; only those nobles who 'enjoy the Emperor's confidence' are invited, and the families of military personages attached to the court, with the dignitaries of State, if possessed of sixteen quarterings. We believe Schmerling, the first lord of the treasury, to be excluded on this account, but will not sign an affidavit on the subject. The papal nuncio, however, is admitted; and as, from his position as Roman Catholic ecclesiastic, he may not even look on dancing, the privilege, no doubt, affords him great gratification. The Bavarian minister, who represents the head of the empress's family, has also the entrée. Foreigners are, however, admitted to the 'Court' balls, properly so

The 'R. & I. Redouten called. Saal' in the palace, where these balls are given, is a most magnificent room, about four times the size of the Throne-room in St. James' Palace, and it is always most brilliantly illuminated, on these and similar occasions, with wax candles. A balcony runs right round the room, at about half its height, from whence those who do not dance may see all the fun. An annual ball is held here, by permission of the Emperor, of a curiously characteristic nature, called the 'Bürger Ball,' or 'citizen's ball.' In Vienna all classes, trades, and occupations form themselves into 'Vercine,' answering in some respects to our guilds, excepting that we have no theatrical or 'fourth-estate' guild, whereas here there are such. All these different associations give one ball during the carnival; but only the Bürger and Industrial Society's balls are given in the palace. At the former all the wealthy citizens, who never are admitted into society, have the privilege of gazing at the empress, whose radiant beauty even surpasses that of her sister, the queen of Naples. The imperial party always visit the ball-room, and sit for an hour or so in the royal box on the The 'Industriellen Ball' balcony. is given by a committee of the artistic manufacturers. Tickets are obtained to these balls, on payment, by sending in your card to the committee. Here actresses and authors. telegraph clerks and merchants' daughters jostle each other in gay confusion. We observed 'Couqui,' the prima ballerina of the opera, surrounded by a legion of admirers, all with more or less stars on their breasts, walking along on the arm of the admirer with most decorations, whilst a rich old banker, H——, followed her steps, looking something like an ugly lapdog with its hair dyed, carrying her shawl and fan. The dancing is carried on to the inspiriting strains of Strauss' band. It struck us once, as a remarkable fact, that this band was always advertised to play at least in three different places on the same night, and always under the personal superintendence of

Strauss. If asked on this point, he (Strauss) might have objected, like the Irish M.P., that 'I can't be in two places at once—like a bird!' However, there are now three brothers—John, Edward, and Joseph, though only the two last lead; and these two were always advertised together. To see the elder of these two lead is really a sight refreshing to behold. His whole frame regularly keeps time to the music; far different from the unimpassioned demeanour of the estimable C. Coote, senior, whose band, for dancing purposes, is perhaps as good. During the waltzes and other fast dances, the ladies all stand together in a wide circle round the room, and the gentlemen form an inner circle about three yards off. When the music strikes up, the first gentleman walks across this space to his partner, and then dances round between the ladies and gentlemen, cach successive couple going off in same manner immediately: when they have completed one they are stopped by the M. C. Thus no dancers pass each other, and order is preserved in a manner which would astonish the crowded confusion of a London ball-room, where the area of a child's hoop is considered quite space enough to dance in. In the cotillon, which was danced at the middle of the ball, and not at the end, as in England, only one figure was danced, which consisted of all the ladies—there might have been 500—joining hands, and the gentlemen ditto. Then the ladies were led through the circle of gentlemen, in rows; and at the end, the scramble for partners was amusing to behold from the gallery. The supper-room is not good—a low, mean-looking place, where you sit down and pay for what you take. There is another smaller ball-room adjoining this one called the small 'Redouten Saal,' in which are given 'Gesellschafts Bälle,' or Society-balls, every fortnight. They are also termed 'Pick-nic' balls; on what principle it is difficult to make out, unless it be that balls are given by night, and pic-nics by day. ('Lucus,' &c.) These answer in some degree

to our almost forgotten Almack's, tickets being obtainable through lady patronesses only. The proceeds are devoted to a charitable purpose. The society of these balls is very good, the military element preponderating greatly amongst the gentlemen, as, indeed, it does on most public occasions in Vienna. variety of uniforms, however, gives a gay appearance to the ball-room. very unlike that of a London ballroom, where the gentlemen all give a foreigner the idea of being undertakers in a new line of business, and turned butlers. At the 'pic-nics' the dancers are not restricted to a line, but the room is never overcrowded. Prince Auersperg gave a ball in his large house, outside the inner town, to which the Court came and stayed about two hours. A magnificent marble flight of steps leads up to the drawing-rooms here. One of the rooms formed a large conservatory, which, though doubtless charming in summer, was much too cold to be entered in January. One of the many excellent military bands played the music. Polkas and Mazurkas are very favourite dances; but the Lancers are hardly ever heard of. The masked balls form a most prominent feature in the entertainments of Vienna. One Sunday we counted twenty-three balls advertised in one paper for that evening! To these, however, ladies never go, the female element being largely supplied out of the société equivoque of Vienna. Many elegant masks are to be seen at these balls; however, the 'Debardeur' element predominates largely; and higher flights of fancy were seldom attained, for fear of verging into the political, which is strictly prohibited. No gentlemen mask; and only some four or five men, who were paid to appear as pierrots, enlivened the rooms with facetiousness, consisting chiefly in hitting each other on the head with flexible wands that they all carry. The balls at the 'Teater an der Wien,' that took place every Wednesday, were the The pit and stalls were boarded over, and the stage turned into a room, the bands being placed in the gallery. Twice a week

large masked balls were given at the Diana and Sophien Bäder baths in summer, ball-rooms in winter—really magnificent rooms; we have nothing to compare to them, as ball-rooms, in London. In the latter, Strauss and a military band played alternately, leaving hardly any pause between the pieces. It was the Strauss brothers' custom to produce a new waltz at every guild ball, with an appropriate name. So, at the 'Bürger Ball,' 'Bürger Sinn' was produced. At all these places smoking was supposed to be prohibited, but was nevertheless indulged in, as on English railways. 'Sperl' and 'Schwender's Colosseum' were two other ball-rooms of a lower order, both with two separate dancing-rooms, and both magnificent in their proportions. of these establishments held three balls each week. The latter answers, in summer, to our Cremorne, and is about the same distance from Vienna as that from the West End. midnight, masks were generally laid aside; and the general beauty then visible was certainly only second to London loveliness, and far above that of any other European capital, though we cannot speak of that of St. Petersburg, not having seen it. To conclude our list of dancing establishments indulged in by Vienna society, we must mention those of the dancingmasters. Each of these, about six, gave small soirées about twice a week, not excluding Fridays, to which it was not unusual for the 'best young men' to go.

The hours of dining are much earlier than in England. We consider ourselves lucky if we sit down by nine o'clock; but in Vienna halfpast five is the latest ever achieved in private society. The system of tables d'hôte does not obtain here, and therefore those not invited to a private dinner have to partake of that meal unsociably by themselves, unless, as is more usual, several friends agree to dine together at whatever hotel they may choose; as is almost always the case abroad, the gentlemen leave the table with the ladies, and the conversation is never prolonged, as they all hurry

off to the Opera or theatres, which The opera is albegin at seven. ways sung in German during the season, and is not generally blest with any first-rate singers, though Herr Wachtel, of the high chest, and Fraülein Ilma von Murska, who has appeared in London this season, sang, and very beautifully. The ballets, however, which are given twice a week, and often varied, are charming, chiefly owing to the delightful dancing of Couqui, who seems, on the stage, the very incarnation of grace. Perhaps Ferraris and Mouravieff danced as well, but Couqui is a worthy competitor to either of them. Herr Frappart, also, was always excellent in comic They occupy the whole evening; about ten different ones were given during the course of last season, one being entitled, 'The Chimney Sweeps of London!' in which all the sweeps were dresscoats with yellow facings; another was founded on 'Monte Christo,' but, unlike the play taken from the same celebrated novel, which was so long as to take two nights to act, was over at half-past nine, the usual time for the close of the various performances. The 'Carl Theater' is the amusing theatre of Vienna, nothing but light vaudevilles, farces, and operettas being given. La belle Hélène, of Offenbach was produced here almost contemporaneously with The audience part of this theatre is a perfect half-circle, and the dress circle is more fashionable than the stalls. Most of the theatres have, however, an institution they call the 'Fremdenloge,' or foreigners' box, into which they admit any one to a separate seat, at a slightly higher rate than to the stalls. At the latter end of the season a French company made its appearance at the 'Wien,' but the attendance there was the reverse of encouraging.

The majority of the educated classes speak English, but they will always talk German to you if they perceive that you prefer exercising yourself in that language; unlike a Frenchman who, if he does happen to know ten words of English—a rare achievement—insists on making

himself unintelligible to you in it for the rest of the evening.

After the theatres, the men generally go off to the club, here called, rather bumptiously, 'Das adeligo Casino,' or aristocratic club; it is, however, an extremely select one, the election being by ballot, and admittance can only be gained by a foreigner through the intervention of his ambassador, or, as was the case when we were in Vienna, Lord Bloomfield being absent, that of the Chargé d'Affaires, who at that time was Mr. Bonar, a fine specimen of an English gentleman. The rooms are large and lofty, and fitted up in the English style, with solid chairs covered with leather, &c.; a large billiard and card room takes up nearly half the first floor of the palace (we forget its name), in The billiardwhich it is situated. tables are the French ones, without pockets; the chief game being the simple cannoning one. Here a good dinner may be obtained from four to seven. Smoking is allowed in all the rooms except the readingroom, which, indeed, is one of the smallest, the social German not caring very much for literature when here. After having met their friends here, the gentlemen generally go off to the parties that may The be held on that evening. foreign minister, Count Mensdorff Pouilly, held receptions Friday, where all the society might be met with, the lady of the house receiving at her drawing-room door as in England. The beauty of the higher orders is not to be compared with that of the lower classes in Vienna, as regards the gentler sex. In walking through the town, the stranger cannot help being struck every moment by the beauty of the women. As regards the men, the features of the higher classes are cast in a greatly superior mould. The fashionable walk and drive of the Viennese, answering to Hyde Park, is the famous Prater; at Madrid the same institution is called 'El Prado.' In the depth of winter this looks very cold and bleak, with snow lying all round about three feet deep, the trees all leafless. It consists of a large wood, extending from

about a mile outside the town down to the larger branch of the Danube. with one straight road, the fashionable drive and walk, cut through it. It is, however, by no means too thickly planted with trees, and must be very lovely in summer; numerous coffee-houses were scattered up and down by the sides of the road, but all shut up. Here many sledges were seen, but they are hardly ever used in the town itself, though we saw one man driving a sledge, standing up and holding on by the reins! One of the dictates of fashion here is, that you must never be seen sitting in a one-horse fly; this is infra dig. It might sound arbitrary and dictatorial to a London car, where our highest ambition is 'hansom;' but in Vienna the two-horse cabs rather, if anything, preponderate over the one-horse vehicles. The pace they drive at is terrific, and there was always one old woman, at least, driven over daily, in the papers. The omnibuses look like relics out of the good old times, so mediæval are they in appearance, though perfectly modern, in fact: they have a sort of double $coup\acute{e}$ in front and a section of omnibus behind, with one or two seats by the driver. The cabbies of Vienna sustain the reputation of their kind for mother-wit, but unlike (?) their London 'co-drivers,' they are not invariably civil. The principal tailor, Gunkel, only deals in English cloth, and makes his garments after the last approved Poole patterns, charging, however, Vienna prices, that is, if we suppose them to be considerably more than those of London. Skating is a very frequent amusement before the snow falls, and the piece of water in the 'Volk's Garten' was always crowded after midday; more adventurous spirits find fine sheets of ice for their purpose in the Prater. The zoological gardens are also situated in this Prater, but the social Sunday gatherings have not come into fashion. at least in winter. In the 'Volk's Garten,' Strauss gives a concert every Sunday and holiday during Carnival, in a sort of hybrid establishment, half hothouse, half restaurant, where the approved, and,

indeed, only obtainable refreshment is 'melange,' a villanous compound of, apparently, coffee, sugar, milk, and yolk of egg. One fine afternoon whilst we were there, the only waiter for about three hundred people, upset a tray of about a dozen melanges' over the back of an un-We must not offending auditor. forget one of the most important institutions of the capital of Austria, 'Café Daum:' here generals and subalterns, members of the Reichsrath of every party, actors and authors, young diplomats, government clerks of every description come together to take their punch, beer, or coffee after the theatre; or rather each set has its own hours for meeting, its own tables and circle. The game of billiards goes on in another room, whose atmosphere resembles that of an aggravated London fog, though of better odour. Every class, from the duke to the cabman, who hastily imbibes his coffee in one of the small adjoining rooms, is to be met with here. It used to be the custom for all Austrians to 'look in' at 'Daum's' before going home, however late they might have been staying at a ball or anywhere else; they were always sure of finding some one they knew, and of hearing something neat, as, whenever anybody hears an authentic or unauthentic piece of news, his first idea is to run off to Daum's and retail Reputations are made and marred in this exteriorly humblelooking place; every secret is 'let out' here; this is the duck-pond from whence rise all Vienna ca-By the way, we suppose that 'shooting folly flying' is an euphemism for 'bringing down a canard.' However, these pages are not 'Notes and Queries,' and we resume; the seconds in any duel consult together in a corner, and the result is first noised about here. Indeed, the 'Café Daum' is the lion's mouth of Vienna. Some of our facts about this locality we gather from a novel, entitled 'Die Theaterprinzessin, by Frederick Uhl, a Viennese writer, who has certainly succeeded in this work. 10 P.M. is the time when Daum is

most crowded: then all the different and often conflicting opinions on the last new singer, or the newlyarrived tragedian have fair play, and the verdict of success or failure is passed. Ladies seldom enter the doors of Daum. The 'Times' is taken in for the benefit of any stray Englishman, who, however, will find himself, if alone, rather out of his The noise occasioned by element. about fifty people, all talking at the same time with vivacity, at different tables, must, we should think, be even louder than that to be heard within the 'ladies' parliament,' The conwhenever that meets. firmed playgoer, on entering and taking his seat at the table of his 'set,' always answers the question immediately put to him about the performance, by talking of 'our theatre.' Supposing the acting of a particular comedian to be in debate, he will say something in this way, 'Oh! Knaak' (of the Carl theatre, e.g.) 'was delightful this evening. He gave a perfectly new colouring to the sixteenth repartee in the eighth scene of the second act.' However, we think we have lingered quite long enough within the precincts of 'Daum,' whose amiable proprietor walks from one table to the other, looking after his guests, and sometimes sitting down at one of their circles; so to conclude our disgracefully long paper, we should recommend all those having a regard for their pockets not to adventure into the 'Graben,' the widest and best-stocked-withshops street in Vienna, for if they do they will certainly be tempted to enter one of the many 'splendid emporiums, as our American stepbrothers say; if so they will not be able to tear themselves away without buying more of the lovely little knicknacks than they can possibly want. Klein's shop is one of the most tempting of these. The Vienna taste in small articles for presents or the writing-table and boudoir is exquisite. He must be a strongminded individual who can resist these manifold temptations. But now we must take leave of Vienna and of our readers.

'FAITHFUL AND TRUE.'

A Tale in Three Parts.

By the Author of 'Grasp your Nettle.'

PART I.

T was an ideal day for a pic-nic; I warm but not sultry, bright but not glaring, breezy and not windy; the very day of all the three hundred and sixty-five for the prize fête of the season. Charley Dunn said that he had 'ordered it expressly for the occasion, having spoken to his friend the clerk of the weather up there; an announcement which was received, as it always is, with a burst of laughter that very foolish announcement as if something witty had been said. But then Charley Dunn was privileged; a 'chartered libertine' he used to call himself, spreading out his arms for butterfly wings; and it was one of the canons of the society in which he lived to believe in his wit, and accept his sayings as of the finest quality of humour. He was, in fact, the crowned Punch of the Brough-Bridge community; though, to do him justice, his bâton was made only of pasteboard and hurt no one's knuckles; and as he wore his pinchbeck gracefully, and gave himself no airs of sovereignty, society felt no special call to drop the tinsel into the smelting pot for the purpose of testing the residuum of gold at the bottom. So that when he talked nonsense about the weather to-day, and laid himself out to do his part of the general entertainment with more than ordinary energy, every one was open-mouthed with anticipation, and perfectly sure that the sunshine and Charley Dunn could 'beat even fate and the enemy,' whatever that might mean.

They made a pleasant party on the whole, though there was the usual admixture of the 'doubtful element'—the old maids, starched matrons, and stiff-backed 'propriety men,' who have always to be asked on such occasions, and who are always so frightfully sure to come. There was, first, the little group of confessed aristocrats, the first-class people of the place, headed by old Lady Scratchley, third cousin to a duke in her own right, and widow of a ruined baronet, but who might have been own sister to the queen, and the deposed occupant of a principality, for the amount of condescension and fallen grandeur that she displayed; and by her side, as polite and courtly as though she were a lady of the bedchamber doing homage to a sovereign (this was to show the second class what court manners and the aristocracy were like), was Miss Le Jeune, of the good old county family—a little decayed now unhappily, and no longer possessing the original seat. She was a lady of a certain age, with a high nose, thin lips, and straight eyebrows, who laid immeasurable stress on blood and had a lofty contempt for 'mere money' —money got by trade being her With her was especial aversion. tall and slender auburn-haired Miss Turnbull, her niece, 'whose father was unfortunately only a younger son, but a man of family and quite thoroughbred: that meaning, translated into the vernacular, 'as poor as a rat, and too proud and lazy to work.' Wherefore, on the strength of her gentlehood, Annie Turnbull went about the world with her head tossed up to the clouds; though, to be sure, the blue forget-me-nots in her bonnet were of the 'poorest style of artificial flower known,' as Lady Scratchley's confidential maid remarked, just a trifle disdainfully. But then she had good blood in her veins, which every one has not, and so had a right to toss up her head, and look for a Prince Florimel at the very least. Also, in the same group stood Miss Grandville, a deceased dean's daughter, who talked ecclesiastical architecture, and took it as a personal affront if any one expressed Low Church opinions in her presence—a handsome young woman, but stiff and reserved. fraternising only with the Le Jeune, and even that not too cordially. The flowery-wigged old lady was too light-minded for her, and exacted too much subserviency; and Miss Grandville felt it due to herself, as the representative of the occlesiastical power, to stand on her rights, and rather demand respect from the secular power than pay For which reason she and my Lady Scratchley were generally at arms' length, and hated one another heartily.

The gentlemen flanking this little coterie were Admiral Price, a monkey-faced old sailor with not too many brains; Whiting Fox, the retired diplomatist, and his son, young Mr. Whiting Fox, down from the Home Office on his leave; Colonel Badger and Captain Turbotte: all of them, save the young Home Office Adonis, elderly, unmarried (bachelors or widowers), and ineligible. Close to this small knot of exclusives stood the three Miss Globbs and their four brothers; a tall, large-limbed, well-developed family, with loud voices, a clear enunciation, and decided leanings to muscular side of Christian They were more than a living. little fast, these young people; but good-hearted enough, and with no very dangerous propensities; still, there the taint was; and though they were general favourites, it was under protest, and 'what a pity it is' always added to their names. But as no one could deny their goodnature, or the inherent innocency of their natures, they came at last to be as well known for 'chartered libertinism' as Charley Dunn himself, and with as complete immunity from untoward consequences. always had a long following of penniless cornets and young collegians not yet come to their estates, and not likely to do so; charming men, but not of the marrying order; and party givers who knew them took care to leave a tolerable margin for contingencies: so that, when they came to-day, accompanied by

four or five 'useful men,' it was only what was expected, and no one was surprised.

Then there was Miss Moss, the oriental-looking belle of Cheltenham for a season, to whom tradition and ill-natured gossip assigned an earlier patronymic than that which she bore now, and her brother, young Abraham Moss, if anything more decidedly oriental than herself: and these two young people were the cleverest and most entertaining of the company. And there were the two Miss Hawtreys from London, who played and sang themselves into society everywhere, but whose parents and kinsfolk were mythical and of quite unknown condition: and pretty, affected, sentimental Mary Dowthwaite; and bluff Margaret Wood—her friends called her Maggie, and a few Maggie Lauder—who spoke her mind to every one, and did not in the least care whose toes she trod on. were several more; young men of varying fortunes and very varying features; young ladies of less distinctly-marked individuality—some strangers whom no one of the old set knew, and who did not know each other: and then there were the staid married couples of a certain age to give a sanction and consistency to the whole.

'Must have veal pies and legs of lamb before we come to the sweets!' said Charley Dunn in an apologetic kind of way, defending his administration to the young ladies. And among them were Mr. Samuel Harmer Hunter, the giver of the pic-nic, standing near to Mr. and Mrs. St. John, little Georgie Fenton's half-sister and her husband. And then there was little Georgie herself, and papa's private secretary, young Mr. Roger Lewin.

Mrs. St. John, a black-eyed, sharp-faced little woman, was many years older than little Georgie; old enough indeed, to have been her mother, though she would have been very much disgusted had any one said so in her hearing, being of those who are jealous of the revelations of time, and who insist on juvenility to the last day of their lives. And being so much

older, it was but natural that she should exercise a maternal kind of control over her young sister, whose mother had died when the little one was born, poor thing! though, as Georgie used to say with tears in her pretty eyes, and some show of reason, 'she need not be always so cross, and treat me so like a naughty child. I am nineteen now, and surely ought to know how to behave!

Which was in reference chiefly to Mrs. St. John's expression of grave displeasure—excited even to that point of wrath which culminated in boxing her young sister's ears—when she found her in the great drawingroom playing chess alone with Mr. Roger Lewin, 'only a private secretary' if you will, but a dangerous young man enough in the eyes of an elder sister careful about settlements, and inimical to portionless love.

Mrs. St. John had no very strict acquaintance with love in any of its aspects, being one of the hard sort, as her maid used to say, with no sympathies or affections that had not a substantial bearing. She was an energetic little busybody who must interfere in every one's concerns, but never to good or kindliness; a conceited, sharp-tempered, restless, and essentially vulgar woman—her very manners, indeed, being not of the smooth and undulating character belonging to her order, but spiky where they were not angular; very worldly withal, and anxious that no one connected with her should walk in any path, social or spiritual, of which she had not first set the boundaries and trodden down the causeway. Her present great object was to marry sister Georgie to Mr. Samuel Harmer Hunter, a well-conditioned, not ill-looking, and very wealthy iron merchant from the Black Country: a little older than Georgie, certainly (he was fifty-one last birthday), but still a fine figure of a man, and bearing his years bravely. Besides, 'it is better to be an old man's darling than a young man's slave,' was Mrs. St. John's perpetual commentary, when that obstructive clause was mentioned as a thing material to the question.

was wanting for the consummation of her wishes but the young lady's own consent, and this she refused to give; though her sister talked to her by the hour together; and Mr. St. John clinched her every argument with 'Just so, Georgie; do as your sister tells you;' and though sleepy, irascible, weak-minded old papa lent his influence, too, to the same side (when daughter Carry was by), telling Georgie that she might 'go farther and fare worse,' and sometimes advising her, for him, quite strenuously; but promising, being a kind-hearted old man, if passionate, and very fond of his young daughter, that he would not force her if she did not consent of her own free will. And that was quite as much grace as little Georgie could expect.

Thus matters stood when Charley Dunn persuaded Mr. Samuel Harmer Hunter to give a pic-nic to all the gentry round about Brough Bridge, as the best means of making himself popular; which, as a new comer, who had made his money in trade, he found some difficulty in perfecting. For the Brough Bridge people prided themselves on their gentility; and even the very poorest of the admirals and the colonels and the withered 'scions of nobility,' as platform orators call them, publicly disdained the preten-ions to equality of a retired iron merchant from the Black Country, however rich he was; though, to do them justice, all the mothers with single daughters, and all the single daughters themselves, made up their private blandishments for what was wanting in cordial social recognition; and every one knew that their disdain was a mere pretence, and that each and all abandoned their order when that order was out of sight. Like the augurs of Rome, they could scarcely look into each other's faces with gravity, when the 'disabilities' of Mr. Hunter were discussed over their meagre teas; exclusive, if meagre.

Mr. Hunter being a reticent, selfsustained, rather thick-skinned man, cared little for all this. He knew quite well what time and money do in the long run; so he bided his

time, spent his money, and left the issue to the kindly dews and genial rains ever favouring the good seed. The sequel proved his wisdom. When he and Charley Dunn (Charley was his right-hand man) sent out their invitations to a grand pic-nic to be held at Harrow-field-side, every person in the place accepted: and the muster on the Oaks lawn, where they all assembled before starting, numbered seventy-five and a half, Charley counting old Trouncer, the Newfoundland, as the half. Seventyfive, including not only the élite of Brough Bridge and its neighbourhood, but also many of the 'second class'—those dwellers on the debatable land of gentility, always to be found in a community. have floated these down was even a greater triumph than to have flung himself on to the crest of the wave. If Georgie Fenton would have only said 'Yes,' Mr. Hunter's cup of pride and happiness would have been filled to the brim.

It was not only the retired iron merchant who thought the young daughter of the retired banker, in her fresh light muslin and coquettish hat, the prettiest girl, and the most charming, of the assembly; many others shared his opinion. Charley Dunn himself, though by no means apt to be 'spooney' on any girl, and more inclined to adore all than to love one—even he was a triffe troubled by her—just a shade more serious towards her than towards the rest; and if he had had twopence-halfpenny a year, he used to say—'unfortunately, he had only twopence-farthing '—he might have felt inclined to commit himself to matrimony and misery for the rest of his life. But besides these two, and the half-dozen unattached, putting out their feelers everywhere, like shrimps or sea-anemones, for unknown food, there was Roger Fenton, to whom Miss Lewin (he was obliged to be respectful, being only the private secretary) was simply the realization womanly ideal, and the one sole beloved of his life. If Georgie thought the same of him for her own part, it was no wonder; for he was a handsome young fellow to

look at; and of a fine and noble character; steadfast, unselfish, generous, and reliable; stern to men and loving to women, as all women desire of their hero; and one whose word, and power of endurance—that patience of courage—could be trusted to any extent. He was a man with whom women instinctively felt 'safe;' which adjective expresses all that they most love and revere.

All being assembled then on the lawn, the question now was, how should they go to Harrow-fieldside? and, who should take who? Charley Dunn, who knew the unrecorded wishes of half the young men and of all the girls, mated and marshalled them to the best of his power and the plasticity of circumstance; putting himself to unheard-of straits in his endeavour to please everybody, wherein he generally succeeded. However, ill or well, he did it, which was something accomplished: packing them up in separate parcels according to such pleasant admixture as he deemed best for the society at large, as well as for the service of the individual. And now there remained only Miss Le Jeune and Miss Annie —who, because they were well born, were very careful of their company, and inexorable on the score of chaperonage—the St. Johns and little Georgie, Mr. Hunter, Roger Lewin, and himself:—eight people, four and four, to share in a phaeton and a dog-cart. It was Mr. Hunter's design that the St. Johns and the Le Jeunes should go in the phacton, driven by Charley Dunn or Roger Lewin, both of whom were good whips, and that he would drive Miss Georgiana over in the dogcart; an arrangement to which Charley, for his part, had consented with a good grace, thinking it only fair that the host should do what he liked best for himself, and that if ho 'chose to tool over Miss Little one pretty one, why shouldn't he? He paid his money and he took his choice: and he was a lucky dog that he had money to pay, and a clever one for the choice he made.' Charley did not go on to say that he, and half a score more, would have chosen the very same thing.

He had tact enough to keep that to himself. So the last party stood on the lawn in the sunlight, waiting for the final arrangements; and of the four men standing there, three were in love with the same woman: and one was beloved.

And now a new complication Annie and Miss Le Jeune, seeing the turn things were taking, warmly protested against the arrangement proposed. They would have neither Charley nor Roger for the charioteer of their precious The one was so flighty they called him mercurial, which had a grander sound—he would miss the right turning, or upset them in the ditch, or turn them out over the hedge; the other was better certainly, but he was not experienced enough—the horses would run away, or they would come down, or they would have a fit, or faint, said Miss Annie pathetically; horses did faint very often in the hot weather, poor things! or they would break their knees or something; and Mr. Roger Lewin, though a charming young man, would not know what to do if there was an accident: and accidents so easily happen, you know, without blame to any one. So they set themselves in decided opposition, and talked and coaxed and insisted till they finally carried their point, and Mr. Hunter found himself obliged to yield to instances which had at least this flattering assurance, that both ladies thought him sufficiently worthy to be trusted with valuable cargo.

Mrs. St. John took no part in the discussion; neither did little Georgie; unless, indeed, that might be called taking a part which was simply looking up at Roger Lewin once, and saying in a low voice, 'You drive me,' as they stood a little apart: she digging round holes in the lawn with her parasol, and he arranging the lash of a whip which he held in his hand. But when the pretty arguing had ceased, and Mr. Hunter had yielded with a very blank face—'I think the arrangement a very good one; then, said Mrs. St. John, 'we four ladies in the phaeton, and Mr. Hunter and Mr. St. John on the box. Mr. Lewin and Mr. Dunn can break each other's necks in the dog-cart.' Mr. Hunter's face brightened. He would have rubbed his hands if he had dared; as it was, he gave a small unmelodious chuckle, and clumsily rubbed his chin.

'Oh, no, Carry!' said Georgie hastily. 'I want to go in the dog-cart. I hate sitting with my back to the horses—you know I do.'

'You shall sit on the box, then, with Mr. Hunter, and St. John shall come inside,' suggested Mrs. St. John amiably.

Miss Le Jeune and Miss Annie looked at each other, and a smile, not at all of the kind poets call honied, crisped up their lips like vinegar.

'Rather an extraordinary place for a young lady, is it not?' said Miss Le Jeune coldly.

'Oh! in the country one doesn't mind a little relaxing of the reins,' said Mrs. St. John very tranquilly.

'I can drive Miss Fenton over in the dog-cart,' then said Roger Lewin, coming forward with his steady cheery air, as if he had been the possessor of half a million, and not only the private secretary, my 'Mr. Dunn can sit behind and keep guard; and you know,' smiling and tossing up his bright brown hair, with a very pardonable affectation of modesty, 'I am not a very despicable whip—at least not for one horse.' (He was the best in the whole country side.) 'Don't you think my plan the best, Mr. Hunter?' he continued: 'it disposes of a great many difficulties.'

'By far the best,' said Miss Le Jeune quite warmly.

'So nice for Miss Fenton in the dog-cart!' said Miss Annie as if she envied her.

'Absurd! impracticable!' exclaimed Mrs. St. John in her high voice; and, 'I confess I had not contemplated this arrangement,' chimed in Mr. Hunter, speaking slowly, and evidently displeased.

'What would Miss Georgie herself like?' said Charley good-naturedly. He was always thoughtful of her, and put her pleasures beyond and above most social laws: and then he hated a fuss, and dread 'hitches' in a day's enjoyment. 'That shall decide it, Hunter, shall it not? We are all arguing as to the custody of Miss Georgie, without giving her a voice, and I call that shabby!"

'If it is left to me, I should prefer to go in the dog-cart with Mr. Dunn and Mr. Lewin,' said Georgie hastily, but with a deep blush.

Mr. Hunter bowed, rallying himself so far as to say, a little grumpily, though he did his best to look graceful, 'You are the queen, Miss Fenton, and have only to command your worshippers.'

And again Miss Le Jeune and Miss Annie looked at each other,

and smiled crispily.

Your father shall hear of this, whispered Mrs. St. John, grasping her arm as she passed so savagely that the red marks could be seen quite plainly through the muslin. But Georgie was too happy to be resentful. She was young and in love, and the present moment was her all, and the future might never come; so she took no notice of the spiteful pinch, but only answered coaxingly, 'Don't be angry, Carry, dear,' as she jumped into the dog-cart briskly. And then the most radiant and innocentlyloving little face in the world turned like a sunbeam upon the heavier party in the phaeton, and a shower of smiles and nods and handwavings followed them so long as they were in sight, as they rattled off into the summer lane of trees and wild flowers.

'She will be obliged to me, at all events, for yielding to her wishes,' said Mr. Hunter in a musing way to Mr. St. John on the box beside him. (Miss Annie had put in a faint claim for the place, but Mrs. St. John had out-manœuvred her, without leaving her a chance.) Mr. St. John held his peace: he could have said too much.

'Thank you, Roger, dear Roger!' said little Georgie simply, laying her hand on his arm as they drove off—the phaeton was now out of sight.

Roger Lewin looked at her, as she said this; a look of such infinite tenderness, and the man's intensity of love, that Charley Dunn, who just then turned round on the back seat to speak to them, comprehended the situation in an instant, and knew the secret which had been kept so religiously between them for six weeks or more.

'By Jove!' said Charley to himself, and he turned quite cold for a

moment, 'this is awkward.'

'What else could I have done?' said Roger to her softly. 'It was a bold thing to brave your sister so openly, but it had to come. It has to come in real earnest, you know, Georgie dearest, sooner or later, if we would be true or happy.'

'Yes, but still it was so good of you!' repeated Georgie fervently. 'For I know that you felt for me more than for yourself, and that it was to release and please me you came forward and upset them all.'

'And not to please myself at all?' returned Roger, with a lover's smile. 'I am afraid I am not quite so unselfish, little darling, as you would make me out; and that if I thought of your pleasure a little, I thought a great deal of my own.'

'Oh! that is the old argument, you naughty boy!' said Georgie,

laughing and blushing.

'Which one? we have so many! The argument as to which loves the other best, or who will hold out the longest?'

She did not answer this, but looked up at him shyly, and yet with so much frankness in her love, if with maiden bashfulness in the expression of it, that it needed all Roger's self-command not to put his arm round her waist and kiss her in the face of the sun and Charley. Why should he not? he thought. She was his, so far as love and plighted troth could make her; why should he not confess the love she had given him, and claim both recognition and fulfilment? But wiser counsels prevailed, and Roger did nothing of so expressive a nature that it could never be glossed over again. He only took her small and pleasant hand, and pressed it up against his heart.

The drive was very delightful, at least to two out of the three, for

Charley had not much share in the Knowing fun, as he phrased it. what was expected of him he discreetly kept his eyes and his tongue to himself; too well versed in the art and mystery of his normal character, that of 'playing gooseberry,' not to be aware that, before they had driven half a mile, if he would only efface himself they would have forgotten his very existence in the fulness of their content. As it proved. Wrapped up in the imperious selfishness of love, they passed the blooming summer hours in the heaven of young lovers; and when they drove up to Harrowfield-side, where every one was waiting for them, were ready to swear that they had not been half an hour on the road, though the heavy old phaeton and its sullen discontented freight had been there more than that time before them. They came, strengthened for anything that might happen: strengthened for Mrs. St. John's angry eyes, for Miss Annie's unpleasant smile, and Miss Le Jeune's disagreeable insinuations; strengthened for even Mr. Hunter's very natural self-repayment in the instant possession which he took of little Georgie, evidently intending to appropriate her (if he could) for the whole of the day after; strengthened for open war and for secret plots, by one of the longest spells of uninterrupted intercourse, and one of the most thoroughly confidential talks they had ever had together. If Georgie Fenton and Roger Lewin were in love with each other when the sun rose to-day, what could it be called As Georgie said afterwards, in her simple way, 'I felt that I was married to him, and that it would be a crime, and impossible, ever to break it off.

The pic-nic was a success. Charley Dunn had sworn it, striking palms with Miss Louisa Globb, who bet him a shagreen cigar-case against a dog-headed riding-whip, that it would 'hitch somewhere: pic-nics always did;' and though he was taken aback by the discovery he had made, and dismayed at the idea of the 'mess little Miss had got herself into,' yet he shook him-

self free from all embarrassing reflections when the time for action came, and exerted himself, as usual, to put the whole thing on castors, as the French say.

as the French say. The day was fine, which was one essential secured; and there was enough and to spare of whom to choose for partners and comrades. Young people paired themselves according to fancy, and wandered away together with that pretence of unconsciousness we all know of; and their elders agglomerated themselves into groups, and fed each other with flattery or gossip, as the tasto of the majority went. Mrs. St. John made profuse demonstrations to Lady Scratchley, who disliked her to almost plebeian vehemence, and thought her 'low,' wherein her ladyship was not so far out; and Miss Grandville and Miss Le Jeune stood on the outskirts of the party, criticising the young ladies of the assembly, and, strangely enough, finding none of them all pretty or well dressed, amiable or well mannered. But then they were both ladies of immense refinement, and had high ideals. The monkey-faced admiral singled out Maggie Wood, because she was as bluff as himself; and the two made no end of amusement for all within ear-shot of their rough play. The Miss Globbs, and their brothers, and their useful men, multiplied themselves, like so many Vishnus, and formed concentric circles of laughter everywherebeing poor, this was their manner of paying for their entertainment by society. The two Miss Hawtreys sang their last new songs to the accompaniment of the guitar which one carried, and of the concertina of which the other was the social 'professor.' Miss Moss was superb, haughty, and a little insolent in her cleverness; and pretty Mary Dowthwaite looked languishingly at young Abraham, on his side not backward to attract as many languishing looks as good fortune and the young ladies would throw in his way; and, in short, the whole scene was one of bright colours, animated faces, picturesque groups, and universal jollity, as the company dispersed among the trees of the

field-side copse, or sat on the fresh dry grass of the meadows, or perched themselves up on the tall banks, all enjoying themselves to the utmost of their natural ability, this warm, sunshiny, glorious summer day.

Mr. Hunter was kind in his way A little heavy, perhaps, and utterly bankrupt in the small change of conversation; but meaning to be kind, which goes a long way. He did his arbitrary, clumsy best to keep Georgie tacked to his arm all the day; and she, partly for gratitude and partly for fear of observation, let herself be led captive until dinner-time; but then she slipped her leash, and managed in the simplest and yet the cleverest way in the world to get a seat next to Roger Lewin, far away from both host and elder sister; and when dinner was over, she made her escape into the wood: whether alone or not no one ever knew. But the latter half of the day was passed without her sweet face among the players at croquet and Aunt Sally; and it was only when evening and mustering time came, that she reappeared—no one quite knew when, or how, or whence—her hands full of wild flowers, her eyes full of love, and her heart so full of happiness, she scarce knew how to hold it all together without letting it run out for all the world to see. A short time after Roger Lewin joined the group where she was; and he, too, came in the same apparitional way, looking, as Mary Dowthwaite said softly, 'as if he had met an angel in the wood.'

'Like Balaam's beast,' said young Abraham Moss, who did not like him.

So Mr. Samuel Harmer Hunter's grand coup went off to perfection. There was an immense amount of laughing and almost as much flirting; some friendships struck up—some, too, disintegrated; finally and sent crumbling to chaos; and some pleasanter bonds, and stricter, just begun in the weaving; and much that was charming if less that was intense, as the order and result of the day's experience. And when they all separated after a delicious dance and a first-rate supper at the

Oaks—Mr. Hunter's place—every one agreed that it was the most delightful thing ever given at Brough Bridge; and Mr. Hunter's popularity was assured, and the fact of his being a retired iron merchant condoned and done with.

But there is always a mauvais quart d'heure after every joy; the bill that must be paid when the cakes have been eaten and the wine has been drunk; and this quarter of an hour had to come to Roger Mrs. St. John had and Georgie. left them rope enough for the hanging. All the day after the first brush about the carriages she. had purposely ignored the existence either of sister or secretary. Her sharp eyes, and hers alone, had detected little Georgie stealing off into the wood where Roger Lewin had sauntered not so long before—and she had held her peace: nay, she had even seen George's fresh muslin whisking through briars and brambles, in the endeavour to find a lonely place where Love might take his ease and not need Caution to stand sentinel against intruders and still she held her peace: but when they all reached home, then the storm burst forth; and fat, lazy, irascible old papa lost a night's rest for trouble at the ill news his 'daughter St. John' brought him. He was a proud man, though a vacillating and a weak, and had no intention of allowing his prize child to fling herself away on a young fellow like Roger Lewin—a mere nobody, all very well in his way, but with only character and good looks for his fortune. And that didn't seem quite enough to the old banker, used to deal with thousands and tens of thousands. So the next morning the young secretary was sent for, betimes, into the library, and shown his bill—the cost of of his yesterday's commandion love.

'So, young man!' cried Mr. Fenton, pushing his spectacles up over his forehead, and looking at Roger with as much disdain as anger; 'a pretty use you have made of your time, I hear; and a fine return for all my kindness to you!'

'I am sorry, sir, that you have

heard anything unfavourable of me,

answered Roger quietly.

'Unfavourable? Oh! you call it unfavourable, do you? Well done, Mr. Roger! You can be mealymouthed to yourself, I see, however bold in action. Disgraceful, sir; dishonourable, unmanly: that's what I call it! Unfavourable, indeed! I like that!'

Roger flushed. 'May I know the conduct to which you apply these terms, Mr. Fenton?' he then 'They are hard words for a man to hear unconnected with any definite fact.'

'Come, come, Mr. Roger! this kind of bravado will not do for me! You know well enough what I mean; and to affect this simpering ignorance is only to add hypocrisy to dishonour. Yes, sir; hypocrisy to dishonour: I repeat it. What is all this, I hear, of you and my daughter, Miss Fenton, eh, sir? Answer me that, I say!' striking the table with his fist.

'I do not know what you have heard, Mr. Fenton, answered Roger. raising his eyes full to the old man's. I only know what I have to tell; I love your daughter, and she loves me; beyond this, I have nothing to confess.

Mr. Fenton's puffy face changed curiously during his secretary's

audacious speech.

'You love my daughter, and she loves you! Oh! that's it; is it?" he said, after a pause, speaking in a slow, deliberate way, quite different to his former petulance. 'Well, then, let us argue the matter coolly, Mr. Roger. There is nothing like coolness and Cocker. I suppose you have not rushed into solemn responsibilities without consideration? If you have induced my daughter to love you, you must have some plans for the future; marriage, I should suppose, and a home, and all that? What, now, have you got to offer her?' crossing his legs; 'what is your fortune? and what settlements will you make on her? I am not hard, you see, or unreasonable, and can discuss the matter calmly.'

'I can make no settlements, and I have no assured fortune. I have VOL. VIII.—NO. XLIII.

only my love, my brains, and my hands,' answered Roger a little grandly.

'Poor pay, young man! poor pay! I doubt the pot boiling over that

fire.'

'With love and courage, it is not such a very bad prospect!' returned Roger smiling, encouraged by Mr. Fenton's manner. Love is so cre-

dulous of good!

'Love and a fiddlestick's end!' roared Georgie's father, blazing out 'Don't talk your absurd There's sentimentalities to me, sir! no rational business in them! you again; what do you mean to do for my daughter?'

'Work to maintain her; as you worked, dear sir, when you were young, and married Mrs. St. John's

mother.

'Now look, Master Roger,' said Mr. Fenton, uncrossing his legs and speaking not unkindly—for he really liked the lad, and was almost as sorry as he was angry at the whole affair—'this kind of folly must come to an end. You must see for yourself that it has no root, no foundation, no possibility of future life in it. Give it up, boy, as a dream—very natural perhaps, to your age and inexperience—but as a dream that must be shaken off. I trust your word so thoroughly, that if you will now promise me on your honour as a gentleman, to have done with this folly, I will overlook the past, and we will go on again as before. me your word, Roger, and let the thing stand by.

Thank you, sir; I feel all your kindness, and understand it to the utmost,' answered Roger; 'but I cannot give up your daughter's love, or her promise. So long as she remains true to me, I will remain true to her; and after. I. cannot give her up, save at her own

desire.

'Then we must part, Mr. Lewin; we must part,' said Mr. Fenton

Roger turned pale. 'I cannot remonstrate, Mr. Fenton,' he said sadly; 'you are in your right here, and I have but to obey.'

'I am sorry for it, Roger, very sorry; very sorry indeed to lose

you, because I really like you, and, until now, have respected you; and you just suit me. But I cannot keep a young man about me who makes love to my daughter, and wants to marry her on nothing a year. You have been a fool, my boy, that's all; but we part in no ill feeling, remember; and when I can befriend you, I will. I wish you had not been a fool, Roger!' He put out his hand kindly; and looked at the young man with almost tenderness.

Roger shook his hand warmly. 'Promise me one thing only, dear sir,' he said earnestly; 'promise that there shall be no unfair play with your daughter; but leave me free to win her, if I can satisfy your

requirements.

'I will do nothing,' said Mr. Fenton, emphatically. 'I cannot answer for others,' he added below

his breath.

'Thank you, sir,' again said Roger; 'your promise is everything to me.' Then he turned away, once again looking back and bidding good-bye before he closed the door behind him, for the last time as Mr. Fenton's private secretary.

'I wonder,' said the old man to himself half aloud; and then he stopped and thought. 'Oh no! no!' he cried out, 'what would Carry

say!'

Roger had no difficulty in finding little Georgie. She, too, had had her fears about the 'bad quarter of an hour;' and knowing that her lover had been summoned at an unusual time by her father, hung about the passage, waiting for his appearance.

'Come with me a moment, alone,' aid Roger in a low voice. thust see you alone, Georgie, what-

e er happens!'

She felt that something was wrong, and clung to him lovingly; not weakly, but with all her heart of lave and girlish tenderness centered in that one carnest, clinging touch. They went into the conservatory-that favourite place for lovers; and there Roger told her what both knew would have to come when their secret was discovered; that Mr. Fenton knew all; that he

was dismissed, and must leave the house to-day.

'To-day!' said poor Georgie 'To-day! so soon hiding her face. after yesterday! Oh, Roger! what shall I do? what shall I do?

Trust to God, Georgie, and be a brave-hearted girl,' said Roger with quivering lips; 'and believe in me. Whatever you may hear, and whatever you may not hear—and the one is sometimes worse than the other—never have a moment's doubt of me. Believe in me, as I shall believe in you, though I neither see nor hear of you for twenty years to come; and be sure that the love which can be faithful through absence and trial, will be blessed in

She looked up into his face, and put both her hands in his. will, she said fervently. believe in you, Roger; and I will be faithful and true to the last day of

my life!

'Even if you never receive a written line from me? for I know that your sister would not suffer us to correspond openly, my Georgie; 🔞 and I would not ask you to stoop to anything involving management or intrigue. But, can you believe in me through years of silence?—perhaps against the harder trial of falsehood, hearing that I was untrue to you?—going to be married to another?—all the reports so sure to be set affoat, where there is something to be gained by the severance of two lives?"

'Yes,' she said; 'I know that you will not deceive me; and I would believe in any one's falsehood rather

than in yours.'

He caught her to him in a very passion of grief and love. bless you, my angel! now I am satisfied! Oh! never doubt me, my Georgie. Trust me as I shall trust you, through all things - evil reports, apparent neglect—everything; and believe, as I do, that if we are true to each other, we must come to a good issue at the last! Wear this, somewhere out of sight, for my sake,' he then added, taking his signet-ring from his finger; 'it is my crest you see—a mailed arm holding a sword, and my motto,

"Faithful and True;" and if ever you are inclined to doubt me, or to waver in your own heart, look at this, and let it bring you back to this moment and the solemn pledge between us.'

'I will,' she said again very earnestly, kissing the ring which she fastened to a small chain she wore, and hid in her bosom; 'I never shall be tempted to desert you or to disbelieve in you, Roger, darling; but if I do, I will look at this, and come back to you again.'

He held her in his arms, and pressed her to him. 'Good-bye, then, my beloved! God bless that

sweet life! My beloved, my only love! this is but for a time; believe that it is not for long, my Georgie; and again I say to you, trust me! You have no need to say the same to me!'

With a rapturous strain he pressed her once more fervently to his heart, and kissed her tearful face again and again; she clinging to him with her whole force of love, sobbing now as if her heart would break. And then, the door opening, and Mrs. St. John appearing in all the glow of her angry triumph, the brief hour of summer love was at an end, and the long day of sorrow began.



THE PLAYGROUNDS OF EUROPE.

M. Comettant's Yoliday.

YERTAIN infirmities, like certain J fashions, may be sported at a given date, but not before, nor afterwards. For instance, some dozen years ago, the height of elegance at Paris consisted in having a dislocated shoulder or a broken arm. The fashionables who unfortunately were not maimed in that special way, consoled themselves by pretending to be so. Those exquisites were supposed to have received their wounds on the honourable field of Steeple-chase. The mode has passed, and none but really maimed people 'Elegants' have adopted follow it. another infirmity.

Happy, thrice happy, are the men and women whose respiratory passages require the treatment of sulphureous waters! They have reached the acme of comme il faut. You feel yourself a very poor creature if you cannot carry to some thermal establishment a bronchitis or a granulated laryngitis. As with the broken arms of twelve years ago, bon ton requires that those who do not really suffer from the now fashionable affections, should at least pretend to suffer and make believe to be cured of them. They assume an illness, if they have it not. Luckily, without the least intending it, M. Comettant found himself afflicted with a pharyngitis which, by necessitating the waters of Cauterets, forced him to take rank with people of fashion. He calmly accepted his promotion, without giving himself any extraordinary airs. The result is a volume 'En Vacances,' describing what he saw, and also perhaps a little which he imagined, during his vacation rambles. Now a book from M. Comettant is always pleasant. Even when he makes merry at the expense of the English, it is done in such good-humoured and Gallic style that no Englishman can take serious offence.

'Les Vacances!' Charming words for grown-up people as well as for children. Two categories only of human beings find the expression unattractive; namely, the two extremes of society—the poor wretches for whom labour is a pitiless necessity, whose compulsory holiday is want of work, which means privation and misery—and the wealthy, for whom unbroken leisure is equally imperative. For the rest of the world, a vacation is the momentary forgetfulness of business, a truce to disagreeable preoccupations. It is liberty of mind and body, a diversion from the vexations of life; it is quiet, amusement, loitering, gossiping, movement, reverie, the delight of having nothing to do.

In every trade, a more or less long cessation of labour is granted every day to the labourer. For everybody there are Sundays and religious and public festivals. Our very domestic animals reap some advantage from human holidays. Game is the best off of all; for the law insures it perfect tranquillity during seven months of the year. How many men, M. Comettant the first, would consent to be hares and partridges on the same conditions!

The truth is, that work, which economists laud as the summum bonum, is really a necessity, and by no means a pleasure in itself. We submit to it reasonably and courageously, in order to be useful to ourselves and others, hoping all the while for the moment when we shall be able to withdraw from work.

Why, in fact, do people work? In order to live at present, and to have nothing to do at some future time. A great deal has been said about the right to labour; there is another right which is still more precious, namely, the right to rest. Our author desires it for his readers, at the conclusion of his book on 'Les Vacances'—which he is not sorry at having written (nor are we), now that it is completed, but which he would have been very glad not to be forced to write.

The trains which run from Paris to Pau, and the vehicles which

mount to Cauterets, Eaux-Bonnes, and the other hot springs, are full of invalids or people who so call themselves in obedience to the dictum of good society. Everybody in M. C.'s railway carriage was more or less damaged in their breathing apparatus. The bronchial question was the sole subject of conversation, to the exclusion of Poland, Rome, and Mexico. One single passenger, a little boy of eight, took no interest in the respiratory debate. His lungs were in perfect order, and, without being asked, he recited two or three fables and sang two or three songs. At nightfall, he gazed at the stars:

" Mamma, why isn't the moon a

star?

'I know nothing about it. Try

to go to sleep.'

About four in the morning, when drowsiness still hung on every eyelid, the young observer of nature, who sat next the window, exclaimed, Look, mamma; only look! His voice betrayed his enthusiasm.

'What is it? I see nothing par-

ticular.'

'Why, mamma, it is what our schoolbooks call rosy-fingered Aurora opening the portals of the East.

'My little friend,' observed an asthmatic lady who sat next the boy, 'you would be the most amiable of children, as you are the most poetical and the most astronomical, if you would have the goodness to contemplate the opening of the portals of the East with your ventilator shut.'

'Shut!' exclaimed the mother, evidently offended.

'Shut what?' asked the boy; 'the portals of the East?

'No, dear angel; only the ven-

tilator over your window.'

Travellers who know how to travel, will not proceed to the Pyrenees without stopping a day or two at Pau. Picturesquely protected by that chain of mountains, it is completely sheltered from north, east, and south winds. All the year round the atmosphere enjoys a The only breeze perfect calm. which agitates the leaves, without ever bending the branches, blows from the west. Coming from the Atlantic Ocean, it is slightly impregnated with the saline particles suitable for strengthening delicate chests. Winter is scarcely felt, and

summer is very supportable.

If the horses of Paris are to be pitied—the city where they are worse treated than anywhere else on the face of the globe—the destiny of the cows of Pau is far from being enviable. All the carts there are drawn, not by oxen, but by cows. However, if the cows of the country, besides their mission of supplying milk and calves, are also made to work like horses, they doubtless find their recompense in figuring in the city arms. A couple of cows adorn the shield.

Amongst the lions of Pau are the Place Royale, and the houses where Bernadotte was born. If it seems difficult for a man to be born in two houses at once, the reply is, that nothing ought to be impossible for Bernadotte, who, starting as a private soldier, was placed on the throne of Sweden by France, with whom he afterwards went to war. The first house, of somewhat wretched appearance, but ornamented with a marble tablet, stands in the Rue de Tran. The other, No. 5, Rue Bernadotte, is equally designated as the spot where that famous parvenu first saw the light. There are others, but hardly worth visiting, their authenticity being more questionable.

On the way from Pau to Cauterets, the diligence stops to lunch at Lourdes, in a grotto near which the Virgin appeared to Bernadotte Soubirans, aged thirteen, as she kept her sheep, in the month of February 1858. Leaving Lourdes, after mounting for three long hours, you find yourself in a narrow gorge, down which the waters of the Gare are rushing, and which just affords sufficient room for the pasteboard dwellings of Cauterets to display their attractions. The oppressed stranger feels a vague uneasiness, whose moral cause is the sight of mountains which environ him on every side, and whose physical

cause is the atmosphere overcharged

with electricity.

Many invalids,

THE PLAYGROUNDS OF EUROPE.

M. Comettant's Holiday.

CERTAIN infirmities, like certain I fashions, may be sported at a given date, but not before, nor afterwards. For instance, some dozen years ago, the height of elegance at Paris consisted in having a dislocated shoulder or a broken arm. The fashionables who unfortunately were not maimed in that special way, consoled themselves by pretending to be so. Those exquisites were supposed to have received their wounds on the honourable field of Steeple-chase. The mode has passed, and none but really maimed people follow it. 'Elegants' have adopted

another infirmity.

Happy, thrice happy, are the men and women whose respiratory passages require the treatment of sulphureous waters! They have reached the acme of comme il faut. feel yourself a very poor creature if you cannot carry to some thermal establishment a bronchitis or a granulated laryngitis. As with the broken arms of twelve years ago, bon ton requires that those who do not really suffer from the now fashionable affections, should at least pretend to suffer and make believe to be cured of them. They assume an illness, if they have it not. Luckily, without the least intending it, M. Comettant found himself afflicted with a pharyngitis which, by necessitating the waters of Cauterets, forced him to take rank with people of fashion. He calmly accepted his promotion, without giving himself any extraordinary airs. The result is a volume 'En Vacances,' describing what he saw, and also perhaps a little which he imagined, during his vacation rambles. Now a book from M. Comettant is always pleasant. Even when he makes merry at the expense of the English. it is done in such good-humoured and Gallic style that no Englishman can take serious offence.

Les Vacances!' Charming words for grown-up people as well as for children. Two categories only of human beings find the expression unattractive; namely, the two extremes of society—the poor wretches for whom labour is a pitiless necessity, whose compulsory holiday is want of work, which means privation and misery—and the wealthy, for whom unbroken leisure is equally imperative. For the rest of the world, a vacation is the momentary forgetfulness of business, a truce to disagreeable preoccupations. It is liberty of mind and body, a diversion from the vexations of life; it is quiet, amusement, loitering, gossiping, movement, reverie, the delight of having nothing to do.

In every trade, a more or less long cessation of labour is granted every day to the labourer. For everybody there are Sundays and religious and public festivals. Our very domestic animals reap some advantage from human holidays. Game is the best off of all; for the law insures it perfect tranquillity during seven months of the year. How many months of the year. men, M. Comettant the first, would consent to be hares and partridges

on the same conditions!

The truth is, that work, which economists laud as the summum bonum, is really a necessity, and by no means a pleasure in itself. We submit to it reasonably and courageously, in order to be useful to ourselves and others, hoping all the while for the moment when we shall be able to withdraw from work.

Why, in fact, do people work? In order to live at present, and to have nothing to do at some future time. A great deal has been said about the right to labour; there is another right which is still more precious, namely, the right to rest. Our author desires it for his readers. at the conclusion of his book on 'Les Vacances'-which he is not sorry at having written (nor are we), now that it is completed, but which he would have been very glad not to be forced to write.

The trains which run from Paris to Pau, and the vehicles which

mount to Cauterets, Eaux-Bonnes. and the other hot springs, are full of invalids or people who so call themselves in obedience to the dictum of good society. Everybody in M. C.'s railway carriage was more or less damaged in their breathing apparatus. The bronchial question was the sole subject of conversation, to the exclusion of Poland. Rome, and Mexico. One single passenger, a little boy of eight, took no interest in the respiratory debate. His lungs were in perfect order, and, without being asked, he recited two or three fables and sang two or three songs. At nightfall, he gazed at the stars:

"Mamma, why isn't the moon a

star?'

'I know nothing about it. Try

to go to sleep.'

About four in the morning, when drowsiness still hung on every eyelid, the young observer of nature, who sat next the window, exclaimed, 'Look, mamma; only look!' His yoice betrayed his enthusiasm.

What is it? I see nothing par-

ticular.'

'Why, mamma, it is what our schoolbooks call rosy-fingered Aurora opening the portals of the East.'

'My little friend,' observed an asthmatic lady who sat next the boy, 'you would be the most amiable of children, as you are the most poetical and the most astronomical, if you would have the goodness to contemplate the opening of the portals of the East with your ventilator shut.'

'Shut!' exclaimed the mother,

evidently offended.

'Shut what?' asked the boy; 'the portals of the East?'

'No, dear angel; only the ven-

tilator over your window.

Travellers who know how to travel, will not proceed to the Pyrenees without stopping a day or two at Pau. Picturesquely protected by that chain of mountains, it is completely sheltered from north, east, and south winds. All the year round the atmosphere enjoys a perfect calm. The only breeze which agitates the leaves, without ever bending the branches, blows

from the west. Coming from the Atlantic Ocean, it is slightly impregnated with the saline particles suitable for strengthening delicate chests. Winter is scarcely felt, and summer is very supportable.

summer is very supportable.

If the horses of Paris are to be pitied - the city where they are worse treated than anywhere else on the face of the globe—the destiny of the cows of Pau is far from being enviable. All the carts there are drawn, not by oxen, but by cows. However, if the cows of the country, besides their mission of supplying milk and calves, are also made to work like horses, they doubtless find their recompense in figuring in the city arms. A couple of cows adorn the shield.

Amongst the lions of Pau are the Place Royale, and the houses where Bernadotte was born. If it seems difficult for a man to be born in two houses at once, the reply is, that nothing ought to be impossible for Bernadotte, who, starting as a private soldier, was placed on the throne of Sweden by France, with whom he afterwards went to war. first house, of somewhat wretched appearance, but ornamented with a marble tablet, stands in the Rue de Tran. The other, No. 5, Rue Bernadotte, is equally designated as the spot where that famous parvenu first saw the light. There are others, but hardly worth visiting, their authenticity being more questionable.

On the way from Pau to Cauterets, the diligence stops to lunch at Lourdes, in a grotto near which the Virgin appeared to Bernadotte Soubirans, aged thirteen, as she kept her sheep, in the month of February Leaving Lourdes, mounting for three long hours, you find yourself in a narrow gorge, down which the waters of the Gare are rushing, and which just affords sufficient room for the pasteboard dwellings of Cauterets to display their attractions. The oppressed stranger feels a vague uneasiness, whose moral cause is the sight of mountains which environ him on every side, and whose physical cause is the atmosphere overcharged with electricity. Many invalids, after three or four days, have had

quite enough of the place.

No journal is printed at Cauterets: there is not even a press to publish Instead of the list of strangers. news à la main, news à la bouche is circulated: and nothing is lost by For instance, there the change. was current the following story respecting a charming Parisian lady.

Last winter, this youthful dame complained of a tingling, in the larynx; her husband, on the other hand, suffered from pains in the stomach. At the commencement of the summer season, a brief dialogue took place between this couple

of interesting invalids.

'Are you still annoyed with the tingling in your throat, Madame?'

'Alas! yes. And you, Monsieur, how is your stomach?"

'Sadly, Madame.'

'In that case, you ought to go to Vichy.

'The doctor absolutely insists upon it.'

'He prescribes the Pyrenees for We shall be very far apart from one another.

'We must bear it with resignation; health above all things."

'Perfectly true. When do you start?'

'To-morrow. And you?'

'To-night.'

The air alone of the Pyrenees must have sufficed to re-establish the lady's health; for the waters of its sulphureous springs have never once approached her coral lips, and she makes, with admirable courage, long and distant excursions with no other guide than an officer with whom she became acquainted in Paris, and whom she met again, by accident, at Cauterets.

The husband has derived equal benefit, merely from the purity of the Vichy air; for, at the hot springs, his sole beverage is capital wine, and his appetite is so excellent that he makes no difficulty about supping with an ex-figurante of the Delassements-Comiques, whom he patronises in the interest of dramatic art.

M. Comettant was amused by a 'scene which he witnessed between an Englishman and one of those

Béarnais* pedlers who hawk marble knicknacks about the Pyrenees. He gives it as a characteristic proof of the commercial talents of the natives.

The hawker, speaking in Béarnais patois (unintelligible), inquired, 'Do you want anything, Monsieur?' Monsieur, without speaking, sticks his glass in his eye, and examines the merchant's portable shop.

'Come now, make your choice. Don't let it be said that you have been to Cauterets and have left it

without a souvenir.'

The Englishman inspects a set of

'Ah! your hand is lucky. I had a couple of dozen, no later than yesterday, and these are all that are left. Not dear. Trente-cing sols. Thirty-five sous.'

The Englishman stares at the pedler with a look of astonishment. and, without uttering a word, returns the buttons to their place and prepares to take his departure.

- 'Listen to what I say, Monsieur. Don't go away, like that, without speaking. What fault do you find with the buttons? Can you say they are not pretty? There! I will make matters easy. Take them for thirty sous.'
- 'Combien ce botonn? How much for the buttons?'
 - 'What do you say?' 'Combien ce botonn?'
- 'I have told you, I will let you have them for quarante-cinq sols, forty-five sous, because they are the last.
- 'I don't understand you. Je comprennais pas vô.'
- 'Pavot—Ques à co? What is that?

The Englishman quietly takes out his pocket dictionary, looks for the word 'quesaco,' and after fruitless search, repeats, 'Je comprennais pas vô.'

To himself, the pedler.)—'What the deuce does he mean by his pavot? (poppy). Ah! I see, adds, shouting always in Béarnais. 'you don't understand French.'

Je comprennais pas vô.'

* When France was divided into provinces Bearn was the province of which Pau was the capital.

"Will you take the buttons?"

'Yes, le boutonn.'

'You shall have them for trois francs dix sols, three francs ten sous.'

After a moment's reflection, 'Je donnai à vô cinq francs pour le botonn. I will give you five francs for the buttons.

'You offer me five francs for the buttons?' (This time in excellent French, which he spoke with as much facility as Béarnais, simply making use of the latter language to draw on and mystify strangers.)

'Oh! Je comprennais vô!' highly delighted Yes, je donnais cinq francs pour botonn.' 'Impossible; they cost me whole-

sale, on the top of the mountains where they are made, five francs sixty-five centimes. I will let them go for six francs, if that price suits you?

'Vô voler six francs? You want six francs? Very well. Je prennais

le botonn pour six francs.

The isard (a sort of chamois) is not common on the northern slope of the Pyrenees; it is served, nevertheless, at tables d'hôte. It is indifferent meat, soft, and with a far too There are people, savage smell. however, who pretend to enjoy it. They are the braggarts of gastronomy.

Bears, too, are hunted; but they are so excessively bearish that they systematically retreat into the most inaccessible hiding-places, and are very rarely caught sight of. Notwithstanding which, last year one amateur killed a bear; but it was rumoured that the haughty Nimrod had sent for the animal from Paris. It was nothing but a menagerie bear. Certain visitors affirmed that they had travelled in company with the inoffensive creature, whose dead body they perfectly recognised. It was a shot which must have cost the sportsman little less than forty pounds.

Certain it is that from time to time shooting parties to hunt the wild bear are organised, at the news of the passage of one of those Amateurs of strong emotions never miss the opportunity of braving the perils of the strife. Matters usually happen thus:

A shepherd takes a bear skin. puts it on, and posts himself at a spot where he is certain that some passing excursionists cannot help remarking him. The astonished strangers return to Cauterets or Eaux-Bonnes in a state of great excitement, and spread the news that a bear has actually made his appearance. The disguised shepherd then strips off his bear skin, folds it carefully, and shuts it up in his chest for the next occasion. descends to the valley, and proposes to get up a hunt in company with a dozen of his friends who are as brave mountaineers as they are excellent shots, and who were not a bit frightened when they saw the bear. There is a sensational fête throughout the neighbourhood. People accost each other only to talk of the projected hunt.

'Do you intend going out after

the bear?'

'Certainly.' 'They say he is enormous. Take care of yourself.'

'Bah! A man can only die once.' Ladies supplicate their husbands not to venture on such a hazardous

enterprise. 'My dear, I know your constitu-With your excitable nervous system, the mere sight of that frightful animal would suffice to trouble all your senses. Stop at home quietly with me, and don't expose yourself to any such risks.'

'I will follow the bear. not go, people would believe that I was afraid to look death in the

face.'

'You are the father of a family.'

'I am perfectly aware of it.' 'What will they do without their parent?

'They will do without him, as others do.'

'Amadée, spare your life for those who love you!'

'Under any other circumstances. I should feel it a duty to yield to your entreaties; but in the present, it is impossible.'

'Listen to the voice of a friend, a wife, a mother, who prays and sup-

plicates you!'

'I will go after the bear. I said so at the table-d'hôte, and my own personal dignity requires me to keep my word.'

'Good Heavens! My Amadée de-

voured by a bear!'

'My dearest wife, it cannot be helped. It must be; and what must be, must.'

The party starts, after endless handshaking and kissing and affectionate wishes for good success; it returns without the bear, worn out with fatigue, but safe and sound. The chase, nevertheless, has not been an unproductive one for the wearer of the bearskin and his acolytes, who have pocketed innumerable

tips.

Are there, then, no real bears to be seen here except those which come from Paris? Such is not exactly the case: witness the carbine presented to Lamazou the singer, by a society of Russian sportsmen, which proves that some are killed sometimes. Lamazou is a Béarnais who all winter long sings in Paris the original ballads of his native province, and in summer comes to the Pyrenees to repose his larynx and exercise his legs until he has encountered and slaughtered a bear. He employs Devisme's explosive When once the bullet is bullets. withinside the animal, it is all over with him: he is struck dead, as if by lightning, foudroyé. The grand point is not to be alarmed at the sight of the bear, and to hit the mark.

The rejoicings which took place on the 15th of August, the Virgin's fête-day and the Emperor Napoleon's, enabled M. Comettant to witness two kinds of racing peculiar to the Pyrenees—the mountain race for men, and the pitcher race for

women.

What legs and lungs are necessary for the mountain race! At a given signal, fifteen of the nimblest mountaineers, bare-footed, bare-headed, in shirt-sleeves, and with their trousers turned up above the knee, started off at full speed. They leaped a first wall of stones, exactly as thoroughbred horses would do it, and then mounted a steep slope with the vigour of Zouaves making a charge. A second stone wall, which barred their passage, was cleared

with the same impetuosity as the first. At this point the rock is replaced by the earth of which the slope is formed. It rises, tortuous and sterile, at an angle of some forty degrees. The steeple-chasers, ceasing to run, here took to a foot-pace, striding along with remarkable ease

and suppleness.

Half-way from the top, those who found themselves distanced, despairing to reach either of the three flags planted there, abandoned the contest and sat themselves down to take breath. Meanwhile, the others strode along with the see activity and ardour. But so the prizes were seriously disputed by three only of the runners, who were now very close upon one another. One champion, adorned with brown cloth trousers, managed to get several yards ahead, and maintained his advantage till the end. He was scarcely visible to the naked eye; you were obliged to follow his movements with a glass. He did not appear to flag for an instant. The spectators. to use Madame de Sévigné's happy expression, had a pain in his chest. At last he snatched one of the flags.

But the prize was not yet his; for it was only awarded to him who should be the first to plant the flag at the starting-point, opposite the station occupied by the judges and

stewards of the race.

Without losing a moment, the victorious runner set about descending the mountain with a rapidity that was truly incredible. Down the steep rock, covered with stones of all sizes and beset with natural obstacles, he seemed to glide as if he had castors on his feet. You feared that the winner, on reaching the goal, would fall dead with the final effort. Happily, nothing of the kind occurred. On arriving, the mountaineer nimbly bounded over the wall of stones, stuck his flagstaff in the ground, and began dancing a jig, to show he was not yet exhausted. A minute afterwards the two other laureats arrived almost together. The countenance of one of them betrayed distress, and he appeared to breathe with difficulty: they gave him a cordial

draught, which completely restored him.

As to the first-prize man, he was only a little out of breath; his feet had not a scratch. That is being something like a man! True, Batant-Lapeyre (the conquering hero's name has lived up in the mountains from his earliest child hood, and only comes down to Cauterets on Sundays). The three men of steel clubbed their winnings, and with the amount treated the vanquished to refreshments and a ball to the sound of the bagpipe. They drank and fanced till two in the morning.

The pitcher race is comical. Three females entered the lists, each carrying on her head a large pitcher filled with water. One, two, three! and off they start, running as quick as possible, and striving to keep in balance their pitchers, which they are not allowed in any case to touch with their hands. It is a serious business: the prize is ten francs!

The three competitors, skimming the ground and pressing each other close, have twice gone round the square. One of them, finding herself suddenly distanced, makes a violent effort to regain the advantage; but she feels that her pitcher is losing its centre of gravity on the cushion which supports it on her head. The pitcher must fall—that's evident: but if she can reach the goal before the catastrophe, she will have won the prize all the same.

Redoubling, therefore, her speed, and instinctively raising her hands towards the pitcher, nevertheless without touching it, she is within a few paces of the wished-for spot, when the pitcher, alas! falls and is smashed at her feet.

How many ambitious folk of all descriptions have to behold their pitcher broken at the very moment of attaining their object! Poor woman! her heart is bleeding at having lost at once both her prize and her pitcher.

But Cauterets is rich in resources, and never fails to aid severe misfortune. A female acquaintance, a letter of chairs, moved by generous sentiments which it is impossible to appreciate too highly, collects a subscription in favour of the damsel with the broken pitcher. From all quarters sous pour in, in such profusion, that the raceress discovers she has been playing a game of 'the Loser Wins.'

Charming women, do what they will, can never be otherwise than charming. The fact is proved at the springs de la Raillère, a little above Cauterets. If one operation, more than another, would appear incompatible with grace, certainly it is the act of gargling the throat. Well, at the risk of being disbelieved, our holiday-maker states that he has seen women who are never more graceful than when they gargle. And in what different ways they do it! Some, after taking a mouthful of liquid, sit down, lean their head back, discreetly half-close their mouth, raise their eyes to heaven, and so bathe their larynx. still and silent, in a position which Others remain appears extatic. standing, and do their gargle with rounded arms and open fingers, in a style that would make the fortune of a picture, if any painter were there clever enough to do justice to the pretty invalids in all the details of their graceful treatment. Others compose a melancholy countenance, and appear to be addressing a secret prayer: 'Oh, let my health return, in order that next winter I may not miss a single concert, opera, or ball!' Others, again, cover their mouth with a richlyembroidered handkerchief, and agitate the pupils of their eyes with mysterious shudderings of adorable delicacy. I tlooks as if those ladies had taken lessons in gargling, as they have in dancing, playing, and singing. Are there, then, professors of gargleism, as there are of music and deportment? Certain it is that, although the gargling room is the only place of public performance at Cauterets, the spectacle at least is gratis and original, and will help the simple spectator to pass a pleasant moment.

At last the one-and-twentieth bath was taken, the fortieth glass of water drunk, and the traveller left at liberty to depart, out of fashion: that is to say, cured, for a time, of his creaking bellows. On his way back, at Bordeaux, he fell in with the master of a sailing-vessel, who bitterly complained of the ship-owner's tyranny. An owner's orders must be strictly obeyed, however absurd they may be. Captains had been dismissed from their command for enriching their owner by infring-

ing his directions.

As an instance of what blind obedience may lead to, one captain, who sailed from Bordeaux for Rio Janeiro, had received from his owner written orders which appeared to him incomprehensible. During the voyage, from time to time, he read and re-read them, smiting his forehead, twisting his whiskers, and muttering, 'What can he want with such a lot as that; and where the deuce am I to go, to procure that class of merchandise?'

At Rio, the captain did his best to satisfy his owner's wishes, and succeeded, with the greatest difficulty. What incessant trouble and vexation it gave him during the voyage home! But the longest lane has its turning; the vessel arrived with all safe and sound, and the astonished owner came on board. The first thing he saw were hundreds of monkeys gambolling amongst the rigging, leaping from the mast-head to the yards, and hanging in clusters along the bowsprit. It came about thus. The owner meant to order his captain to bring home 1 or 2 monkeys; but the handwriting not being clear, it looked more like 1002 monkeys, which were imported from Brazil accordingly. The owner got rid of the monkeys as well as he could, and complimented the captain on his strict adherence to his instructions.

A HISTORY OF CROQUET.

__ __ -

PALL MALL, the head-quarters of the club world of the club world, a spacious thoroughfare between St. James's Street and the Haymarket, derives its name from the game of paille maille, which was introduced into England from France in the reign of James I. That this game was known and played in this country in the reign of the modern Solomon, is evident from the fact, that in the third book of that remarkable treatise, entitled 'BAZIAIKON AOPON,' which the king wrote to the heirapparent, Henry, Prince of Wales, as a set of rules for his nurture and conduct, it is recommended in the following manner: 'Certainly,' says the king, 'bodily exercises and games are very commendable, as well for bannishing of idleness, the mother of all vice, as for making the body able and durable for travell, which is very necessary for a king. But from this court I debarre all rough and violent exercises; as the foote-ball, meeter for lameing than making able the uses thereof; as likewise such tumbling trickes as only serve for comcedians

and balladines to win their bread with; but the exercises that I would have you to use, although but moderately, not making a craft of them, are running, leaping, wrestling, fencing, dancing, and playing at the caitch, or tennise, archerie, palle malle, and such-like other fair and pleasant field games.' This is, we believe, almost the earliest date at which the game was played in England; for in 1598, just five years before James I. ascended the throne, Sir Robert Dallington, in his book 'A Method for Travel,' writes: 'Among all the exercises of France, I prefer none before the paille maille, both because it is gentlemanlike sport, not violent, and yields good occasion and opportunity of discourse, as they walk from the one marke to the other. I marvel, among many more apish and foolish toys which we have brought out of France, that we have not brought this sport also into England.' The game, however, was not generally played until the reign of Charles II.; as in a little work, 'The French Garden for

English Ladies,' published in 1621, occurs the following passage: 'A paille maille is a wooden hammer set to the end of a long stoppe, to strike aboute with, at which game noblemen and gentlemen in France doe play much.'

In 1670, however, the game was In the edition for well known. that year of Blount's 'Glossographia' we are told that 'paille maille is a game wherein a round bowle, is with a mallet struck through a high arch of iron (standing at either end of the alley), which he that can do at the fewest blows, or at the number agreed on, wins.' This game was heretofore played in the long alley near St. James's, and vulgarly called Pell Mell. Mall, which at present exists in St. James's Park, was arranged by Charles II.; but the Mall, on which now stands the street above mentioned, was used as a ground for this sport as early as the reign of James I. The Apple-tree Yard-St. James's Square of the present day—was then a piece of pastime ground known as Pell Mell Close, and evidently derived its name from the locality where the game was played. That the game was very popular during the reign of the Merry Monarch there can be no doubt, as the king is often described as excelling at pall mall, and evidently was a zealous player. The poet Waller, in his poem, 'St. James's Parke, as lately improved by his Majesty,' witnesses to this fact in the following lines:-

'Here a well-polished mall gives us the joy
To see our prince his matchless force employ,
His manly posture and his graceful mien,
Vigour and youth in all his members seem:
No sooner has he touched the flying ball,
But 'tis already more than half them all;
And such a fury from his arm has got,
As from a smoking culvern 'twere shot.'

The Duke of York, afterwards James II., was also a good player, as, in fact, were most of the courtiers; for Pepys records in his diary for April 2nd, 1661: 'To St. James's Park, where I saw the Duke of York playing at pell mell, the first time that ever I saw the sport in this country.' Taking Waller's poem as an authority, many writers

state that Charles II. introduced the game into this country, whereas we know it was occasionally played in the reign of James I., as we have already recorded. Prince Henry. however, played on the ground now occupied by the street, Pall Mall, which was then merely a walk made for the purpose, and lined with trees. In Charles I.'s reign, however, the game seems to have fallen into desuetude, as during the Commonwealth the alley, or avenue, had already begun to be converted into a street, and therefore Charles II. was compelled to arrange the avenue in St. James's Park, now known as the Mall, for the purposes of the game, and also to appoint men to keep it in good order. Our gossip, Samuel Popys, in his diary for 15th of May, 1663, informs us how this was managed. He writes: 'I walked in the Parke discoursing with the keeper of the Pell Mell, who was sweeping of it, who told me of what the earth is mixed that do floor the Mall, and that over all there is cockle shells powdered, and spread to keep it fast, which, however, in dry weather turns to dust and deads the ball. The Mall, too, was rolled regularly, and kept in beautiful condition with the greatest care, and was, according to a contemporary author,* of a reasonable good length, straight and even, and if one had a paille maille, it were good to play in the alley.'

Authorities differ considerably with regard to the regulations of this regal pastime. In an old book of French sports, however, the following account of the game is given: 'This game, which is said to have been played by the Gauls, our ancestors, was so generally played in former years, that the greater portion of the promenades adjoining many of our towns consisted of a long avenue, termine the mail, because it was set apart for the jeu de mail. In the game the players stood at one end of the Mall, and endeavoured to strike the ball by hitting it with the mallet,

^{*} Nares' 'French Garden for English Ladies.'

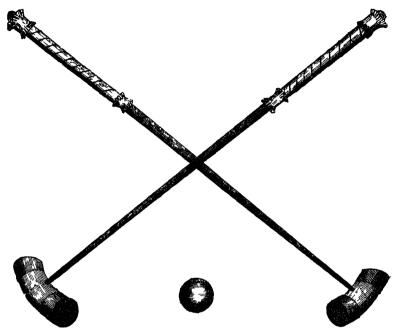
through a ring which was suspended at a certain distance from them. Whoever first succeeded in doing this, won the game.' It may perhaps be imagined that the dissolute gallants at Charles II.'s court were not very energetic or persevering in a game which required so much exertion as pall mall. Mr. Pepys, however, tells us that the contests were often so keen, that people sometimes stripped to their shirts. On the demise of the king, the game died out in England almost entirely, although it continued to flourish in France, and lives there to this present day. On the death of Charles II., all traces of this pastime soon became lost in this country, until about thirty years ago, when a game sprang up in Ireland known as crokey, in which the operation of cracking the balls seemed to be the chief feature of the game, since the hoops were almost left to themselves, and the cracking was considered of most importance. The game soon found many admirers, and was encouraged by ladies, who took part in it. is evident that in the reigns of the Stuarts, whatever manly accomplish-ments Nell Gwynn and her companions possessed, a participation in the game of paille maille was not among them. From crokey to croquêt—the latter a Gallic imitative manner of spelling the former—the transition is easy; and although the orthography of the title of tho game and the French word for gingerbread are identical, it is almost certain that there is nothing synonymous in their meanings. That there are quite enough points of resemblance between the games of croquêt and pall mall, to justify our opinion that the groundwork of croquet is the older game, which we have already stated is so ancient that, according to a French writer, it was played by the Gauls, is evident, we believe, to all. some particulars, of course, games differ greatly as time has worked its innovations; but the mallets, and the shape of the balls, in name and form are identical. Indeed, the resemblance between the inallet of pall mall and the mallet

of croquêt, is too complete to be doubted. There are now in the . British Museum a pair of mallets used in the reign of the Stuarts, which, according to Mr. John Timbs, were found in 1854, in the house of the late Mr. B. L. Vulliamy, No. 68, Pall Mall, in a box. This contained four pairs of the mailes, or mallets, and one ball, such as were formerly used for playing the game of pall mall in the Mall of St. James's Park. Each maile was four feet long, and made of lancewood; the head slightly curved, measuring outwardly 5½ inches, the inner curve being 4½ inches. The diameter of the maile ends was 21/2 inches, each shod with a thin iron The handle, which was very elastic, was bound with white leather to the breadth of two hands, and terminated with a collar of The ball was of jagged leather. box-wood, 2½ inches in diameter.

We are enabled, by the courtesy of the authorities of the British Museum to give a drawing of these pall mall mallets, from which the reader can see how very closely they resemble the mallets now used in the game of croquêt.

That the game of croquet has during the last few years become very popular, is simply a fact. short time since but very few knew that there was such a game; and now, not only everybody seems aware of its existence, but almost every person can play at it, and, what is more to the point, finds very much enjoyment in the sport. The next question, therefore, to be considered is, what are the chief causes of the great popularity that this game has achieved in so short a Cynical old bachelors and mysogynists aver that the reason why then like the game, is, because in it girls show their ankles; and that the reason why women like it is, because it fosters their conceit, by allowing them to prove their equality with 'the lords of the creation.' This is the style of argument usually adopted by people who know little or nothing about this sport. The prevalent idea with regard to it, in the minds of such people, is that people play at it merely for the sake

of flirtation, and that the process of knocking the balls about is quite a secondary consideration. One of the late Mr. Leech's pictures in 'Punch' stands recorded as a proof of this. The scene represents a croquêt party, in which six young ladies, armed with mallets, stand disconsolate, and declare it's no use playing if Captain Fairplay and Blanche go on in that absurd manner. The aforesaid couple are engaged in the mysteries of a deep flirtation at one end of the ground.



Now in a game of croquet, played by energetic people, such a state of things would be impossible, as each player would not only keep a watch on his ball, but would also pay attention to the progress of the game, and be unable to participate in a dialogue for even two or three minutes. For, although the subscriber would be the last to deny that the participation of ladies in the sport adds an indescribable charm to croquêt, yet it is manifestly absurd to say that their presence is the main attraction. Good players of either sex can find enjoyment in the game, whether it is played solely by gentlemen or solely by ladies; and most men would undoubtedly prefer playing entirely with people of their own sex, rather than have the interest of

the game spoiled by a lady who knows little or nothing about the rules. The real cause of the great interest people, who know how to play, take in the game, is the pleasant excitement and sustained pleasure it produces—a feeling equally prevalent in, and equally enjoyable by either ladies or gentlemen. The fact that the game is never lost till it is won, and that as long as two players are at work the interest is sustained, as well as the fresh combinations each stroke produces, are in themselves sufficient to make croquet popular. Besides, there is no other game in which ladies and gentlemen can amuse themselves. Some people may mention archery; but that sport means a large fortune and a large field. No toxophilite can shoot on a lawn. or purchase pleasure for eight people, as at croquêt, for a trifling sum. Add to this the fact that there is always the chance of a budding archer shooting somebody or himself; and remember the vast disparity between the expense and danger of the two games. One can then easily account for the increasing popularity of the one, and the corresponding decrease in popular favour of the other.

It is naturally with a feeling of pleasure that we watch the rapidlyspreading knowledge and appreciation of croquet; but at the same time it is evident that at present the game seems to stand a chance of being destroyed by its innumerable devotees. When the game was rechristened croquêt, the toymaker, whose speculative genius induced him to make the game and print a short set of concise rules furnished to him, quietly introduced it as a nice out-door amusement. It therefore soon became known among aristocratic circles, and as it was a novelty, and served as a pastime, it was at once taken up. Rapidly it then spread, until the demand for it became great enough to induce the lawmaker to manufacture croquet sets sufficiently cheap to bring it within the reach of most classes; and now rose other lawgivers whose knowledge of the game induced them to trample upon the authorized laws, and make fresh rules to suit their own convenience. wards the end of 1863, Captain Mayne Reid raised the standard of revolt, and published a most extraordinary manual of croquêt, containing 120 rules and 60 notes. number of these rules, however, was not the chief obstacle. The fundamental propositions of the author on this subject were so entirely opposed, in the main, to the modest card of rules issued by the toymaker, that it became impossible for a follower of Mayne Reid to play with a follower of Jaques; and hence bickerings and disputes was the result, and the game began to be considered as somewhat difficult and not quite so nice as when one code only of rules existed.

In Captain Reid's manual he se-

dulously abused the croquet sets issued by Mr. Jaques, and recommended those made by another manufacturer, who, encouraged by the success of the game, had copied the implements as closely as he could without infringing the copyright This naturally had some effect upon the sale of the games; and therefore in the following spring Mr. Jaques deemed it advisable to issue a handbook, which not only differed from the captain's rules, but also contradicted those on the card previously issued by himself. About this time, too, Mr. Routledge, the publisher, considered that a croquêt manual would be a popular addition to his series of sixpenny handbooks, and also issued a set of croquêt rules, which differed in many important points from both the other two. $\overline{\Lambda}$ nd now in the kingdom of croquêt anarchy reigned supreme. Not content with three different codes of laws, other writers published books of laws, and players invented sets of rules to suit their own peculiar cliques. Thus in lawn parties last summer it was almost impossible for strangers to play together; and so far did this independent system of croquêt regulation extend, that it may safely be said that in no two places was the game played in exactly the same manner. Cheating, it has always been allowed, is the prerogative of ladies who play croquet; but now any person can defend any position in the game obtained unfairly by quoting some rule of the printed authorities. Not only, however, were the rules tampered with. but innovations on the implements became the order of the day. nob han had leather buffers placed at the heads of the mallet; another altered the shape of the hoops: another the colour of the balls; and another, thinking it derogatory to his dignity to be fettered with rules. had an entirely new set drawn up for his own especial use, and intrusted the literary task to a lady, who evidently had carried cheating in actual play to such an extent that she was compelled to adopt the same mode of proceeding in her book, for she copied the best part

of Captain Reid's eccentric handbook, and then produced her Treatise as the rules of the Earl of Essex. The professional author, however, soon instructed the amateur in the mysteries of the art of copyright, in return for which lessons the noble pupil paid the small sum of 100l., with a few trifling costs. merely mention this circumstance to show in what a dangerous state the kingdom of croquet is in at the present time. Nobody at present seems satisfied with any rules at all. If A likes one of Jaques's rules, he thinks that on other points Routledge's are better; and if B does approve of Mayne Reid's rendering of the croquet itself, he thinks that in all other respects that author is In fact, it is generally adwrong. mitted that, according to the present state of people's minds on the subject, none of the handbooks are of any use at all, and consequently none of the rules need be adopted by any one anywhere.

Were we to quote the many instances in which the writers of the handbooks differ, we should require even more space than the indulgent Editor of London Society is willing to accord to us. There is, however, one point on which so much difference of opinion has been aroused. and about which so much has been said, that we take this opportunity of endeavouring to render it intelligible to those of our readers who indulge in the pursuit of croquêt. The point we allude to is one which has derived its name from the title of the game itself; to wit, The Croquêt. This is the head and front of the offending of each author, and has, perhaps, caused more contention than any other feature of the game.

The croquêt is, as most know, supposed to be theoretically an accessory to the game, whereas, in reality, it is the fundamental basis. It is instituted to impede or assist the progress of the players; but in reality it is the progress itself, as nothing can be done without its assistance. We need not tell our readers under what circumstances a player is privileged to practise the croquêt. The backbone of the

discussions is how the croquêt is to be practised. We will see what the lawgivers say upon this subject. Mr. Jaques has—

'The croquêt is done as follows: The player lays his own ball against the other, so that it touches it. He then places his foot on his own ball, which he strikes with the This will drive the ball mallet. with any strength, and in any direction he pleases. In croquetting a ball away, a player will hold his foot firmly on his own ball. making a splitting, or following stroke, the foot is usually held lightly on one's own fall; but it is not obligatory to put the foot on at This is entirely at the option all. of the player. He is said "to take a stroke off" when he places his own ball to touch the croquetted ball very lightly, so as to leave it

when croquetted in nearly the same

position; but in doing this the croquetted ball must be perceptibly

moved.'
Captain Reid writes:

'A ball having made requet on another, is taken up and placed in contact with the ball in which it has requed. The player sets foot on the former, presses firmly so as to hold it in place, and with a blow of the mallet drives the requed ball in whatever direction may be desired. A ball having made requet is taken up, placed contiguous to the requed ball, and without being held under the foot, is struck by the mallet, and driver, as also the requed ball, in the direction desired.'

In reading the opinions of the two authors just quoted, one cannot avoid the reflection that their directions would have produced a better effect if they had been somewhat briefer and not quite so discursive. The third lawgiver, Mr. Edmund Routledge, cannot be accused of either of these faults in the following rule:

In croquing the ball, the player must keep his foot firmly upon his own ball, and if the stroke move it, the ball must afterwards be brought back to the position it occupied before it was struck.

From these quotations it will be

seen that the first two writers are in favour of what is technically known as the loose or slipping croquêt, and that Mr. Routledge pins his faith upon the tight croquet. Before our readers pass too severe an opinion upon the merits of this discussion—for it is the rules about the croquet that have caused almost all the confusion that exists in the croquêt world-it is but fair to state that the rules originally issued by Mr. Jaques were in favour of the tight croquêt, and that on no account was the ball of the croqueur to be moved when he performed the croquêt. Captain Reid, the cause of the anarchy in the kingdom of croquêt, was the first to suggest the new mode of playing, which was half assented to by Mr. Jaques in his book at the request of some croquêt; players. Since, however, the only way to render this game popular is to preserve its simplicity, and as the loose croquet is the cause of endless complications and consequent disturbances, we cannot but agree with the plain dictum enforced by Mr. Routledge, which experience has proved to be the most practicable. We have merely quoted these different readings of one rule to show how entirely the opinions of the lawgivers differ on this subject, and consequently how impracticable a good game of croquêt is at the present time. Few of our readers who enjoy the pastime think in what a dangerous state their favourite now is, and how soon it may be in a moribund condition. If croquêt is to remain popular, vigorous steps must be taken at once to restore it to its pristine health and vigour. this end we would suggest that some ardent croquêt player, who has plenty of spare time, should endeavour to raise a croquêt parliament, in which the writers on

croquêt, as well as the chief players from all parts of England, should have seats. The rules should be reconsidered, and their merits, as they now stand, firmly discussed. Each member must be at liberty to express his opinion, and the majority should decide the laws upon These rules could this subject. then be published, and if the matter were carried out properly croquét parliament would occupy the same position in its own kingdom as the Marylebone Club does in the cricket world. Mr. Routledge has already stated in the 'Field' that he will publish in his handbook the laws of such a committee, and it is evident that Mr. Jaques will be glad enough to follow the same example. Then, with only one set of organized laws, the influence of croquet would spread and find increasing popularity every day, until it would occupy the same hold on the affections of ladies as cricket now does on the minds of gentlemen. The consequent increased familiarity between men and women, while it invigorated the latter, would refine the former, and would enable the sterner sex to appreciate better the helpmates that are bestowed upon them. Croquêt clubs would soon spring up, and croquêt grounds would be as well tended and cared for as clicket grounds are, and from the palace to the cottage, all would participate in the game, and note its innumerable charms and scientific attractions. To produce this consummation, however, an active and willing croquêt player must at once come forward, cleanse these Augean stables, and restore to health and vigour that amiable young lady, Miss Croquet, who is pining and wasting away before the oppressive attentions and frequent interference of her numerous physicians.



SCENES IN COURT.



'NOW, WHAT IS YOUR CALLING, PRAY?'-(Page 68.)

CHAPTER III.

R. Justice —— was not an over-pleasant judge before whom to appear, though he had deservedly the reputation of being a just man and a sound lawyer. Nature had given him a harsh rough voice, and education had cast his manners after the same model as that of Nature's gift. He had studied long and well; and though he owed his elevation to the Bench to the influence of powerful friends. rather than to his own brilliancy as a barrister, the Chancellor's vote had fallen upon a man thoroughly well qualified to discharge the duties of his station, at least so far as the technical and strictly professional part of it was con-cerned. As regarded that courtesy and good-breeding which are so essential to the well-being of the Judge with the Bar, and therefore to VOL. VIII.-NO. XLIII.

the proper discharge of the duties of the Bench, Mr. Justice —— had none of them. He was ever coming foul of some one or other of his compeers, and daily with those among whom he had lately ranked. These put it down to conceit and arrogance, those to superciliousness and overweening trust in the man's own powers. The former were wrong, and the latter only partly right. It was ill-breeding tricking up Nature's unkindness, which made Mr. Justice —— so uncomfortable a person to deal with. He did not intentionally lord it over his late brethren; and though he certainly did rely very strongly upon his own opinion, it was not designed disrespect which made him differ widely from his brothers of the Bench. He justified the travestie of Dryden's famous line on Shaftesbury:

'The statesman we abhor, but praise the judge.'

which was rendered by Mr. Sansbrief,

'The Scotchman we abhor, but praise the judge.'

But perhaps, after all, the rhyme on Dr. Fell, which stated that the doctor was not loved, the reason why the rhymer could not tell, was still more applicable to the case of Mr. Justice and the members of the Bar. The Bar did not love Mr. Justice -; and they could not say precisely why they did not, only they knew, as in the case of Dr. Fell's foes, that they did not love him. I do not know that he loved them, but then he had a reason why in the fact that they disliked him. To the fact that they disliked him. say truth, little love was lost between them, and a necessary consequence of this was, that disputes and sharp sayings, more or less irritating, were frequently passing between judge and counsel.

Mr. Justice —— was, as has been hinted, a Scotchman. He 'possessed' the Scotch language, as the French say, or rather the Scotch language possessed him, and ever and anon, when he waxed angry, it manifested itself by a broad and unmistakeable brogue. He was a fine man, with an interminable forehead, looked every inch a judge, but spoke and acted like a very disagreeable man. He knew he was disliked, and though, as I believe, he strove with himself against the temptation to resent the dislike by a tu quoque course, sometimes he failed in the attempt, or lost his temper in trying. Oftener than not he carried the war into the enemy's country; but I remember an occasion when, being put out by one of his brother judges who interested himself to save a youthful counsel from Mr. ---'s judicial Justice cross-examination, that Mr. Justice —— lost his temper, and foolishly said, 'That though his learned brother might love the counsel much, it was evident he hated him (Mr. Justice ——) a great deal more.

the defendant against the plaintiff. At the former trial the judge had ruled that certain evidence tendered was not admissible; he had not sufficiently explained to the jury the nature of their duties, and in consequence the jury had found that the damage suffered by the plaintiff might be estimated 'at the scandalously and ridiculously low rate' of one farthing sterling. The Court had granted a new trial, not on account of the smallness of the damages, but because of the nonreception of the evidence offered, and the failure of his lordship to tell the jury what they had to do. Those who knew said that the damages were assessed too highly as it was. Neighbours of Messrs. Tittle and Tattle were of opinion that the libel of the latter against the former could not possibly have the effect of lowering Mr. Tittle in their estimation, for the simple reason that Mr. Tittle had never occupied any place therein, any more than it could possibly raise Mr. Tattle in their estimation, for the like reason. Arcades ambo, 'both are cads,' was the sentence of Drearyton on them. Mr. Tittle would not make much by the motion he had gained, Mr. Tattle would not be cleansed from original caddishness by the verdict of a jury in his favour, nor laden with any extra obloquy by reason of a verdict against him. Mr. Tittle, 'whose only object in bringing the action was to clear his character and his fame, which were dear to him'-so said his counsel at the first trial - pursued the second suit purely on principle; he despised the pelf, he seemed the imputation of seeking damages, his single motive in moving for a new trial was to vindicate justice, set at naught by her professor; that—nothing more influenced Mr. Tittle. He had been 'advised and credibly informed' that he had a right to a new trial, and his right, for principle's sake, he determined to pursue. The lawyers could not possibly have any objection, they alone would gain by the exercise of Mr. Tittle's right; they had, at his request, gained permission for him to have right done, and they were now assembled before Mr. Justice —— in Westminster Hall for the purpose of getting for Mr. Tittle and selves all the benefits attaching to the claim.

Mr. Wobly, Q.C., and Mr. Rebutta represented Mr. Tittle, and the defendant was represented by Mr. Serjeant Silk and Mr. Theodore

Speecher.

Mr. Justice ---- was late in coming into Court, and the interval between the hour at which he usually sat and that at which he did sit. was given over to time-killers to be destroyed. Those who had no briefs to read nudged and bothered those Mr. Sansbrief, already who had. mentioned, took occasion to relate the history of his engagements at Lady Dash's ball, at which he had been present the night before. Mr. Serieant Hammer hurriedly explained to a willing but unemployed junior the mysteries of a case which he had just asked the junior to take in hand for him. Mr. This and Mr. That devoured their briefs for the fiftieth time, in hope of finding out some new thing not previously The reporters recut their noted. already sharpened pencils; idlers, who had nothing whatever to do in the Court, complained loudly of being kept waiting by the iudge.

At length Mr. Justice — was announced. An usher drew aside the curtain at the side of the Bench and shouted, for the guidance of all below, 'Silence!' He was closely followed by the judge, holding up the skirts of his clothing. The bar rose, Mr. Justice — bobbed once to either end of the rows of counsel and once to the jury. The case of Tittle v. Tattle was called on, the jury were sworn 'a true verdict to give according to the evidence,' and Mr. Rebutta rose to state the plead-

ings.

The pleadings were read, and then Mr. Wobly, Q. C., addressed his lord-ship and the jury on behalf of 'his much ill-used client,' commenting on the facts connected with the late trial, and urging the points which he deemed to be of importance. He descanted for a long time on the nature and definition of a libel, explaining what they were to the jury,

who did not understand them, and to his lordship, who did, until his lordship, tired with the repetition of the learned counsel's conclusions, said, after many but vain interruptions, which had only sent Mr. Wobly back to recommence du capo, 'You are unnecessarily long in your statement. Why tell me the same thing three times over? The first time you told me my mind apprehended it; the second time it took it in; and the third time it fatigued me.'

Mr. Justice —— was evidently not in a good-humour. Mr. Wobly took his snubbing kindly, and even made capital out of it, by saying that he was glad he had so well informed the Court of the matter he desired to lay before it. He had no wish to be tedious, but rejoiced in having saturated the mind of the Court and jury with the merits of

his client's case.

Mr. Wobly knew, moreover, that his turn would come. The judge had interposed many times, to the great let and hindrance of the case. He asked innumerable questions and otherwise vexed the souls of counsel, till all, and especially Mr. Wobly, Q.C., were irritated to objecting point.

'Can ye tell me how lang this case will last, Mister?' inquired his lordship, apparently concerned himself as to the duration of the case.

'I really cannot say, my lord,' answered Mr. Wobly; 'it took two days on the former trial, and there

were no interruptions.'

'Oh, indeed!' remarked the judge, frowning, and taking refuge in his notes, about which he seemed to busy himself intently, while Mr. Wobly continued his arguments unmolested, enjoying a short triumph before his own downfall. Mr. Wobly spoke for some time upon the several points he had to make, and observing that the judge was busily engaged, apparently upon his notes, requested him to be so kind as to make a note of the closing argument, which Mr. Wobly evidently considered a clincher. To whom his lordship, looking steadily at him, while he completed without regarding it the word he had last begun, said in the broadest Scotch, which showed the pitch to which the judicial bile had risen—

'Do not think, sir, that I am noting down your arguments; I am only noting the obvious *replies* to them.'

A suppressed laugh followed this hard-fisted blow of the judge, after which Mr. Wobly, who had but little to add to his speech, finished his address, and sat down a little the worse in temper for his casti-

gation.

Witnesses were called and examined on behalf of the plaintiff, with a view to showing that the libel which was the subject of the action had really been published by the defendant. One of the libels complained of was contained in a ballad which it was alleged had been both written and published by the defendant; and the controversy upon this point waxed hot and fierce, giving rise to an animated discussion upon the further question whether, supposing said ballad to have been written and published as alleged, the words objected to constituted a libel or not. As Mr. Wobly and Mr. Serjeant Silk wrangled and fought in the interests of their respective clients, without satisfying themselves or the court upon the question of libel or no libel, and his lordship said he could not withhold the case from the jury, who were judges on this point as well as upon the issues of writing and publishing, a suggestion was offered by Mr. Speecher, the junior counsel for the defendant. which seemed upon the face of it to present many advantages.

'Words concerning which there may be a doubt that they are libellous, may be shown to be so by the tone and manner in which they were uttered,' said Mr. Wobly; 'and I have witnesses here to speak as to the tone and manner adopted in

this case.'

'Your law may be sound,' answered the serjeant, but how is it possible for you to give evidence as to the tone and manner in which a libel was uttered? The character of the tone and manner must be purely matter of opinion. I do not

see how you can give admissible evidence on that head.'

'The alleged libel was introduced, my lord, at a club supper, as I am informed,' said Mr. Speecher, 'and published by being recited from a manuscript copy. As the question of libel seems to hinge entirely on the tone in which the words were delivered, perhaps your lordship would allow the ballad to be sung in court; the jury would have better means of judging—

'My difficulty in the way of complying with your wishes is the choice of a songster, observed Mr. Justice——; 'unless my brother Silk' (who had a notoriously shrill and unmusical voice) 'can assist

us.

'A song from Mr. Serjeant Silk!' cried some wag in the back benches. 'A song!—Mr. Serjeant Silk's song!' was repeated by one and another, till his lordship, afraid of the storm he had raised, was obliged to interpose, in order to prevent the court becoming a bear-garden. The case went on; the witnesses for the plaintiff were examined, and Serjeant Silk, who had good-hu-mouredly excused himself from joining in his junior's recommendation, cross-examined them. One of the witnesses was a nursemaid, resident in the town of Cambridgeor, rather, she was a nursemaid de jure, and a nursemaid and fine lady de facto-too much of the fine lady to allow of the homely title of nursemaid soiling her addition, as she showed when the Serjeant cross-examined her in the witnessbox. She showed it, but had done wiser to have saved her character at the expense of her dignity.

'Your name is Jane Hinton, I

believe?' said the serieant.

'It is, sir,' answered the witness.
'You reside in the town of Cambridge?' inquired the serjeant.
'I do, sir,' replied the witness.

'Now, what is your calling, pray?' pursued her questioner, looking archly at the jury, as though he knew something about her that would materially influence their opinion of her. The girl was, as I have said, too fine a damsel to state concisely the nature of her

calling, and her pride laid her open to insinuations that might or might not have been founded on truth.

'I have the charge of infants, sir,' answered the girl, thinking, I suppose, to save her dignity by this roundabout way of calling herself a nurse.

'Oh, indeed!' remarked the serjeant; 'you live in Cambridge, and have the charge of infants. Now, pray tell me, by "infants" do you mean undergraduates of the University under the age of twentyone?" and as the serjeant put the question he looked yet more archly at the jury, as though he had for certain some information which would effectually discredit this witness in their eyes. But for all he strove, if he really strove at allfor I believe it was merely the irresistible temptation which provoked the diestion—the girl succeeded in impressing the jury with the conviction that she was a respectable and ingenuous witness, and the case went on as if the Serjeant's shot had not been fired.

A witness was now brought forward to prove that a book had been offered for sale by the defendant to him, in which another of the libelous statements included in the present action was contained; and having given on his examination in chief but a poor and confused account of the circumstances under which he had been asked to buy the volume, Serjeant Silk pressed him severely, on cross-examination, both as to the appearance of the book and his knowledge of the libellous statement itself.

How large was the book? Was it the size of the serjeant's brief? Was it as ponderous as Daniel Lambert? What colour was it? Blue, red, violet, pink? or, as the Serjeant finally suggested, chameleon colour? Was it bound in boards or in calf? Was the witness sure it was bound at all? Would he swear it was not bound in rhinoceros-hide; or in mouseskin; or French velvet; or, like Falstaff's eleven assailants, in buckram?

Had the witness seen the libel? Was he aware that a certain legal

document was called a 'libel.' though it contained statements injurious to no one; and would the witness swear it was not such a libel he had seen? How long was the libel? Was it in verse or As long as the witness's prose? arm, or as the Serjeant's nose? and so on, with a number of questions more or less calculated to confuse. winding up with some searching inquiries as to whether the witness was not commonly known as 'Witty Dick,' and whether he had not been deemed too clever for the situation of village schoolmaster, or, at all events, been relieved of that post for some cause or other?

Between the questions which related to the book, the libel, and himself, 'Witty Dick'—if such was his soubriquet—stumbled sorely. He grew confused with his answers, said that the book was so long, the libel so thick, and that for himself, whatever folks might say, he was not witty, though his Christian name certainly was Richard.

'You say, sir, that the book was so 'long, and the libel was so thick. Now, let me ask you, do you know the difference between long and thick?'

Of course the witness knew; so he said, and endeavoured to give proof of his knowledge by means of an illustration; but before he could yield to the court and jury the benefit which this might have afforded them, Mr. Justice ——, who evidently thought the man's evidence to be worth just what it appeared to be worth, and was getting tired of the whole thing, broke in with, to the witness—

'Why, sir, you yourself are an example of the difference. You are thick-headed, and you are not long-headed.'

A genuine and hearty laugh followed this sally of his lordship, which served also to show, if need were, that though it may be true, as once famously alleged, that a Scotchman must undergo a surgical operation before he can understand a joke, the like process is not needed to enable him to make one.

The case of Tittle v. Tattle went on to its finish; and if 'principle,'

as represented by the plaintiff, was rewarded by a second verdict in its favour, so justice, represented for the nonce by the defendant, tri-Despite the eloumphed also. quence of Mr. Wobly, Q.C., who in thrilling language described the irreparable injury sustained by his client, Mr. Tittle, 'a most eminently respectable man' (the learned Counsel did not accompany this statement with the celebrated definition of 'respectability' once put forward, which defined a 'respectable man' as one who keeps a gig); despite the burning words in which the jury were told to consider the grievous nature of the wrong done to the feelings of Mr. Tittle, who, since the publication of 'this infamous and malicious libel,' had been known by, and even received letters addressed with, the offensive, deeply insulting epithet of 'King of the Cabbage;' and—for he was a tender and loving husband—his feelings, which the jury would let Mr. Tattle and the world know could not be outraged with impunity, had been yet more deeply and sorely wounded by 'an insolent and cowardly allusion to the dear wife of his bosom, who had been covered with opprobrium and scorn under the title of 'Lady Bugle Eye.' Notwithstanding all the force which Mr. Wobly, Q.C., put out—a force so great that his lordship complimented him upon it, regretting at the same time (surely the 'no interruptions' wound rankled still in his breast) most sincerely, that his own poor judgment was dead against the learned gentleman's conclusion -the twelve impassible men who had been conjured 'not to fling away their rights as Englishmen, and 'to remember that Mr. Tittle's case was their own case, and the case of every one of Her Majesty's subjects,' could not be brought to estimate the damage done to the character of Mr. Tittle at more than one farthing, the sum at which a British jury had already once assessed them. His lordship concurred in the verdict, expressing it as his opinion that even now the damages were put too high.

And so the case of Tittle v. Tattle

was disposed of. Whoever lists to know more of it, let him search the records of Her Majesty's Court of Special Demurrers; and if he wishes to learn what is comprehended in the dominions of 'Lady Bugle Eye' and 'The King of the Cabbage'—the knowledge will help him in ascertaining how it was the jury came to the conclusion they did—let him acquaint himself with the manners and customs of certain villagers in the county of Cornwall, who live in that part of it which looks towards the north and the setting sun.

One more story about Mr. Justice , and I have done. An important but somewhat tedious case involving the law of liens, came, by way of appeal, before the full Court in which his Lordship sat. Counsel on both sides had been long in speaking, the weather was inviting sleep, and Mr. Justice, yielding to counsel and the weather, was, so report said, guilty of the sin of Eutychus. Indeed charity would lead one to credit rumour's statement, since otherwise he must go further afield to find some medical or scientific reason for the strange sentiment to which Mr. Justice —— presently gave utterance.

A quarter of an hour had elapsed since his lordship took his last note, as long since he had expressed any opinion upon the case before him; counsel had not ceased to pour forth streams of law upon the difficult subject of pawns and liens; the words seemed to permeate through the nodding cranium of the learned judge, and there to mingle with untoward recollections of zoological 'gardens and wild beasts in mageries, for, as counsel ceased and silence roused his lordship to attention, Bench and Bar heard with astonishment this marvellous judicial utterance, in broadest Scotch, proceed from Mr. Justice mouth-'It's ma opinion that if the lien (lion) had been chain'd, there 'd ha' been nun o' this damage.'

And now the trial is over, witnesses and jurymen have retired, advocates in silk and stuff are about to rest from their labours,

his lordship is gathering up his skirts to go, and there are unmistakeable signs of a general clearance. I, too, must bring my case to a close. The 'points' have all been stated, the facts laid conscientiously before the jury; I leave it for others to sum up the whole. 'London Society,' to whose bar I have been

called, will have to pronounce its verdict upon the matters I have pleaded; all that remains for me to do is to thank the 'Grand Jury' for the patient hearing it has accorded to me, and then beg 'leave to move' that it will as kindly hear those who 'will follow on the same side.'

THE LONDON OPERA DIRECTORS:

A SURIES OF CURIOUS ANECDOTIC MEMOIRS OF THE PRINCIPAL MEN CONNICTED WITH THE DIRECTION OF THE OPERA:

THE INCIDENTS WHICH DISTINGUISHED THEIR MANAGEMENT;
WITH REMINISCENCES OF CELEBRATED COMPOSERS AND THE LEADING SINGLES
WHO HAVE APPEARED BEFORE THE BRITISH PUBLIC.

By the Author of 'Queens of Song.'

CHAPTER V.

A 'HUMOROUS' DIRECTOR-RIVAL OPERA-HOUSES-DESTRUCTION OF THE PAN-THEON-GIARDINI-STEPHEN STORACE -MICHAEL KELLY-NOVERRE, BALLET MASTER-SHERIDAN-A NOBLE AMA-TEUR—BADINI, A NEEDY POET—VIOTTI -TAYLOR'S PHILOSOPHY-A NON-RE-MUNERATIVE BENEFIT-MRS. BILLING-TON-MR. GOOLD-RIOT AT THE OPERA HOUSE - MADAME CATALANI - MANA-GERIAL DIFFERENCES -TAYLOR'S QUAR-REL WITH THE SUBSCRIBERS-CALDAS, WINE MERCHANT AND MUSICAL DIRECTOR -WATERS-A BATTLE AT THE OPERA -MR. WATERS, DIRECTOR-PRACTICAL JOKES [1791-1816].

MR. THOMAS TAYLOR, who was proprietor of the King's Theatre at various periods ranging from 1779 to 1803, was one of the most eccentric of beings. He was what people then denominated a 'humorist'merely because he was exceedingly queer, and wonderfully impudent. In the outset of his career he had been a clerk in the bank of Snow and Co., and as he really had a certain degree of cleverness and acuteness, he might have made a respectable fortune, had he not found, as he declared, 'the climate of Snow and Co.'s bank too cold for his complexion,' and quitted the precincts of the City to become manager of the King's Theatre. For this position he had no qualification beyond a passion for speculation. He is described as having had 'all Sheridan's deficiency

of financial management, without that extraordinary man's resources, so unaccountably brought into action when every refuge seemed closed against hum.'

He had also Sheridan's mania for practical jokes. On the occasion of the laying of the first stone of his new theatre (1791), he played off one of his pranks. A party of his friends persuaded him to invite them to breakfast on the morning of the day appointed for the ceremony. To this he agreed, but secretly determined that he should not be a loser by his enforced liberality. With this idea he wrote in the name of some mutual friend to each of the gentlemen who were to be his guests, recommending them to take a supply of provisions, as their host meant to play a trick on them, by setting them down to empty dishes. The advice was obeyed; each gentleman sent, or took in his carriage, a plentiful contribution of preserved meats, pies, lobsters, champagne, or similar delicacies. On entering Taylor's room, they were disconcerted to find the table laden with the choicest viands, and, on seeing the evident licex, they could not help breaking into a violent fit of laughter. With imper-turbable gravity, Taylor ordered into his own larder the good things which they had provided, and then sat down to play host. Breakfast over, he pretended that he wished to show them a valuable picture, and ushered them into an adjoining room; he then, apologising for a momentary absence, left them,

locked the door, and ran off to join the procession to the site of the new theatre. The prisoners, after a time, began to wonder at his prolonged absence, and on trying the door, were dismayed to find themselves locked in; they knocked repeatedly, and shouted, and it was not until they were nearly frantic that a servant approached. The man protested that he had no key, but said that he would instantly follow Mr. Taylor and obtain one. This he did, and the released captives issuing forth en-countered a large placard, announcing to the public an 'unparalleled novelty in natural history,' in the exhibition of fourteen full-grown jackals, or lions' providers, to be seen at the house of Mr. Thomas Taylor, all living in one den, in perfect amity! After renewed laughter, the jackals hastened to the Haymarket, arriving just as the ceremony was concluded, when Taylor affected great surprise that so contemptible an exhibition as a 'wild beast show could have detained them. This joke was a type of his life, which was 'one continual hoax.'

His ingenuity and address enabled him to maintain his position with some firmness, although he was so obstinate, and had such a total want of foresight, that he was constantly entangled in some awkward dilemma. He was fortunate enough to obtain large advances from his friends on his first essay in the management of the Opera, which advances, it was believed, he had the honesty to repay, the Opera being ex-

cellently supported.

So rapidly was the work of building carried on, that in less than a year from its commencement (in 1791), the new

King's Theatre was completed.

To obtain leases of the ground on which the theatre was built, Taylor was obliged to pay heavily. The principal part of the ground belonged to Mr. Holloway, who leased it from the Crown. The house was rebuilt in a very superb style; but, in consequence of a serious misunderstanding which had arisen between Taylor and the Lord Chamberlain, the unfortunate proprietor could not secure a licence to open his establishment. The performance was therefore suspended. Pantheon, however, was converted into an elegant and spacious theatre, and, by permission of the sovereign, was called the King's Theatre. It was opened in February, under the direction of Mr. O'Reilly, who engaged Madame Mara and Pacchierotti; the band was led by the celebrated Cramer, and Signor

Borghi was manager. Taylor, not anticipating a rivalry so formidable, had engaged performers for his establishment, but the licence being withheld, he was unable to offer his patrons anything more attractive than ballets, and concerts in which the music of the operas which he had prepared was given without action. His chief singer was David, who was greatly admired on the David was supported by Continent. 'poor old Sestini,' a prima donna whose day had passed. There were no other singers of even tolerable merit. The dancers were numerous and good. The hostilities between the Pantheonites and the friends of Taylor were very injurious to both parties, and continued longer than was expected. David. although one of the finest tenors of the period, was not able to attract crowded audiences, especially as he could not appear in opera. During the violent war between the operatic establishments, the visitors to both houses became thinner every night. O'Reilly was nearly ruined. At the end of the first season (1791) he found that he had incurred debts to the amount of 30,000l. proposed that Taylor should take the debts of the Pantheon, and with them its operatic licence, and that a committee should be appointed, with Taylor as the acting director. But this offer Taylor was obliged to refuse, as the Chamberlain would not give his consent. In January, 1792, the Pantheon was destroyed by fire. The night it was burnt, Sheridan was looking at the conflagration, with Kelly, the singer. As he was observing how very high the flames were, and asking if there was any possibility of extinguishing them. an Irish fireman heard his exclamation. and cried, 'For the love of heaven, Mr. Sheridan, don't make yourself uneasy, sir; by the powers, it will soon be down; sure enough, they won't have another drop of water in five minutes.' The good fellow imagined that the destruction of the Pantheon must have been gratifying to Mr. Sheridan, as the proprietor of Drury Lane.

The company then removed to the little theatre in the Haymarket. Giardini, who had returned to England in 1789, took the direction of this establishment. He had expected to share the public favour with Cramer, and was bitterly disappointed in his hopes, finding that Cramer was so much admired that he appropriated all the applause and all the engagements. Giardini, meeting Cramer one day, thus sarcastically addressed him, in his irrita-

tion, 'How do you do, Mr. Harlequin Everybody?' To which Cramer blandly replied, 'Pretty well, thank you, Mr. Harlequin Nobody.' In 1793, Giardini was compelled to leave England: he went to St. Petersburg, and thence to Moscow, taking with him a company from London. In Russia, unhappily, his disappointment was only renewed. He at length sunk into misfortunes of his own creation, and died at Moscow, when eighty years of age, in the deepest penury and distress.

By a trust deed executed in 1792, the Opera-house was charged with an annuity to O'Reilly, and with certain other encumbrances; also with an annuity to Mr. Thomas Harris, of Covent Garden Theatre, which he afterwards relinquished. No nomination of directors having been made, the entire management of the theatre was intrusted to

Mr. Taylor until 1803.

In 1792, as Taylor could not organise perfermances until the affairs of the theatre became more settled, Sheridan entered into an arrangement with him to carry on Italian operas twice a week at the King's Theatre—on Tuesday and Saturday. On these nights the Drury Lane company performed at the little theatre in the Haymarket, and on the other nights in the week at the Operahouse. Sheridan appointed Stephen Storace and Michael Kelly joint directors of the Italian Opera, with a carte blanche, as they were both men of tact, experience, and strict honour.

Storace was the son of a well-known performer on the double bass, who resided in this country. He was born in 1763. When eleven years old, so great was his assiduity and love of music, he could play the most difficult solos of Tartini and Giardini with perfect correctness. His father, finding that he had such a strong taste for music, bestowed the utmost care on his education, and afterwards sent him to Italy. His progress in scientific knowledge was rapid, and he soon became acknowledged as a skilful composer. He had visited England for the purpose of obtaining from Gallini an engagement for his sister as a comic singer, and had been appointed stage-manager at the same time: from that period (1787) he had taken an active part in the affairs of the house, until he became dis-heartened by the petty intrigues and jealousies which he saw daily within the walls of the theatre, when he withdrew to Bath, and devoted himself altogether to drawing. Finding, however, that he could make nothing by his efforts in that art, he unwillingly returned to London, and resumed the musical profession. He was introduced to Sheridan by his friend Kelly as a composer of some distinction. The public liked his operas, and his popularity never waned during his lifetime; he is said to have received from the music-dealers larger prices for some of his pieces than had ever been given before,—a prosaic, though probably safe, method of estimating the value of popular favour.

Michael Kelly was a native of Dub-lin, the son of a wine merchant. At a very early period Michael displayed a passion for music, and he was placed by his father with excellent instructors. Rauzzini, when engaged at the Rotunda in Dublin, heard the boy perform, and, after giving him some lessons in singing, persuaded Michael Kelly, senior, to send him to Naples. Michael went, at the age of sixteen, and received lessons from the celebrated composer, Fineroli. He sang at different theatres in Italy, then in Vienna, where he was much noticed by the Emperor Joseph II. He had the good fortune to be the intimate friend of Mozart, and to perform in some of the great maestro's operas on their first production. He obtained a year's leave of absence from the Emperor for the purpose of visiting his father, with the understanding that he was to return to Vienna: he accompanied Stephen and Nancy Storace to England, and made his first appearance (1787) in Drury Lane Theatre in the opera of 'Lionel and Clarissa,' when he was received with such favour that he decided on staying in England. many years he was musical director of Drury Lane, and was afterwards stage manager and principal tenor at the Italian Opera, and also musical director at the little theatre in the Haymarket.

When Sheridan made his arrangement, the company was good, both in the serious and comic departments. Madame Mara, Signora Storace, Morelli, and Michael Kelly were the chief singers. The great Noverre was balletmaster, and there was a numerous and well-chosen corps de ballet, led by Didelot, Gardel, D'Egville, Mdlle. Millau (afterwards Madame Gardel), and the 'fascinating Hilligsberg,' who was one of the most popular dancers ever seen. She was the greatest favourite among the dancers with the public. Her style was perfectly natural, but peculiar; she had 'a lively expression of innocent apprehension or perfect festivity,' with a wild elastic spring, dancing entirely from her feelings.

When she had exhausted her few steps, she used to run off the stage with the most captivating archness. Noverre was an irreproachable ballet-master, and brought out some superb spectacles. Among other pieces he produced his magnificent ballet of 'L'Iphigénie en

Aulide;' the splendour of the spectacle, the scenery, the richness of the decorations and dresses could not have been surpassed. The dancing was exquisite; and the acting of D'Egville, as Agamemnon, is described as having been 'inimitable:' the triumphal car with



MICHAEL KELLY.

horses, the grand marches, processions, and, above all, the fine grouping of the corps de ballet, 'proved Noverre to be the greatest master of his art.' He was a 'passionate little fellow,' Kelly says. · He swore and tore behind the scenes, so that, at times, he might really have been taken for a lunatic escaped from his keeper. I once felt the effects of his irritation. The horses attached to the car in which D'Egville was placed were led by two men from Astley's, one of whom was so drunk that he could not go on the stage. I had been acting in the opera, and was so eager for the flay, and so anxious that things should go on right, that I had taken off my operadress, and put on that of a Grecian supernumerary, and, with a vizor on my face, of course was not known. I held one of the horses, and all went correctly. I was standing behind the scenes, talking to one of the men, in my supernumerary dress, and perhaps rather loudly; Noverre, who was all fire and

fury, came behind me, and gave me a tremendous kick, "Taisez-vous, bête!" exclaimed he: but when I took off my vizor, and Noveire found he had been kicking his manager, he made every possible apology, which I of course accepted, and laughed at the incident, at the same time begging him not to give me another such striking proof of personal attention to the concern.'

At this period Mr. Sheridan was heavily in debt. Of his power of raising money, and of talking over his creditors, Kelly tells many amusing anecdotes. 'I, myself,' Kelly says, 'was not keeping out of debt, and my wine bills were very large. One day, I called upon him, and requested he would let me have a little money; he put me off, as usual, with promising he would let me have some to-morrow. To-morrow was always his favourite pay-day; but, like the trust-day at a French inn, that morrow never did I see. In the midst of all that, he told me how much

he was pleased with Tom Welsh (then a boy), when he sang "Angels ever bright and fair," the night before. "He should be encouraged," said he; "go and tell him that, in addition to his salary, I shall send him a present of two hundred pounds; and you shall take it to him." "Shall I?" said I (making the quotation from "Lionel and Clarissa"); "I think the borough may be disposed of to a worthier candidate;" but neither Welsh nor I ever got a half-

penny of the money.'

In 1793, Taylor having at length triumphed over all his opponents, opened for the season; Signora Storace and Morelli, Madame Mara and Kelly, being his principal performers. Mara was now beginning to decline in popularity. When no longer engaged at the Opera, she sang at concerts, and for a short time at Covent Garden, and subsequently with the Drury Lane company while they performed at the King's Theatre during the rebuilding of their own house. She ultimately left England and went to Russia. In 1794, Madame Banti was the leading The most remarkable event singer. during 1795 was the falling of the walls of the theatre.

Taylor and Sheridan were proprietors in 1796. Kelly was still stage-manager, Jewell was treasurer, Madame Banti was prima donna. This year Stephen Storace died, of an attack of gout. His death was hastened by his persistency in attending the rehearsals of 'The Iron Chost.' The last twelve bars of music he ever wrote were for a song which his friend Kelly was to sing in that piece. He left a widow and

At this time it was the fashion for the subscribers to attend the rehearsals at the Opera. The Duke of Queensberry was so constant an attendant that no weather deterred him. He was a perfect enthusiast in nusical matters, and considered himself qualified to volunteer instruction to eminent singers. As

several children.

teer instruction to eminent singers. As he was a powerful patron, and in the habit of giving superb dinners, the singers were willing to humour him.

In 1797, Madame Banti, Braham, and Viganoni were the chief performers. These three singers were admired by all lovers of the musical art. The only one who was found fault with was Braham, who was severely consured for yielding as he did to the false taste of the day, and departing from pure style and correct judgment to obtain ephemeral applause. An Italian of ability, named Badini, was 'poet' to the house

-a position which was retained by him for several years. Badini, like many of his brother poets, suffered his affairs to fall into serious derangement; he was frequently arrested, and on these occasions the singers and musicians of the establishment always raised a subscription to relieve him. The claims on their generosity became so importunate however, that at last the subscription was given with great reluctance and an express determination that it should be entirely discontinued. A fortnight clapsed after this, and then, one Tuesday night, a friend of Badini's appeared with a doleful countenance to make a collection, stating that 'poor Badini was dead,' and that the money petitioned for was urgently needed for the purpose of burying him. The performers could not refuse so pitiful a demand; every one gave something to make up the sum required. But to their astonishment, the following Saturday night. Badini appeared in person, attired in new mourning, and seated in the centre of the pit, amusing himself nonchalantly with his opera-glass and snuff-box. This final donation was appropriately termed Badini's resurrection money.

Viotti was leader of the orchestra for the first time in 1797. It was asserted that Madame Banti had for some time been exerting the power she had acquired at the King's Theatre, to displace Cramer, a most excellent leader, in order to instal her countryman, Viotti, in his situation; and the articles of Cramer having expired at the close of the season of 1796, she accomplished her object. Madame Banti was the reigning favourite both with the public and with the potentates of the Operahouse. The audience paid no attention to any other performer; they chatted and laughed while her comrades were singing, but listened with delight to her airs, and asked, with negligent surprise, when the curtain fell, 'Is the opera ended?' The next year (1798), Salomon led the band, Viotti having been obliged to leave the country under the Alien Act. To rebut certain charges brought against him, Viotti published an affidavit, wherein he declared that he 'frequented no coffee-houses, belonged to no clubs, and had never in any situation uttered a word which might be deemed offensive to the British government. It was said, however, that he had been in the revolutionary army, and had uttered intemperate expressions against the late Queen of France, Marie Antoinette.

Whether he had done so or not, was never proved, but it was well known that he had rejected the patronage of that queen for many years, and, after accepting it, had lost her favour through the ungovernable violence of his temper. The queen had commanded him to play before the royal family, and he had obeyed; but being interrupted in his performance by the noise caused by the entrance of the Count d'Artois, Viotti broke off abruptly, and indignantly quitted the room.

The veteran Cramer died in 1799. He had been keenly affected by the unfair treatment whereby he had, two years previously, been removed from the Opera-house, and by various misfortunes, which undermined his health, and hastened his death. The suavity of his manners, and the superiority of his talents, had gained for him uni-

versal liking.

Taylor was still proprietor in 1800 and 1801, Kelly being stage-manager. Winter was composer, Viganoni and Madame Banti were the chief singers. Taylor, whilst directing the affairs of the Opera, passed a considerable part of his time in the King's Bench, or within its 'rules.' This did not inconwithin its 'rules.' venience him in the least. 'How can you conduct the management of the King's Theatre, said some one to him one day, 'perpetually in durance as you are?'

'My dear fellow,' he replied, 'how could I possibly conduct it if I were at liberty? I should be caten up, sir, devoured. Here comes a dancer,-" Mr. Taylor, I want such a dress;" another, "I want such and such a thing." singer demands to sing in a part not allotted to him; another to have an addition to his appointments. No,-let me be shut up, and they go to Masterson (Taylor's secretary); he, they are aware, cannot go beyond his line, but if they get at me-pshaw! no man at large can manage that theatre; and in faith,' added he, 'no man that undertakes it ought to be at large.

Mr. Taylor was as little mindful of the rules of the King's Bench as of any other rules which stood in the way of his inclinations. He would frequently, whilst supposed to be within the rules, steal off into the country, and spend day in fishing, an amusement of which he was extremely fond. Once he con trived to 'get hold of a considerable sum of money, which he laid out in the purchase of an estate in a county affording opportunity for his favourite pursuit (fishing): here he went and lived, ate.

drank, and fished, till, at the end of two or three months, the officers of the law hooked him, and reconveyed him to his accustomed habitation.' This escahis accustomed habitation.' pade, however, was as nothing to another, when he left the rules, went down to Hull, at the time of an election, and stood - unsuccessfully - for the borough, absenting himself from the 'rules' for some weeks. He sometimes pretended that he found the weight of the Opera management a serious burden. Ebers, with some friends, was dining with him one day, when the subject of capital punishments was started. During the discussion, Taylor appeared buried in thought, and did not rouse until one of the gentlemen at table strongly advocated the abolition of capital punishments in all cases, and another demanded, 'What would you inflict, then,

on a criminal of the worst kind?'
'By Jove,' cried Taylor, suddenly,
'make him manager of the Opera-house. If he deserves a worse punishment, he

must be a devil incarnate.

Madame Banti, having maintained the position of prima donna at the King's Theatre for twenty-eight years, resolved to return to Italy, as her voice and her health began to fail. In 1802, she wished to take a benefit before she quitted the London stage, but feared that she could no longer count on attracting a crowd. Mrs. Billington had returned to England the previous year, and was 'a prodigious favourite;' so Madame Banti requested her to appear with her, which she did, by permission of Messrs. Harris and Sheridan. Every one was eager to hear these two great The piece singers in the same opera. was 'Merope,' by Nasolini ; and Madame Banti appeared for the first time in male attire. Signor Banti, in order to secure the money, had the pit door barricaded, and stationed himself there, with some of his friends. An immense crowd had collected at the doors, before the usual hour of admission, and on the bolts being drawn the rush was so great that the barricade so broken, and, with Signor Banti and his money-boxes, carried to the very extremity of the pit. The Signor, 'recovering himself, and getting on his legs,' gazed around him, and in acute disappointment exclaimed _O Santa Maria i de pit full! de galy full! all full!—and no money in de

box!—what will my Brigida, my angel wife say, when I shall have nothing in my box for her?' In June, Mrs. Billington appeared with Madame Mara, at the farewell benefit of that famous

singer.

The public had for some time greatly desired to have a new singer at the Italian Opera, so Taylor offered Mrs. Billington an engagement, which she accepted. Her brother, Charles Weichsel, was engaged as leader of the orchestra, to the exclusion of Salomon. The patrons of the Opera were enchanted with Mrs. Billington. Her popularity was unbounded as long as she chose to remain at the Opera-house. Viganoni was generally the tenor with whom she sang.

In 1803, Mr. Taylor sold to Mr. Francis Goold one-third of his property in the Opera, for which he received 13,3351. Mr. Goold was a native of Ireland, and a man of family and fortune, well known in fashionable circles. His brother, an Irish baronet, possessed large estates. On his arrival in England, Mr. Goold instituted the Union Club, at the house in Pall Mall formerly occupied by the Duke of Cumberland. He had pessed the greater part of his life on the Continent, and was an excellent



MRS. BILLINGTON AS MANDANE.

critic, and a clever amateur in the arts, and had a clear knowledge of the practical details necessary for the working of a large theatre. He was perfectly adapted for the management of an extensive theatre, especially as he understood music; and he was, moreover, a truly honourable, kindly man, his only fault, as a manager, being that he was too keenly sensitive. From the day he undertook the direction of the Opera until the day of his death, Michael Kelly was his stage-manager, confidential friend, and chief adviser.

The agreement between Taylor and Goold assigned the entire management of the theatre, during their joint lives, to the latter, and vested it in the survivor on the decease of either of them.

Mr. Goold engaged the celebrated Madame Grassini to sing alternately with Mrs. Billington. The attractions of these two exquisite singers drew crowded houses. Viganoni and Braham were the male singers. D'Egville was ballet-master and chief dancer, with the 'graceful and handsome' Mdlle. Deshayes.

A further purchase was made in 1804 by Goold, from Taylor, increasing his entire share in the theatre to seven-sixteenths,—the price of this further share being 4,165l. At this time Taylor had become so embarrassed that he was compelled to mortgage his remaining ninesixths to Goold for 5,700l.

On the 15th of June, 1805, occurred the memorable riot at the Opera-house.

which was caused by an ill-advised order from the Bishop of London that the curtain should be dropped before twelve o'clock every Saturday night, or the house should be deprived of its license and shut up. The curtain fell just as Mdlle. Deshayes and Parisot, two very much admired performers, were dancing a popular pas de deux. The anger of the audience passed all limits, and the scene which ensued defies description. Finding that their mandate for drawing up the curtain and finishing the ballet was not obeyed, the gentlemen and ladies screamed, hooted, yelled, threw all the chairs out of the boxes into the pit, tore up the benches, broke the chandeliers, jumped into the orchestra, and smashed all the instruments of the un-lucky musicians. Kelly, as stage-ma-nager, addressed the rioters, but they would not listen to him, and eventually quitted the theatre with shouts of vic-Mr. Goold, however, identified some of the ringleaders, and commenced actions against many of them for damages, which cost them 'hundreds of pounds;' but he discontinued legal proceedings, on condition of the offenders acknowledging their ill-behaviour, and satisfying those who had been injured.

Early in 1806, Goold offered Madame Catalani an engagement. Never did singer create such excessive wonder as Catalani. Siboni was the tenor engaged with her. For many years she reigned alone at the Opera, for she could endure no rival near her throne. Siboni was succeeded by Tramezzani, an infinitely superior singer, who was much admired. Shortly before Madame Catalani appeared for the first time, Goold engaged the celebrated buffo singer, Naldi. Morelli, who no longer attracted, was dismissed. The poor fellow, from an inordinate passion which he had for insuring in the lottery, was steeped in poverty, and Naldi was generous enough to supply him with every necessary for life, and allowed him, till the day of his death, a weekly stipend of two guineas, which was regularly transmitted to the ex-buffo every Saturday night. Naldi had been a lawyer, and was a very well-educated man. Morelli had been simply running footman to Lord Cowper. The termination of Naldi's life was very sudden and awful.

Goold died in 1807, and Taylor came sole proprietor. From the time of his first purchase to his death, which was hastened by the trouble and anxiety incident on his connexion with the theatre, Mr. Goold alone had con-

ducted the Opera. Catalani was the great attraction of his management, and her successive engagements entailed on the establishment an expense exceeding any that had ever fallen to the lot of Opera director before. The sums which Madame Catalani received were almost incredible. She used to say that in Italy she sang for fame, in France for charity, and in England for money.

Scarcely was Mr. Goold dead, than disputes commenced between Mr. Waters, his acting executor, and Mr. Taylor, which involved the Opera in litigation, almost interminable. Taylor, on whom the management devolved, was disinclined to submit to the authority which Mr. Waters wanted to exercise in the theatre as Mr. Goold's executor. Kelly continued to be stagemanager, but was displaced the following year (1808) by D'Egville, who had been ballet-master. Every day the feeling of bitterness increased between Waters and Taylor. In 1808, Waters advertised that he would not be responsible, as Goold's executor, for any debts contracted by Taylor.

Madame Catalani and Tramezzani were the leading favourites for several

years.

Finding that the Opera was become so expensive an amusement, especially since Catalani's engagement, Taylor was obliged to try every expedient to raise money. He very foolishly, in 1812, attempted a daring experiment, in advancing the terms of the subscription to the highest rate possible, and caused intense ire among his patrons. The subscribers met, and decided that the increase of price was not justified by the expenditure, and sent notice to that effect to Taylor. He replied, that if the subscribers would not agree to his increased demand, he would shut up his boxes; and, indeed, he refused several noblemen and gentlem admission into the boxes for which they had already paid. In consequence of this behaviour on Taylor's part, many of the subscribers withdrew from the theatre, and persuaded Caldas, a Portugese wine merchant, to reopen the Pantheon, for the performance of concerts, burlettas, and such music as could be given without infringing the licence of the King's Theatre. The company engaged by Caldas was very indifferent. Spagnoletto led the band. . At first this opposition to the King's Theatre prosperedso long as the ire of the nobility and gentry against Taylor lasted-but efter a time it languished, and a compromise

was effected with Taylor, although he persisted in keeping up the prices of his boxes, and in excluding those who would not agree to his exorbitant demand. As for Caldas, he was deserted, and left to ruin. Taylor lost six thousand pounds by the quarrel. He was perpetually embroiled in lawsuits; but he rather liked being plunged in disputes and difficulties, as he happened to be of a fiercely litigious disposition, and as obstinate as man could be. One day he was dining with Mrs. Billington, when a gentleman, in the course of conversation, said to him, 'You must be dreadfully harassed, Mr. Taylor, by the frequent lawsuits you are engaged in. 'Oh no,' replied he, 'not in the least: I own that they plagued me a little at first, but, from habit, I could not now exist without them!'

In 1813, the Lord Chancellor ordered that the whole of Goold's property should be sold, and that Waters should not interfere in the management.

At this time, Waters was proceeding against Taylor in Chancery; and it was ultimately ordered that the painful disutes should be ended in a summary shion, and the house sold. The latter order was very vexatious to the public, so it was proposed by private friends that Taylor should relinquish his interest in the theatre to Waters; but it was almost impossible to come to any arrangement whereby this might be satisfactorily settled, as the two men were totally antagonistic in manners, habits, and characters. Waters was a perfectly well bred, quiet man. Taylor was in every respect his opposite. Waters would not for any consideration attend to affairs on Sunday: Taylor, chiefly on account of his fear of duns and writs, selected that day in preference to any other. Taylor could not see Waters without becoming 'passionate and scurrilous.' However, as Taylor was perfectly embarrassed, and unable to carry on the theatre for want of money, he was obliged to give way to some extent. Waters desired to have the entire management confided to himself. It was proposed, therefore, that the management should be intrusted to him, under certain restrictions. Ebers was constantly going to and fro between Waters' house and the King's Bench, where Taylor resided; and at length he persuaded Taylor to agree to an arrangement. Taylor had seriously contemplated the possibility of turning the Pantheon into an Opera-house, and had absolutely entered into a treaty with Mr. Cundy, lessee of the Pantheon. Difficulties, however, had arisen between them as to terms, and the creditors of Caldas had such claims upon the house, that he was deterred from following his intention.

When Waters' people attempted to gain admission to the King's Theatre when an amicable arrangement had been entered into by the principal parties,-Taylor's people sternly refused to let them enter. From words the rival retainers came to blows, which ended by the Taylor party being ejected with ignominy. During the night, however, the Taylor party again renewed the contest, stormed the theatre, effected a breach in the stage door, gained admission to the stage, and drove the enemy into the Haymarket. The Chancellor was again appealed to, and Waters obtained an order from the Court, by virtue of which he established himself securely in his newly-acquired domain.

Taylor apparently ended his days in prison, occasionally availing himself of the privilege granted by the rules. His favourite companions in prison were Sir John and Lady Ladd. They used to enjoy agreeable evenings together, and when Taylor's spirits would grow too much elated from the combined effects of good wine and lively conversation, Lady Ladd would recall him to the minor proprieties of life by emptying the teakettle over him.

Waters, as proprietor, advertised that the Opera would not open until a manager was appointed by the Lord Chancellor. Early the next year (1814), however, he announced that he was legally appointed sole manager; and the house was opened as soon as possible. Madame Sessi was the principal performer.

Rossini then engrossed the stage. No operas by any other master (with the exception of Mozart's works) were now to be tolerated. From the withdrawal of Catalani, in 1813, the Opera gradually declined, and fell at last into such a state of degradation as to cease to be fashionable, and to be nearly deserted.

Mr. Waters' first season (1814) was happily a prosperous one, for the peace had just been concluded, and London was thronged with foreigners. He gained seven thousand pounds during that year. 1815 was a blank in operatic history; so wretchedly bad were all the male performers that even their names cannot be remembered. The first woman (Sessi), was the only one who redeemed the credit of the house.

In 1816, by direction of the Chancellor, the theatre was again put up for sale, and was purchased by Waters for 70,1501. Unfortunately, he had spent nearly all his money in improving the house, and was unable to pay into Court even the first instalment of the purchase money, so he mortgaged the theatre, with a number of houses which were his property, to Mr. Chambers, the beanker. Taylor, probably vexed at being entirely deprived of any interest in the Opera, which had been his great passion, and being addicted to practical jokes, beguiled the tedium of his life in the King's Bench by writing anonymous letters to Mr. Chambers, who unhappily chanced to be a nervous man. These letters all confidently predicted the speedy ruin of Waters, and pictured his penniless state in vivid colours. On

one occasion he wrote saying that Michael Kelly, the singer, was lying at the point of death at Brighton, and that he had something to communicate respecting Waters, of the utmost importance to Mr. Chambers. In a state of absolute trepidation, Mr. Chambers took a post chaise and hurried to Brighton, where he found Kelly seated in his balcony, sunning himself, with a pineapple and a bottle of claret before him. Unluckily, Mr. Taylor's prophecies concerning Waters came true. Waters' embarrassments increased year after year—his difficulties accumulated day by day.

In 1816, Mr. Sheridan died.

E. C. C.

MARRIAGE NOTES IN TOWN AND COUNTRY.



E has taken the leap! The little excitement of fearing that he may succumb to the charms of another is over. The romantic uncertaint which gives the affair its deepest enderest interest is past. He is free 'to love'—to 'ride away' no longer. In fact, he has made to offer to wich events during the last few weeks have been so assiduously leading up; and all that remains to do now is to be done by the lawyers and milliners.

'Considered in the abstract,' says a writer in the 'Saturday Review,' 'the spectacle of two young people engaged to be married ought to be agreeable and interesting;' and for this reason, 'because they are, or are supposed to be, happy'—because we 'have been informed by

people who have gone through the process of falling in love, and being engaged, and finally marrying, that it is one of a deeply gratifying character, looked back upon in after life as a bright spot round which many sweet and pleasant recollections cluster.' But, in spite of these and several other reasons in favour of extreme tenderness being felt towards, and toleration accorded to, young couples in the above interesting circumstances, the writer concludes by saying that, 'As a rule, young people engaged to be married are rather a bore than otherwise.'

Parents, mothers especially, bow to the inevitable, and come up smiling to their fate, like that

'Old man of Dundee, who frequented the top of a tree, When disturbed by the crows, he abruptly arose, And exclaimed "I'll return to Dundee."'

They make up their minds during their daughters' intancy and childhood to endure a certain amount of mild anguish on their behalf when years of

indiscretion and 'engagements' come Therefore they are better prepared to stand the deferred dinner, and the constantly-rendered-abortive attempts at regularity which a 'lover in the house' imposes upon them, than are the brothers and sisters of

the reigning power.

These remarks apply solely to the country. In town a man, if he is worth anything, has no time to become a bore of even moderate magnitude to the practical cousin, or unæsthetical brother of his betrothed. But in the golden languor of a country-house, the man who is not the master of it and the lands adjoining, and has consequently nothing to do but improve the occasion of this visit by airing his sentiments of devotion to the lady of his love, is sore put to it if he would avoid the derision of the juvenile members of the family, and the hatred and detestation of the friends of it.

She does not like him to hunt; so he vows solemnly to 'give it up,' and keeps his vow till the first season after their marriage. She does not like him to shoot; 'a gun may go off in the wrong place.' She does not like him to ride out with her brother: her reason for nourishing this last dislike she imagines to be deeply buried in the most secret recesses of her heart. But she is mistaken: it is thoroughly understood by all parties concerned, and consists in a deep-rooted distaste to the direction in which her brother's rides invariably tend-viz., to the house of a valued neighbour with a house full of pretty daughters.

These being her views, an impartial observer might be forgiven for supposing that Time's wings would be leaden to Edwin, who is not at all accustomed to be thrown on his own resources. But the 'forgiven' impartial observer will do well to mark and learn his mistake, in order that he may say and do nothing to hurt Angelina's nice sense of self-satisfaction and happy belief in being all-sufficient. True, he may not hunt, but then he may go out for a ride after breakfast with her. He may not disturb the peace of mind or body of the partridges on

her father's estate, but then he may help her to water her plants and feed the little chickens, who, from being unhappily deprived of maternal care, are in a precarious situation. And when he has done these things he may read poetry to her; and having done that he may dress!

Now, watering the plants, and feeding the chickens, and reading how 'the touch of a vanished hand will never come back to' him, and putting on a dress-coat at six o'clock, are harmless and pleasing, but scarcely all-sufficient occupations for a man. He may bore others intensely, but depend upon it the ennui of others dwarfs into insignificance before his own. He must be glad enough when the trial trip is over, and he is allowed to take the lady 'for better, for worse.'

He is a mere nothing—save to the old women of the village, upon whom he has bestowed large sums to be invested in tea on his wed-All the interest then ding-day. centres in the lady; and the man who has of late been enjoying a horrible pre-eminence, may congratulate himself into once more sub-siding into an object of lofty indif-The 'tears and white ference. muslin' are all in her honour, not his: he is ignored with a completeness that will alone throw a redeeming halo over the day, however much of 'the worse' he may get in after life.

These same old village women play rather the most prominent part, next to the bride, in the day's transactions. It is they who have the arranging of the floral decorations of church and churchyard. It is they who have the audacity to plant red china cows, holding roses in their mouths, upon the font, where the sight of them causes much risible emotion to the youngest brother of the bride, and much anger to the orderly-minded curate. It is they who, standing about the path along which her pedestrian progress lays, give her lachrymose benedictions, congratulations, and good wishes. It is they who, having recovered from their former condition of deep gloom, give her smiling assurances of future felicity